खंड 2

आधारभूत सिद्धांत

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4
समाज 57

इकाई 5
संस्कृति 74

इकाई 6
संस्था-I : नातेदारी, परिवार और विवाह 90

इकाई 7
संस्था-II : आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक संस्थान 109

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 समाज

इकाई की रूपरेखा

4.0 प्रस्तावना

4.1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच संबंध

4.2 समाज

4.3 समूह

4.4 संघ

4.5 समुदाय

4.6 जनजाति और जाति

4.7 पद और भूमिका

4.8 सामाजिक वर्गीकरण

4.9 समाज और संस्कृति के बीच संबंध

4.10 सारांश

4.11 संदर्भ

4.12 आपकी प्रगति को जांचने हेतु उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

यह इकाई छात्रों को निम्न बातों की व्याख्या करने में मदद करेगी:

- सामाजिक मानव विज्ञान में मूलभूत अवधारणाएं;
- समाज की अवधारणाओं के अर्थ और महत्व;
- समूह, संघ(संगठन), समुदाय जैसे समाज के पहलू; तथा
- समाज और संस्कृति के बीच संबंध।

4.0 प्रस्तावना

अगर ऐसी कोई अवधारणा है जिसको मानव विज्ञान (एवं समाजशास्त्र में भी) के केंद्र के रूप में जाना जाता है, तो वह है'समाज' की अवधारणा। यदि इस विचार को मान लिया जाए तो हम पाते हैं कि उप–मनुष्यों के स्तर पर भी समाज पाया जाता है, जैसे कि आदिमानव, बंदरों

योगकर्ता : प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

और चिम्पांजी। मानवविज्ञानी इस बात का उल्लेख करते हैं कि मानव समुदायों के बीच संस्कृति की मौजूदगी अन्य जानवरों से मनुष्यों को अलग करती है और इस तरह मानव को 'संस्कृतिशील प्राणी' के रूप में वर्णित किया गया। अतः मनुष्य को जानने–समझने के लिए हमें समाज और संस्कृति की गतिशीलता का अवलोकन करना होगा। इस इकाई में हम उन अवधारणाओं के बारे में चर्चा करेंगे जोकि समाज संबंधी ज्ञान और जानकारी के लिए मुख्य हैं। समूह, संघ, समुदाय, जनजाति, जाति, स्थिति व भूमिका और सामाजिक वर्गीकरण जैसे प्रमुख विशेषताएं या गुण हैं जो समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। हम समाज और संस्कृति के बीच के संबंधों की भी चर्चा करेंगे।

4.1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच संबंध

मानव विज्ञान (और समाजशास्त्र में भी) में दो प्रमुख अवधारणाएं हैं जिसे समाज और संस्कृति कहते हैं। मानव समाज के मामले में ये दोनों अवधारणाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, जबकि गैर–मानव समाज के मामले में स्थिति बिल्कुल अलग है। पशु समाज को संस्कृतिविहीन समाज के रूप में जाना जाता है। हालांकि, गैर–मानव आदिमानवों की कुछ गतिविधियों में संस्कृति की छाप मिलती है। उदाहरण के तौर पर बडे लंगूरों, चिंपाजी के बारे में ये कहा जाता है कि उनमें अल्पविकसित संस्कृति और भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है, जिसे 'मेटा–भाषा' कहते हैं। यह देखा गया है कि चिम्पांजी अपने वातावरण से भोजन प्राप्त करने लिए लकड़ी के कुछ औजारों का इस्तेमाल करते हैं। तंजानिया में चिम्पांजी के अध्ययन के दौरान जेन गुडॉल ने ऐसा ही पाया।

इसके अतिरिक्त मानव से इतर जीव–जंतुओं और पशु–पक्षियों के कुछ कार्य– जैसे कि पक्षियों द्वारा बनाए गए घोंसले–सदियों बाद उनकी भावी पीढ़ी द्वारा भी ऐसे ही बनाए जाते हैं। भविश्य में किसी चिड़िया द्वारा बनाए गए घोंसले कालांतर में उसकी माँ द्वारा बनाए गए घोंसले के अनुरूप ही अथवा उस प्रजाति के दूसरे सदस्यों द्वारा बनाए गए घोंसलों के समान ही होंगे। गैर मानव जीव–जंतुओं का परिणाम घोंसला के आकार और संरचना की समानता की प्रवषत्ति को माना जा सकता है। उनकी आनुवंशिक सामग्री में परिवर्तन होने पर उनके द्वारा निर्मित उत्पादों में बदलाव हो जाएगा। परंतु मनुष्यों में ऐसा नहीं होता है, क्योंकि उनके उत्पादों में बदलाव जारी रहता है और उनके उत्पाद उनके जैव आनुवंशिक पदार्थों से स्वतंत्र किस्म के होते हैं।

मानवविज्ञानियों की माने तो संस्कृति केवल मनुष्यों में ही पाई जाती है। अतीत या वर्तमान का कोई मानव समाज, चाहे वो सरल समाज हो या जटिल समाज का कभी भी संस्कृतिविहीन नहीं रहा है। अतः पशु समाज की कल्पना संस्कृतिविहीन समाज से की जा सकती है जबकि मानव समाज की नहीं। इसी कारण से ब्रोंस्लालो मालिनोव्स्की ने कहा है कि 'संस्कृति का संबंध विशिष्ट रूप से मानव से ही है'।

समाज और संस्कृति की अवधारणाएं मानव जीवन के निर्बाध प्रवाह की संकल्पनाएं हैं। समाज की अवधारणा जनसंख्या और लोगों के समूह के बीच संबंधों के सेट पर बल देती है। तुलना करने पर हम पाते हैं कि संस्कृति रीति–रिवाजों और प्रथाओं का नाम है, जिसमें मनुष्यों ने जीवित रहने के क्रम में समय के साथ सुधार किया है। अतः जब हम समाज की बात करते हैं तो हम लोगों के बीच अंर्तसंबंधों की बात करते हैं, और जब हम संस्कृति की बात करते हैं, तो उसमें लोगों के व्यवहार, बातचीत करने का तरीका, विभिन्न कामों को करने के तरीके और उनकी उपलब्धियाँ शामिल होती हैं। उदाहरण के लिए, किसी माँ और उसके बच्चे के

बीच का रिश्ता एक सामाजिक संबंध होता है, परंतु बच्चा और माँ एक दूसरे से कैसे व्यवहार करें, यह संस्कृति का एक भाग है। माँ और बच्चे का संबंध सार्वभौमिक है, परंतु अलग–अलग संस्कृतियों की माँओं और बच्चों के व्यवहार और कार्यों में काफी भिन्नता होती है। उदाहरण के लिए कोई अमेरिकी माँ, फिलीपींस की माँ की तुलना में अलग होगी और उन दोनों में यह भिन्नता संस्कृति का परिणाम है, जोकि एक पीढ़ी से अगले पीढ़ी तक जाती है। मानव विज्ञान के इतिहास में किसी एक अवधारणा को किसी दूसरी अवधारणा की तुलना में प्राथमिकता देने पर सदैव विवाद रहा है। उदाहरणस्वरूप, अमेरिकी मानवविज्ञानी यह मानते थे कि संस्कृति मनुष्यों की मुख्य विशेषता है, इसलिए सामाजिक संबंधों के अध्ययन में संस्कृति को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। रॉबर्ट लोवी ने यह कहा है कि मानव विज्ञान हेतु संस्कृति की अवधारणा ठीक उसी प्रकार है जैसे कि, गणित विषय हेतु शून्य की अवधारणा है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने मानव विज्ञान शाखा में संस्कृति की अवधारणा को मुख्य माना है। अतः अमेरिकी मानव विज्ञान ने 'सांस्कृतिक मानव विज्ञान' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया जिसके अंर्तगत समकालीन समाजों के जीवनयापन के तरीके, रीति–रिवाजों और प्रथाओं आदि का अध्ययन किया जाता है और विशेष रूप से जनजातीय लोगों और स्थानीय लोगों के जीवन का।

ब्रिटिश मानव विज्ञान का परिप्रेक्ष्य इससे अलग था। ब्रिटिश मानव विज्ञान के प्रमुख विद्वान ए. आर. रैडक्लिफ–ब्राउन, जो फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम से अधिक प्रभावित थे, उन्होंने सामाजिक संरचना (अथवा दुर्खीम(डर्खाईम) ने जिसे 'सामाजिक रूपरेखा' कहा है) के अध्ययन को प्राथमिकता दी। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश मानव विज्ञान अपने आप में 'सामाजिक मानवविज्ञान' बन गया, जिसे समाज के स्वरूप और संबंधों के अध्ययन में रूप में परिभाषित किया गया जोकि सरल समाजों में पाया जाता है। 1905 में लिवरपूल में सामाजिक मानव विज्ञान के चेयर की स्थापना की गई और सर जेम्स फ्रैजर इस पद पर आसीन होने वाले पहले व्यक्ति थे जो कि *द गोल्डन बॉ* के प्रसिद्ध लेखक हैं।

मानव विज्ञान की इन दोनों शाखाओं के बीच विवाद के शीघ्र अच्छे परिणाम उस समय आए जब यह तर्क दिया गया कि समाज और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और ये दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं। क्लिफोर्ड गीर्टज ने यह कहा कि ये मानवविज्ञानियों की मानव जीवन से संबंधित कल्पनाएँ हैं। अतः किसी एक अवधारणा को प्राथमिकता देने न देने के विवाद में पड़ने के स्थान पर इन दोनों के बीच अंर्तसंबंध को प्राथमिकता देना बेहतर होगा क्योंकि मनुष्य संस्कृतिविहीन नहीं रह सकता है तथा संस्कृति सामाजिक संबंधों से निर्मित होती है। समाज और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इस अवधारणा के विरुद्ध कई विद्वान सामाजिक मानव विज्ञान या सांस्कृतिक मानव विज्ञान के संदर्भ में नहीं सोचते हैं और इसके विपरीत वे इसे 'सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान'(अथवा 'सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान', 'सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान') का नाम देते हैं जो यह दर्शाता है कि अध्ययन में समाज और संस्कृति दोनों को समान महत्व दिया जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. संस्कृति को 'विशिष्ट मानव' का नाम किसने दिया ?

....

....

....

2. किस मानवविज्ञानी ने यह टिप्पणी की है कि "जिस प्रकार गणित विषय हेतु शून्य का महत्त्व है उसी प्रकार मानव विज्ञान के लिए संस्कृति का महत्त्व है"?

....

....

....

3. फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम के कार्यों से कौन से ब्रिटिश मानवविज्ञानी प्रभावित थे?

....

....

....

4. 'सामाजिक रूपरेखा' का क्या तात्पर्य है?

....

....

....

5. सामाजिक मानव विज्ञान चेयर की स्थापना कब और कहाँ की गई?

....

....

....

6. सामाजिक मानव विज्ञान चेयर के पद पर सबसे पहले कौन आसीन हुए और उनके प्रसिद्ध किताब का नाम क्या है?

....

....

....

4.2 समाज

'समाज' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द *सोसियस* से हुई है, जिसका अर्थ है 'साझा करना'। कहने का तात्पर्य यह है कि इस विचारधारा के अंतर्गत जो लोग समाज का गठन करते हैं उनके बीच आदान–प्रदान करने की प्रवृत्ति होती है और उन लोगों के बीच एक अंर्तसंबंध होता है। समाज की अवधारणा अनुभवजन्य और सारगर्भित दोनों होती है। अनुभवजन्य स्तर पर देखा जाए तो समाज की अवधारणा का तात्पर्य यह है कि समाज में लोगों के समूह शामिल होते हैं। कोई व्यक्ति 'एकल' होता है और वह सामाजिक मूल्यों, व्यवहार करने के मानदंडों और जिस समाज का वह अंग होता है उसमें कार्य करने की तकनीक को आत्मसात् करने में सक्षम होता है तथा उस समाज के दूसरे लोगों के साथ अपने संबंध को स्थापित करने में

भी वह सक्षम होता है। जब कोई मनुष्य सामाजिक वस्तु बन जाता है तब उसे 'व्यक्ति' कहा जा सकता है। सरल शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि समाजीकृत मनुष्य उस मनुष्य को कहा जाता है जो समाज में रहने के तरीकों (या साझा करने की प्रवृत्ति) को सीख लेता है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ संबंधित है। ये अंर्तसंबंध समाज की अवधारणा के मूलभूत सिद्धांत हैं। अरस्तु ने कहा है कि 'मनुष्य एक राजनीतिक (अर्थात् सामाजिक) प्राणी है, जिसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य समूह में एक साथ रहता है। अरस्तु ने यह भी कहा है कि अकेला रहने वाला या तो जानवर हो सकता है या ईश्वर। अतः कोई भी मनुष्य कभी भी अकेला या अलग–थलग नहीं रहता। किसी मनुष्य को कठोरतम सजा के रूप में अकेले जीवन बिताने की सजा दी जा सकती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि समाज वह ढांचा है जिसे मानवविज्ञानी और समाजशास्त्रियों ने मानव व्यवहार और उसके विश्लेषण हेतु बनाया है।

समाज को व्यक्तियों के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। हालांकि, प्रत्येक समूह समाज का निर्माण नहीं करते। उदाहरण के लिए, भीड़ (झुंड) को भी व्यक्तियों का समूह कहा जा सकता है, लेकिन जैसे ही इस प्रकार के समूह को प्रेरित करने वाले घटक गौण हो जाते हैं, इस प्रकार का समूह भी समाप्त हो जाता है। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो सदियों से मनुष्य की सामूहिकता और समूह के सभी सदस्यों के बीच एकता की भावना से ही समाज का सृजन होता है। समाज के सदस्यों में अपने क्षेत्र से लगाव होता है जिसे वे सामूहिक रूप से संरक्षित करने की कोशिश करते हैं। समाज के सदस्यों के बीच श्रम का विभाजन भी होता है और समाज के प्रत्येक समूह का कार्य अलग–अलग निर्धारित होता है। प्रत्येक समाज अपने आप में छोटी–छोटी इकाईयों में विभाजित होता है और इकाईयों को उस समाज का समूह कहा जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें:

7. समाज शब्द की उत्पत्ति किस लैटिन शब्द से हुई है?

....

....

....

8. 'मनुष्य को एक राजनीतिक प्राणी' किसने कहा है?

....

....

....

9. समाज का क्या तात्पर्य है? इसकी व्याख्या अपने शब्दों में करें।

....

....

....

....

4.3 समूह

जीव के साथ तुलना करके समाज की अवधारणा को आगे विकसित किया गया है। इसे मूलभूत समरूपता के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ यह है कि समाज को समझने हेतु जीव के मॉडल का उपयोग किया जाता है। चूंकि कोई जीव अंगों में विभाजित होता है और अंग ऊतकों में विभाजित होते हैं, और ऊतक कोशिकाओं में। ठीक इसी प्रकार समाज समुदायों में विभाजित होता है, समुदाय समूहों में विभाजित होते हैं और समूह व्यक्तियों में।

विखंडन की प्रक्रिया	जीव	संलयन की प्रक्रिया	विखंडन की प्रक्रिया	समाज	संलयन की प्रक्रिया
	अंग			समुदाय	
	ऊतक			समूह	
	कोशिका			व्यक्तियों	

व्यक्ति मूलभूत इकाई होता है, परन्तु कोई भी व्यक्ति कभी भी अलगाव में जीवित रहने की उम्मीद नहीं कर सकता है। व्यक्ति संबंधों में प्रवेश करता है और व्यक्तियों की इस सामूहिकता को समूह कहा जाता है। किसी समूह को उन व्यक्तियों के बीच संबंधों के सेट के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कई कार्यों को सामूहिक रूप से पूरा करते हैं। जॉर्ज होम्स द्वारा समूह को 'सामाजिक ईंट' कहा गया है और समूहों के मिलने से समुदाय बनता है।

सीएस कूले द्वारा समूह की अवधारणा में एक अहम योगदान किया गया। उन्होंने प्राथमिक समूह की अवधारणा दी, जो समाजीकरण की प्रक्रिया में एक अपूरणीय भूमिका निभाता है। एक प्राथमिक समूह एक छोटा समूह है, जिसमें पच्चीस से अधिक व्यक्ति नहीं होते हैं, जिनके बीच लगातार बातचीत होती है और उनमें एकता की भावना होती है। 'पच्चीस व्यक्ति' के विचार को 'व्यक्तियों के छोटे समूह' के अर्थ में समझा जा सकता है, जिनमें नियमित तौर पर बातचीत संभव है, और इन व्यक्तियों का जीवन भी एक जैसा हो सकता है। वे संयुक्त परिवारों की भांति एक ही घर में रह सकते हैं, या एक ही पड़ोस का हिस्सा हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, 'पच्चीस व्यक्तियों' के विचार को वस्तुतः नहीं लिया जाना चाहिए।

परिवार, सहकर्मी समूह और पड़ोस प्राथमिक समूह के उदाहरण हैं। समाजशास्त्र ने किसी प्राथमिक समूह की तुलना में एक ऐसे समूह के विषय में बात की है जिसे माध्यमिक समूह के रूप में जाना जाता है और जिसमें अधिक व्यक्ति होते हैं तथा उनके बीच प्रत्यक्ष बातचीत नहीं होती है, जो कि अंतिम प्रकार का माध्यम होता है। इसका तात्पर्य यह है कि ऐसे समूहों में दूसरे का शोषण सम्मिलित है और लक्ष्यों को पूरा करने के उपरांत समूह नष्ट हो जाता है। यह निरंतरता की तरह नहीं है जैसा कि प्राथमिक समूहों के लिए जिम्मेदार माना जाता है जो जनजातीय और ग्रामीण जैसे पारंपरिक समाजों में प्रचुर मात्रा में होता है जबकि माध यमिक संबंध शहरी समाज में बड़ी संख्या में हैं अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण से शहरी समाज में बदलाव का तात्पर्य माध्यमिक समूहों की संख्या में भी बढ़ोतरी है। यद्यपि इससे यह अनुमान नहीं लगाया जाना चाहिए कि आधुनिक समाजों में कोई प्राथमिक समूह नहीं होता है। परिवार जो कि प्राथमिक समूह का एक उदाहरण है वह सार्वभौमिक रूप से पाया जाता है। इसी प्रकार मित्रता भी सार्वभौमिक रूप से पाई जाती है।

प्राथमिक और माध्यमिक समूहों के विभाजन के अतिरिक्त इसके कुछ अन्य वर्गीकरण भी प्रस्तावित किए गए हैं। उदाहरण के लिए डब्ल्यू.जी. सुमनर ने समूहों को 'आन्तरिक समूह'

('अंदरूनी समूहों') और 'बाह्य समूह' (बाह्य लोगों के समूह) में विभाजित किया है। पहला समूह उन लोगों का है जो समूह के सदस्य हैं और उनमें एकता (हमारा) की भावना है। वे सभी लोग जो इस समूह के सदस्य नहीं हैं उन्हें बाह्य समूह कहा जाता है। दूसरी अवधारणा अत्यंत प्रसिद्ध संदर्भ समूह की है – यह लोगों का वह समूह है जो अनुकरणीय है। यह अवधारणा ऊपर की ओर (और नीचे की ओर भी) सामाजिक गतिशीलता के सन्दर्भ को समझने में सहायक है।

अपनी प्रगति की जांच करें

10. जैविक सादृश्य (आर्गेनिक एलालॉग) क्या है?

....

....

....

11. समूह क्या है? समूह को किसने 'सामाजिक ईंट' के रूप में परिभाषित किया है ?

....

....

....

12. प्राथमिक समूह की अवधारणा किसके द्वारा दी गई?

....

....

....

13. प्राथमिक समूहों के उदाहरण दीजिए।

....

....

....

14. माध्यमिक समूह को परिभाषित करें।

....

....

....

4.4 संगठन

समूह की अवधारणा से निकटता से संबंधित संगठन की अवधारणा है। संगठन विशेष प्रयोजनों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तियों द्वारा बनाए जाते हैंय यही वजह है कि संगठनों को 'विशेष उद्देश्य समूह' के नाम से भी जाना जाता है। यहां क्षेत्र और रिश्तेदारी महत्वपूर्ण नहीं हैं। ऐसे

समूह स्वैच्छिक और गैर–स्वैच्छिक दोनों प्रकार के होते हैं. स्वैच्छिक संगठन इसलिए कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति इसमें शामिल होने के लिए स्वतंत्र है, जबकि अनैच्छिक संगठन के मामले में, ऐसी स्वतंत्रता की अनुमति नहीं होती है। उदाहरण के लिए, सिंगापुर में मामले में प्रत्येक पुरुष को सेना का सदस्य होना होता है। व्यक्ति अपने विवेक का प्रयोग यहां पर नहीं कर सकता है। एक स्वैच्छिक संगठन में शामिल होने या न करने की स्वतंत्रता व्यक्ति को दी जाती है।

उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति जाति समूह का सदस्य तो हो सकता है परन्तु यह जरुरी नहीं है कि वह जाति संगठन का भी सदस्य हो। किसी जाति समूह की सदस्यता वर्णनात्मक है, जो की माता–पिता के किसी जाति से संबंधित होने पर बच्चा भी जन्म के आधार पर उस जाति का सदस्य बन जाता है। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो किसी भी संगठन के साथ जाति का संबंध सदस्यों के हितों को आगे बढ़ाने के एकमात्र उद्देश्य से स्थापित किया जाता है और वह स्वैच्छिक होता है। एक संभावना यह भी हो सकती है कि जाति का संबंध किसी से न हो। शिक्षक संगठन, किसान संगठन, राजनीतिक दल, शतरंज खिलाडियों का संगठन, छात्र संगठन, या केशहीन व्यक्तियों का क्लब संगठन के कुछ उदाहरण हैं। कुछ विद्वानों के लिए, संगठन समूह का एक प्रकार हो सकता है जिसे 'संघीय समूह' कहा जा सकता है, जबकि दूसरों के लिए संगठन समूह से अलग होता है क्योंकि उसके विशिष्ट उद्देश्य होते हैं।

परंपरागत समाजों सहित सभी प्रकार के समाजों में संगठन पाए जाते हैं। कई मानवविज्ञानी इन्हें 'सोडेलिटी समूह' या 'सोडेलिटीज' कहते हैं। उदाहरण के लिए जिस प्रकार आयु सेट एक संगठन है उसी प्रकार इसलिए जादूगरों का समाज भी होता है (जिसे 'गुप्त समाज' भी कहते हैं)। सरल समाजों में संगठनों की संख्या सीमित होती है। जटिल समाजों में उनकी संख्या ज्यादा होती है क्योंकि जटिल समाजों में किसी भी कार्य को पूरा करने हेतु किसी व्यक्ति द्वारा किसी संस्था को स्थापित करने की संभावना होती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

15. संगठन को परिभाषित करें।

....

....

....

16. स्वैच्छिक और गैर–स्वैच्छिक संगठनों के बीच के अंतर को उद्घाटित करें।

....

....

....

17. संघों को 'सोडेलिटी समूह' भी कहा जाता है। इस बात की व्याख्या करें की यह कथन सही है या गलत है।

....

....

....

4.5 समुदाय

विभिन्न समूहों के समुच्चय को समुदाय कहा जाता है, यद्यपि कुछ खास विशेषताएँ होती हैं जिनके द्वारा किसी समुदाय की पहचान की जाती है। फर्दिनांद टोनीस ने 'समुदाय' (गेमाइनशाफ्ट) और 'समाज' (जेस्लिशाफ्ट) के बीच अंतर का उल्लेख किया है। उनका यह मानना था कि इनमें से पहले वाली एकीकृत इकाई थी, जिसने विभिन्न सामाजिक बदलावों के कारण टूटना शुरू कर दिया। कोई समुदाय एक समान भावनाओं को साझा करने वाले व्यक्तियों के समुच्चय के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें वे सभी यह महसूस करते हैं कि वे एक ही शरीर के अंग हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वे सभी लोग एक दूसरे से जुड़े होने की भावना साझा करते हैं। यह मानदंड कुछ मामलों पर लागू होता है परन्तु दूसरों पर नहीं, विशेष रूप से उन लोगों पर यह लागू नहीं होता जो किसी अन्य स्थान क्षेत्र में प्रवासित हो जाते हैं, और समय के साथ साथ छोटे समुदायों में बंट जाते हैं। यह विशेष रूप से तब होता है जब किसी मूल समुदाय का आकार बहुत बड़ा हो जाता है और वह स्थानीय क्षेत्र और उसके संसाधनों पर दबाव डालने लगता है। इस कारण उसके कुछ सदस्य उससे अलग हो जाते हैं और किसी दूसरे क्षेत्र में चले जाते हैं और वहां किसी अलग समुदाय की स्थापना करते हैं। किसी अलग स्थान पर रहने के बावजूद उस विशेष समुदाय के लोगों को अप्रादेशिकृत (de–territorialised) किया जा सकता है, परन्तु वे पहले वाले समुदाय से जुडी अपनी साझा भावनाओं को जारी रखेंगे। इस प्रकार किसी समुदाय को परिभाषित करने के लिए साझा भावनाओं से संबंधित विशेषताएं अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

कुछ सामाजिक संरचनाओं को 'क्षेत्रीय समुदाय' माना जाता है – वे समुदायों की विभिन्न विशेषताओं को साझा करते हैं परन्तु वे 'वास्तविक समुदाय' नहीं होते हैं। हम इसका उदाहरण किसी बोर्डिंग स्कूल, मठ और महिला मठ, जेल आदि से ले सकते हैं। इन समुदायों का गठन जैविक प्रक्रिया द्वारा नहीं होता है जैसा कि 'वास्तविक समुदायों' के मामले में होता है और इस प्रकार उनके सदस्य उन समुदायों को छोड़ सकते हैं, वहां से सेवानिवृत्त हो सकते हैं, मृत्यु को प्राप्त कर सकते हैं अथवा मुक्त हो सकते हैं और उनका स्थान किसी अन्य द्वारा लिया जा सकता है। इस प्रकार के समुदायों के आगे बढ़ने के अपने ढंग होते हैं परन्तु उन्हें गांवों, आदिवासी बस्तियों और शहरी आबादी से भिन्न रूप से देखने की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें

18. 'समुदाय' (गेमाइनशाफ्ट) और 'समाज' (जेस्लिशाफ्ट) के बीच अंतर का उल्लेख किसने किया है।

    ....

    ....

    ....

19. समुदाय को परिभाषित करें।

    ....

    ....

    ....

20. किसने यह सुझाव दिया कि किसी समुदाय के सदस्य किसी समान क्षेत्र को साझा करते हैं?

....

....

....

21. 'क्षेत्रीय समुदाय' किसे कहते हैं?

....

....

....

4.6 जनजाति और जाति

समुदाय, गाँवों तक ही सीमित नहीं हैं। समुदाय शहरी समाजों में भी पाए जाते हैं जहां अज्ञात सी दुनिया होती है और जो अपने आप में संशक्त संरचना ('हनीकॉम्ब सिस्टम;) होती है जो व्यक्ति को समाज से जोड़ती है। यहां दो प्रकार के समुदायों – जनजाति और जाति के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

किसी जनजाति को एक समुदाय के रूप में जाना जाता है जिसमें बहुत सारे परिवार सम्मिलित होते हैं जो एक साथ रहते हैं अथवा एक साथ रहते थे, एक ही क्षेत्र को साझा करते हैं और जिनकी एक समान भाषा, संस्कृति, धर्म और जीवन शैली होती है। इस प्रकार का समुदाय राजनीतिक रूप से स्वायत्त होता है, जिसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक आदिवासी समुदाय में उनका अपना नेता होता है और किसी विवाद से संबंधित सभी मामलों को आंतरिक रूप से हल किया जाता है। इस अवधारणा के अनुसार कोई जनजातीय समुदाय बाहरी दुनिया से काफी हद तक अलग होता है और उन्हें अन्य समाजों से संबंधित ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है। इस कारण किसी जनजातीय समुदाय को 'सांस्कृतिक रूप से पृथक' समुदाय माना जाता है जिसका अर्थ यह है कि इनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है जिस पर उसके सदस्यों को गर्व होता है और वे किसी भी तरह के बाहरी ताकतों के हमलों या आलोचनाओं के खिलाफ इसे बचाने के लिए तैयार होते हैं। यह धारणा संस्कृति के लचीलेपन के विचार में योगदान करती है जो इसे खत्म करने के प्रयासों का विरोध करती है।

यद्यपि सच्चाई यह है कि जनजातीय समुदायों को शायद ही कभी पृथक किया जाता है। उनके भी अपने पड़ोसियों के साथ संबंध होते हैं यद्यपि इस तरह के संबंधों की गुणवत्ता और तीव्रता एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ में भिन्न होती है। कुछ आदिवासी समुदाय ऐसे भी हैं जो कि एक दूसरे के साथ परस्पर निर्भर हैं और वे अपनी उपज को एक दूसरे के साथ आदान प्रदान करते हैं। डेविड मंडेलबाम ने निलगिरि हिल्स के जनजातीय समुदायों से संबंधित अपने अध्ययन में ऐसी एक स्थिति का वर्णन किया है। इस प्रकार के अन्य उदाहरण उत्तर–पूर्वी भारत के जनजातीय लोगों में देखे जा सकते हैं। यहां तक कि जब किसी जनजातीय समुदाय के अन्य समुदायों के साथ संबंध होते हैं और इस प्रक्रिया में वह समुदाय समान संस्कृति का हिस्सा बन जाता है जिसे वे साझा करते हैं और यह बात उनकी अलग संस्कृति को आगे ले जाता है जिसका पहले उल्लेख किया गया है और ऐसा करने में दृढ़ता बरती जाती है क्योंकि इससे किसी समुदाय के सदस्यों को पहचान मिलती है।

दुनिया भर में जनजातियां पाई जाती हैं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में उन्हें अलग अलग नामों से जाना जाता है: कुछ हिस्सों में उन्हें आदिवासी, भारतीय, अल्पसंख्यक, मूल निवासी अथवा जातीय समूह कहा जाता है। भारत में जनजाति शब्द के साथ–साथ अनुसूचित जनजाति शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। जिन समुदायों को आरक्षण और विकास के अन्य लाभ देने संबधी पहचान की गई है उन्हें अनुसूचित जनजाति कहा जाता है जिनकी संख्या राष्ट्रीय जनजातीय नीति के मसौदे के अनुसार लगभग सात सौ है।

जाति के बारे में दूसरी ओर देखा जाए तो हिंदू, दक्षिण एशिया में सामाजिक संगठनों का एक सिद्धांत है। एम.एन. श्रीनिवास ने जाति को 'हिंदू धर्म के संरचनात्मक सिद्धांत' के रूप में गणना की है। इस प्रणाली को हिंदू धर्म ग्रंथों द्वारा वैधता प्रदान की गई है। ऋग्वेद के दसवें अनुभाग (मंडल) में इस बात का उल्लेख किया गया है कि विभिन्न जातियों की उत्पत्ति भगवान के शरीर के विभिन्न भागों से हुई है। प्रत्येक जाति को अलग अलग कार्य आवंटित किए गए हैं और वे अपने व्यवसाय को नहीं बदल सकते। किसी जाति के सदस्य अपनी जाति में ही विवाह कर सकते हैं और इस सिद्धांत को जातिय विवाह कहा जाता है।

यद्यपि जनजाति और जाति सांतत्यक की ध्रुवीय श्रेणियां बनाती हैं, जनजाति समतावादी होती है और जाति पदानुक्रमित होती है और इसके साथ–साथ ऐसे भी मामले सामने आए हैं जहाँ जनजातियां जातियां बन गई हैं और जातियां जनजातियां बन गई हैं। इसे जनजाति– जाति सांतत्यक के रूप में जाना जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें

22. जनजाति को परिभाषित करें।

....

....

....

23. क्या जनजातीय समुदाय पृथक होते हैं?

....

....

....

24. अनुसूचित जनजाति को परिभाषित करें।

....

....

....

25. किसने जाति को 'हिंदू धर्म के संरचनात्मक सिद्धांत' का रूप माना है?

....

....

....

26. जातिय विवाह से क्या तात्पर्य है?

....

....

....

27. जनजाति– जाति सांतत्यक से क्या तात्पर्य है?

....

....

....

4.7 पद और भूमिका

हमने पहले देखा था कि व्यक्तियों की मण्डली समाज का गठन करती है। ये व्यक्ति आपस में बातचीत करते हैं, अपने माल और सेवाओं का आदान–प्रदान करते हैं और प्रचलित मानदंडों एवं नियमों के अनुसार दूसरों से व्यवहार करते हैं। समाज के विश्लेषण के तरीकों में से एक तरीका है व्यवहार का पारस्परिक पैटर्न। प्रत्येक वार्तालाप में, व्यक्ति सामाजिक स्थिति को ग्रहण करता है और सामाजिक स्थिति की अपेक्षा के अनुसार दूसरे व्यवहार करता है। उदाहरण के लिए यदि मैं एक शिक्षक हूँ तो मेरा काम सिखाना है, शिक्षक होना मेरी सामाजिक स्थिति है और शिक्षण की प्रक्रिया मेरा व्यवहार है। एक शिक्षक के रूप में मेरी स्थिति को आम तौर पर मेरे समाज में व्यवसायों की एक स्वीकार की रैंकिंग में रखा गया है –यह किसी नौकरशाह से कम हो सकता है या किसी कार्यालय क्लर्क से ऊपर हो सकता है, लेकिन मेरे काम के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा कि मैं अपने काम को किस प्रकार करता हूं। 'अपने काम के आधार पर मैं ' 'अपने छात्रों द्वारा', 'एक अच्छा शिक्षक' या 'एक बुरा शिक्षक' के रूप में गिना जा सकता सकता हूँ।

इस बात को समझने के लिए, राल्फ लिंटन ने दो अवधारणाओं, पद और भूमिका को शुरु किया। उनके अनुसार पद नामक अवधारणा तकनीकी रूप से उन सामाजिक स्थितियों हेतु प्रयुक्त होती है जो कोई व्यक्ति किसी पारस्परिक वार्तलाप की स्थिति में पाते हैं। भूमिका व्यवहार को संदर्भित करता है जो कि कोई व्यक्ति किसी पद पर रहते हुए करता है। लिंटन ने कहा हैं कि भूमिका, 'स्थिति का गतिशील पहलू ' है, जिसका अर्थ यह है कि भूमिका अदा की जाति है। पद और भूमिका एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, क्योंकि एक स्थिति और दूसरा व्यवहार को परिभाषित करता है। कोई पद तब तक प्रासंगिक नहीं होता है जब तक कि उसे क्रियान्वित नहीं किया जाता है, और इसी प्रकार व्यवहार उस स्थिति से संबंधित होता है जो व्यक्ति किसी दिए गए संवादात्मक स्थिति में करता है। क्योंकि कोई व्यक्ति अनेक स्थितियों में भाग लेता है, इसलिए उसकी संकल्पना 'कई स्थितियों का संग्रह' के रूप में की जा सकती है, उनमें से प्रत्येक भूमिका उपयुक्त स्थिति में कार्रवाई में आती है। अतः किसी बैंक में एक ग्राहक, ट्रेन में यात्रीय और कक्षा में शिक्षक की भूमिका में होता है। प्रत्येक पदधस्थिति अधि ाकारों एवं कर्तव्यों का एक बंडल होता है और जो कर्तव्यों को परिभाषित करता है और उनके द्वारा किए गए कर्तव्यों के आधार पर वह उनका दूसरों पर अधिकार भी होता है।

लिंटन ने भी स्थितियों/पदों को दो श्रेणियों में विभाजित किया है – जिनमे से एक को जन्म के आधार पर अर्जित किया जाता है और दूसरे को व्यक्ति प्रतिस्पर्धा एवं अधिग्रहण द्वारा प्राप्त करता है। जन्म द्वारा प्राप्त स्थितियोंध्पदों को जातिगत स्थिति/ पद कहते हैं जैसा कि किसी जाति या कुल में या या किसी विशेष लैंगिक श्रेणी में जन्म। प्रतिस्पर्धा द्वारका प्राप्त पदोंध स्थिति को अर्जित स्थितिध्पद के रूप में जाना जाता है। किसी पारंपरिक समाज में निर्धारित स्थितिध्पद अधिक महत्वपूर्ण होती है बकि किसी जटिल समाज में अर्जित स्थिति की संख्या अधिक होती है। यद्यपि निर्धारित और अर्त्जी स्थितिध्पद विश्लेषणात्मक रूप से अलग अलग हैं, परन्तु निर्धारित स्थिति/पद किसी अर्जित स्थिति/पद को प्रभावित करती है। अगर मैं किसी समृद्ध परिवार में पैदा हुआ हूं, तो विदेश में पढ़ाई करने की संभावना किसी गरीब परिवार के पैदा होने की स्थिति से मेरे लिए कहीं अधिक है।

अपनी प्रगति की जाँच करें

28. स्थिति/पद और भूमिका की अवधारणा को किसने शुरू किया ?

....

....

....

29. निर्धारित स्थितियां/पद क्या हैं?

....

....

....

30. अर्जित स्थिति से आपका क्या तात्पर्य है?

....

....

....

4.8 सामाजिक वर्गीकरण

सामाजिक वर्गीकरण की अवधारणा समाज के विभाजन को अलग–अलग परतों (स्ट्रेट) में दर्शाती है, जिसे एक दूसरे के ऊपर रखा जाता है। 'वर्गीकरण' की अवधारणा स्तर (और उसके बहुवचन 'स्तरों') की याद दिलाता है जिसका पृथ्वी विज्ञान (भूविज्ञान) में प्रयोग किया जाता है। भूविज्ञान में इसके अर्थ की तुलना करके, समाज में, उन लोगों को ऊपर रखा जाता है जो अधिक विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं और वह भी उनके मुकाबले जो कम विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है की सामाजिक वर्गीकरण सामाजिक असमानता से जुड़ा हुआ है। यद्यपि सामाजिक वर्गीकरण के तहत सभी असमानताओं को सम्मिलित नहीं किया गया है। उदाहरणस्वरुप उम्र और लैंगिकता के अनुसार समाज विभाजित होते हैं, परन्तु ये सामाजिक वर्गीकरण के पहलू नहीं हैं। वास्तव में उम्र और लैंगिकता की असमानताओं हेतु सामाजिक भेदभाव शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। जनजातीय समाजों में आयु और लैंगिक असमानताएं हैं परन्तु उनके सामाजिक वर्गीकरण की असमानता नहीं है।

सामाजिक वर्गीकरण के तीन सिद्धांत हैं। पहला वह सिद्धांत है जिसमें लोग (1)जीवन शैली के अनुसार विभाजित होते हैं। कुछ जीवन शैलियों को दूसरों के लिए बेहतर माना जाता है। उदाहरण के लिए, ब्राह्मणों की जीवन शैली को अन्य जातियों की जीवन शैली से श्रेष्ठ माना जाता है। इस सिद्धांत को स्थिति कहा जाता है। जाति किसी स्थिति समूह का उदाहरण है।

दूसरा सिद्धांत (2) वर्ग नामक श्रेणी है। इसका संबंध उत्पादन के पहलुओं से है। इसका संबंध संसाधनों पर नियंत्रण से है। कार्ल मार्क्स के अनुसार मुख्य रूप से दो वर्ग होते हैं – जिनके पास संपत्ति होती है ('स्वामी') और जिनके पास संपत्ति नहीं होती ('स्वामित्वहीन')। उत्तरार्द्ध उस संपत्ति पर कार्य करते हैं जिस पर प्रथम श्रेणी के सदस्यों का स्वामित्व होता है। अपने कार्य के बदले वे मजदूरी प्राप्त करते हैं, वे मजदूर होते हैं। कार्ल मार्क्स का यह मानना था कि साम्यवाद के पहले चरण के बाद मानव इतिहास में प्रत्येक समय जब कोई वर्ग नहीं था तब भी इन दो वर्गों की उपस्थिति उसकी विशेषता थी। वर्गीकरण के इस पहले चरण को 'आदिम साम्यवाद' के रूप में जाना जाता था जिसे कार्ल मार्क्स के सहयोगी फ्रेडरिक एंजल्स ने सुझाया था। स्थिति और वर्ग के बीच यह अंतर है कि यदि पहले को जीवन शैली के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है – उपभोग के तरीके के रूप में तो दूसरे को उत्पादन की प्रणाली में इसके स्थान के संबंध में परिभाषित किया जाता है। दूसरे शब्दों में स्थिति को जीवन 'शैली' के रूप में जाना जाता है, और वर्ग वह है जिसके द्वारा उत्पादन प्रक्रियाओं में भूमिका अदा की जाती है।

तीसरा सिद्धांत (3) राजनीतिक शक्ति का है। प्रत्येक समाज में कुछ लोग होते हैं जो दूसरों पर राज करते हैं और अपनी चाहत के अनुसार दूसरों से काम लेते हैं। कार्ल मार्क्स हेतु संसाधनों पर नियंत्रण के लिए ताकत लगाई गई। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जो लोग आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखते हैं वे भी राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करते हैं। मैक्स वेबर हेतु कई समाजों में वर्ग और शक्ति अलग अलग हो गई है। जिनका आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण है उनके लिए यह जरूरी नहीं है कि वे राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करें। मार्क्स ने सत्तारूढ़ वर्ग की अवधारणा दी है। वेबर ने यह माना है कि वर्ग को स्थिति बाजार की स्थिति द्वारा निर्धारित किया गया था। वेबर ने यह कहा है कि वर्ग की स्थिति बाजार की स्थिति थी।

वर्गीकरण के ये तीन सिद्धांत ओवरलैप हो सकते हैं, वह भी इस अर्थ में कि जो पद पदानुक्रम में उच्चतम स्थान पर होते हैं वे अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करते हैं और राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की स्थिति 'संचयी असमानता' है, परन्तु जब ये सिद्धांत ओवरलैप नहीं होते हैं तो इस 'प्रसारित असमानता' कहते हैं। आंद्रे बेते ने दक्षिण भारत के एक गांव श्रीपुरम का अध्ययन किया और उसने अपने अध्ययन में इस बात का उल्लेख किया कि वहां पर संचयी असमानता से प्रसारित असमानता जैसे परिवर्तन हुए हैं। प्रारंभ में यहाँ ब्राह्मण जमीन के मालिक थे और उन्होंने भी राजनीतिक शक्ति का प्रयोग किया। वहां गैर– ब्राह्मण आंदोलन ने ऐसी परिस्थिति का नेतृत्व किया जिससे जहां ब्राह्मण के नियंत्रण से जमीन गैर–ब्राह्मण के नियंत्रण में चली गई। इस प्रकार असमानता प्रसारित की गई वह भी इस अर्थ में कि जो जाति (अर्थात स्थिति) पदानुक्रम के शीर्ष पर थी वह वर्ग या शक्ति के पदानुक्रम में शीर्ष पर नहीं थी।

अपनी प्रगति की जांच करें

31. सामाजिक वर्गीकरण क्या है?

....

....

....

32. सामाजिक वर्गीकरण के तीन सिद्धान्त क्या हैं?

....

....

....

33. संसाधनों पर शक्ति के संदर्भ में किसने वर्ग की चर्चा की है ?

....

....

....

4.9 समाज और संस्कृति के बीच संबंध

समाज की कल्पना संस्कृति के बिना नहीं की जा सकती है। एम.जे. हर्सकोविट्स के शब्दों में संस्कृति की सबसे संक्षिप्त परिभाषा, यह है कि यह 'मनुष्य निर्मित पर्यावरण है'। संस्कृति ज्ञान की वह प्रणाली है जो पीढ़ी दर पीढ़ी मनुष्यों के सामूहिक और संचयी प्रयासों द्वारा बनाई गई है। संस्कृति सीखी जाती है और इस प्रकार एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक फैलती है, और प्रत्येक पीढ़ी इसमें थोड़ा बहुत कुछ जोड़ती है और इसे थोड़ा सा आगे ले जाती है। इस तरह सामूहिक और व्यक्तिगत मानव कार्यों से उस समय तक संस्कृति परिवर्तित होती रहती हैय जब तक कि बाह्य तौर पर इसमें परिवर्तन नहीं किए जाते हैं, संस्कृति परिवर्तन की प्रक्रिया अपने आप में एक धीमी प्रक्रिया है। संस्कृति को समाज के सदस्य प्रभावित करते हैं। सीखने की संस्कृति की प्रक्रिया समय के साथ धीमी गति से होती है उसे संस्कृतिकरण के नाम से जाना जाता है।

संस्कृति जानकारी के लिहाज से उच्च होती है लेकिन वह अपने आप पर कार्य नहीं करती है। जो ताकत में उच्च होता है वह व्यक्ति है। जब व्यक्ति संस्कृति को आत्मसात कर लेता है उसके उपरांत वह व्यवहार शुरू कर देता है तो उसके व्यवहार में संस्कृति झलकती है। संस्कृति की समझ और व्यक्ति की ताकत के कारण सामाजिक जीवन अस्तित्व में आता है। मानव जीवन को समझने के लिए व्यक्ति (इकाई), व्यक्तियों का समूह (समाज) और संस्कृति के बीच संबंध मूल आधार है। अगली इकाई में संस्कृति की अवधारणा को विस्तृत ढंग से चर्चा की गई है।

4.10 सारांश

आपने इस इकाई में मानव विज्ञान के मूलभूत अवधारणाओं को सीखा है। मानवविज्ञानी समाज और संस्कृति के विभिन्न रूपों का अध्ययन करते हैं, उनकी तुलना करते हैं तथा उनके बीच

की समानता तक पहुंचने का प्रयास करते हैं। इन अवधारणाओं में से प्रत्येक अवधारणा को अन्य अवधारणाओं में विभाजित किया जा सकता है। विश्लेषण के ये सभी तरीके हैं जो कि समाज और संस्कृति को समझने में हम लोगों की सहायता करते हैं। यहां पर हमने समाज के अर्थ और उससे संबंधित मूल अवधारणाओं पर चर्चा की है, अगली इकाई में हम संस्कृति की अवधारणा को विस्तारपूर्वक समझने की कोशिश करेंगे कि मानवविज्ञानी संस्कृति को किस प्रकार परिभाषित करते हैं और उसे देखते हैं तथा संस्कृति से संबंधित विभिन्न तत्व कौन से हैं।

4.11 संदर्भ

किंग्सले, डेविस. (1949). *ह्यूमन सोसाइटी* .न्यूयॉक: मैकमिलन.

बेते, आंद्रे (2012) *सोशियोलॉजी.* दिल्ली: ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

हरलांबोस, एम. होल्बर्न, एम एंड हेल्ड, आर. (1980). *सोशियोलॉजी* : *थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

4.12 आपकी प्रगति की जांच करने हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. ब्रोंस्लालो मालिनोव्स्की
2. रॉबर्ट लोवी
3. ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन
4. फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम
5. सन 1905 में लिवरपूल में सामाजिक मानव विज्ञान के चेयर की स्थापना की गई।
6. सर जेम्स फ्रेजर
7. 'समाज' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द सोसियस से हुई है, जिसका अर्थ है 'साझा करना'।
8. अरस्तु
9. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.2 को पढ़ें।
10. इस इकाई के अनुभाग 4.3 को पढ़ें
11. जॉर्ज होम्स
12. सीएस कूले
13. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.3 को पढ़ें।
14. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.3 को पढ़ें।
15. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.4 को पढ़ें।

16. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.4 को पढ़ें।
17. सत्य है।
18. फर्दिनांद टोनीस
19. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.5 को पढ़ें।
20. मैकाइवर व पेज
21. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.5 को पढ़ें।
22. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
23. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
24. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
25. एम.एन.श्रीनिवास
26. किसी जाति के सदस्य अपनी जाति में ही विवाह कर सकते है, इस सिद्धांत को जातीय विवाह कहा जाता है।
27. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
28. राल्फ लिंटन
29. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.7 को पढ़ें
30. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.8 को पढ़ें
31. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.8 को पढ़ें
32. सामाजिक वर्गीकरण के तीन सिद्धांत है – स्थिति, वर्ग और राजनीतिक शक्ति
33. कार्ल मार्क्स

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 5 संस्कृति

इकाई की रूपरेखा

5.0 प्रस्तावना

5.1 'संस्कृति' अर्थ और लक्षण

- 5.1.1 मानव समाज के लिए संस्कृति अद्वितीय है
- 5.1.2 संस्कृति सार्वभौमिक है
- 5.1.3 संस्कृति अनुवांशिक रूप से प्राप्त नहीं होती
- 5.1.4 संस्कृति स्थिर होती है फिर भी गतिशील होती है

5.2 संस्कृति की परिभाषाएं

5.3 संस्कृति की अवधारणाएं

- 5.3.1 संस्कृतिकरण और समाजीकरण
- 5.3.2 संस्कृति के लक्षण, संस्कृति की जटिलता और संस्कृति क्षेत्र
- 5.3.3 संस्कृति के पैटर्न

5.4 संस्कृति परिवर्तन के तंत्र

- 5.4.1 प्रसार
- 5.4.2 संस्कृति संक्रमण
- 5.4.3 आत्मसात्करण

5.5 संस्कृति सापेक्षवाद और जातीयतावाद

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ

5.8 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी निम्न बातों को समझने में सक्षम होंगे

- मानव विज्ञान में संस्कृति का अर्थ और विशेषताएं;
- विभिन्न मानव विज्ञानियों द्वारा संस्कृति की दी गई परिभाषाएं;
- मानव विज्ञान में संस्कृति की अवधारणा और;
- संस्कृति परिवर्तन के तंत्र।

योगकर्त्ता : डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

5.0 प्रस्तावना

"आपके पास कोई संस्कृति नहीं है", "आप असभ्य हैं", यह सारी ऐसी बातें हैं जो अनेक लोगों ने सुने होंगे। आम आदमी के शब्दों में संस्कृति को परिष्कृत व्यवहार के लिए जिम्मेदार माना जाता है और इससे जीवन के बेहतर गुण जैसे, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, रंगमंच आदि में आनंद की अनुभूति होती है। जब हम किसी व्यक्ति को देखते हैं तब हम उसकी समीक्षा करने का प्रयास करते हैं, जैसे कि किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति उसका व्यवहार किस प्रकार का है, उसमें शिष्टाचार की कैसी आदतें हैं, जैसे कि डाइनिंग टेबल पर वह किस प्रकार बैठता है और कटलरी अर्थात छुरी –कांटे का इस्तेमाल वह किस प्रकार करता है। इन सभी बातों को हम परिष्कृत व्यवहार कहते हैं या इसके बारे में यह सुझाव देते हैं कि उक्त व्यक्ति के पास संस्कृति है। हालांकि मानवशास्त्रीय शब्दों में इसका अर्थ यह है कि संस्कृति में सभी प्रकार के व्यवहार शामिल होते हैं। संस्कृति मूल रूप से व्यक्ति के जीवन के तरीके को प्रतिबिंबित करती है। मानव विज्ञान में संस्कृति का संबंध केवल अच्छे परिष्कार से ही नहीं है अपितु रोजमर्रा के जीवन का वह एक अभिन्न हिस्सा भी है जो कि प्रत्येक समाज के पास होता है। संस्कृति पर मानवविज्ञान को इसलिए प्रमुखता देखा जाता है ताकि लोगों के जीवन को समझा जा सके और वह भी 'संस्कृतिहीन' जैसे शब्दों की प्रासांगिकता दिए बिना। क्योंकि प्रत्येक समाज में कोई ना कोई संस्कृति होती है, जो कि सरल संस्कृति हो सकती है, या जटिल, या एक दूसरे से भिन्न हो सकती है। प्रत्येक संस्कृति अपने आप में अनूठी है। इस इकाई में हम इस बात की चर्चा करेंगे कि मानवविज्ञान किस प्रकार संस्कृति को देखता है। हम इसकी शुरुआत संस्कृति के बारे में विभिन्न मानवविज्ञानियों द्वारा समय–समय पर दी गई परिभाषाओं से शुरू करेंगे ताकि संस्कृति के तात्पर्य को जीवन स्वरूप के रूप में समझा जा सके। इस इकाई के अंतर्गत संस्कृति संबंधी विभिन्न गुण तथा मानव जीवन को समझने में यह किस प्रकार सहायता करता है, की चर्चा की गई है।

5.1 संस्कृतिः अर्थ और लक्षण

'संस्कृति' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'कल्चुरा' से हुई है जो कि कोलो क्रिया से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका तात्पर्य है 'प्रवृत्ति', 'उपजाना' या 'खेती करना' जो अन्य लोगों के बीच निर्मित होती हैं। (टकर 1931) संस्कृति का तात्पर्य लोगों के जीवन का रहन–सहन है जैसा कि, प्रस्तावना अनुभाग में इस बात की चर्चा की गई है कि संस्कृति समस्त मानव गतिविधियों को समाहित करती है। तो आइए इस अनुभाग के अंतर्गत संस्कृति के गुणों की चर्चा करते हैं और उसे समझते हैं।

5.1.1 संस्कृति, मानव समाज का अद्वितीय गुण

हमने इस कथन को कई बार सुना है कि संस्कृति मानव समाज हेतु अद्वितीय होती है। आइए इस बात की जांच करें कि संस्कृति मानव समाज हेतु अद्वितीय क्यों होती है। लंगूर और बंदर, मानव व्यवहार का अनुकरण कर सकते हैं। यदि आप कोई पत्थर उठाकर किसी बंदर पर फेंकते हैं तब वह बंदर आपके व्यवहार का अनुकरण करेगा और वह भी पत्थर उठाकर आपकी ओर फेंके सकेगा हालांकि, वह इस बात को जानबूझकर नहीं करेगा और ना ही वह इसके पीछे नैतिक बातों को समझ सकेगा। उसके लिए इन बातों को दोहराना मुश्किल होगा। बंदर की ओर फेंके गए पत्थर पर कितना मानव बल प्रयोग होगा ताकि उस पत्थर से किसी को गहरी चोट ना पहुंचे अथवा पत्थर का आकार कितना होगा इन सभी बातों का निर्णय आधार

सही या गलत के बारे में जानकारी किसी वानर या लंगूर को नहीं हो सकती वह इन बातों को नहीं समझ सकता है। हालांकि, यदि हम किसी मानव शिशु को किसी खास गतिविधि को करने का तरीका सिखा देंगे तब वह उस व्यवहार को जान जाएगा और भविष्य में वह इस व्यवहार को दोहरा सकता है। संस्कृति सीखी गई आदतें हैं और इन आदतों को भुलाया भी जा सकता है। इसलिए उत्तर हां है क्योंकि, संस्कृति केवल मानव समाज के लिए अद्वितीय होती है।

अतः वे कौन से गुण होते हैं जो संस्कृति को मानव समाज हेतु अद्वितीय बनाते हैं। वो गुण या यूं कहें कि विशेषताएं जो मानव को संस्कृति के सृजन की अनुमति प्रदान करती हैं, वह उसके जैविक विकास में निहित है। कहने का अर्थ यह है कि विपरार्थी अंगूठा, हमारी क्रेनियल क्षमता और द्विगमन–पादिता की क्षमता इस अद्वितीय संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करता है और सही सोच को विकसित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि केवल मानव ही रचनात्मक प्रतीकात्मक व्यवहार में सक्षम होते हैं। जैसे ही हम अपनी यात्रा को अपने पैरों के माध्यम से शुरू करते हैं तब हमारे हाथ स्वतंत्र हो जाते हैं और हम इनका इस्तेमाल किसी चीज को पकड़ने या किसी वस्तु के उत्पादन हेतु कर सकते हैं जिनका इस्तेमाल हम स्वयं करते हैं। विपरीत अंगूठे के इस्तेमाल से मानव को यह अनुमति मिलती है कि वह औजारों और उपकरणों को बना सके और उन्हें पकड़ सके। जैसा कि, ई. बी टायलर (हर्सकोविट्स 1958) ने इस बात की चर्चा की है कि मनुष्य को "औजार इस्तेमाल करने वाला जानवर" बनाने के लिए हमारे द्वि–पदगमन (यानि दोनों पैरों पर चलना) रीढ़ की हड्डी की संरचना के लिए भी जिम्मेवार है जिसके द्वारा हम अपने सिर को नियंत्रित रखते हैं और जिसके द्वारा हमारी स्वरलिपि उन्मुक्त होती है इस प्रकार इससे हमें बोलने की शक्ति प्राप्त हुई है। यह हमारी सांस्कृतिक यात्रा की शुरुआत है। संस्कृति को मानव सभ्यता के प्रचार– प्रसार का माध्यम कहा जाता है क्योंकि भाषा में दो व्यक्तियों या यूं कहें कि जो मनुष्य के बीच संचार को या वार्तालाप को सहज व सुगम बना दिया है।

5.1.2 संस्कृति सार्वभौमिक है

मानवविज्ञान की प्रारंभिक अवधारणाओं में से एक यह है कि जीवन के सभी मानवीय तरीकों या संस्कृतियों द्वारा प्राप्त किए गए परिणाम मूल रूप से एक समान होते हैं। (हर्सकोविट्स 1958) हरबर्ट स्पेंसर और ई.बी टायलर जैसे प्रारंभिक मानव विज्ञानियों द्वारा इस सार्वभौमिकता की संस्कृति को सैद्धांतिक रूप दिया गया। जिन्होंने इसे मानवजाति की मानसिक एकता (साइकिक युनिटी ऑफ मैनकाइंड) के रूप में उल्लेख किया। इस दृष्टिकोण ने विभिन्न संस्कृतियों में एकरूपता को मानव की एक जैसी क्षमताओं के कारण माना। उदाहरण स्वरुप, लगभग सभी संस्कृतियों में चाहे वह निरक्षर समाज में हो या विकसित समाज हो उन में परिवार, विवाह और रिश्तेदारी की संस्थाएं होती हैं हालांकि, उनके पैटर्न अलग–अलग हो सकते हैं।

इस प्रकार यदि हम मानव इतिहास की जांच करें तो पाएंगे कि मानव द्वारा खाद्य उत्पादन का पैटर्न एक समान है । उदाहरण के लिए, विश्व भर में कई स्थानों से प्राप्त किए गए औजार के रूप में कुल्हाड़ी की संरचना यूरोप और एशिया में एक जैसी थी और उनकी उपयोगिता भी एक समान थी। अतः यह पता चलता है कि मनुष्य के पास जीवित रहने और संस्कृति को एक सार्वभौमिक घटना बनाने के लिए व्यस्त रहने और उपकरण बनाने की एक समान क्षमता है। यद्यपि, समय के साथ–साथ और प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों के संपर्क में आने के उपरांत कुछ समाजों ने तीव्र गति से प्रगति की है।

5.1.3 संस्कृति अनुवांशिक रूप से प्राप्त नहीं होती

किसी भी समाज के बच्चों में संस्कृति, जैविक या अनुवांशिक रूप से उसके माता–पिता से संचालित नहीं होती है। संस्कृति, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे अधिगम और प्रतीकों को समझने के माध्यम से अर्जित किया जाता है। आइए एक उदाहरण से इसे समझने की कोशिश करते हैं। अगर कोई भारतीय मूल का बच्चा जापान में किसी जापानी युगल द्वारा पाला–पोसा जाता है तो ऐसी स्थिति में वह बच्चा जो भाषा बोलना सीखेगा वह जापानी होगी और वह जापानी परंपराओं को सीखेगा तथा वह उन परंपराओं का हिस्सा बन जाएगा। हालांकि, यदि भारतीय माता–पिता द्वारा भारत में उसी बच्चे को पाला–पोसा जाता है तो वह बच्चा किसी भारतीय भाषा और संस्कृति को सीख लेगा इस प्रकार संस्कृति का अर्थ व्यवहार को सीखना है और इसे अनुवांशिक रूप से प्राप्त नहीं किया जाता है, यह विरासत में मिलती है। और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सीखने और प्रतीकों के माध्यम से हस्तांतरित की जाती है जिसमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

5.1.4 संस्कृति स्थिर होती है फिर भी गतिशील होती है

संस्कृति को जीवन के तरीके और समाज में रहने वाले लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी या रोजमर्रा की गतिविधियों के रूप में वर्णित किया गया है। संस्कृति का मूल आधार बदलता नहीं है। उदाहरण स्वरुप परिवार, विवाह, धर्म आदि जैसे संस्थान सभी समाजों के हिस्सा है और भी लंबे समय से बने हुए हैं। हमारे मूल्यों, मानदंडों, विश्वासों और नैतिकता में शायद ही कभी बदलाव आता है और यह भी धीमी–धीमी गति से बदलते हैं, इस प्रकार संस्कृति स्थाई बनती है। हालांकि, वह स्थिर नहीं होती है। यद्यपि संस्कृति संक्रमण, प्रसार, प्रवास आदि ऐसी बातें हैं जिसकी वजह से हमारी संस्कृति में बदलाव आता है और यह सब इससे गतिशील बनाते हैं। उदाहरण के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों के भारत में आगमन के साथ भारतीय समाज की कार्य संस्कृति में अत्यधिक बदलाव हुआ है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में कॉल सेंटर खोले हैं जहां काम के घंटे अधिकतर रात की शिफ्ट के रूप में ही है क्योंकि उनके ग्राहक भारत से बाहर के हैं, जैसे कि, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन का समय अलग अलग है। यह एक नया सांस्कृतिक पहलू है जो कि भारतीय समाज में पहले नहीं था। इस प्रकार हाल के दिनों में सप्ताह के अंत में कहीं बाहर भोजन करना लगभग सभी परिवारों के लिए आदर्श का सूचक बन गया है, जिसे परिवार के साथ समय बिताना कहा जाता है। जिसमें परिवार आमतौर पर किसी शॉपिंग मॉल में जाता है और ज्यादातर समय खरीदारी में व्यतीत करता है या खेलने कूदने में समय बिताता है अथवा फिल्म देखता है और रेस्तरां आदि में भोजन करता है। हालांकि कुछ वर्ष पहले तक सप्ताह के अंत के दौरान पूरा परिवार घर का बना हुआ भोजन ही खाता था। जहां पर पूरा परिवार डाइनिंग टेबल के पास एकत्रित होता था और अपने विचारों और अनुभवों को साझा करता था अथवा पिकनिक के लिए जाता था। हम यहां पर भी यह देखते हैं कि परिवार की अवधारणा सप्ताह के अंत में एक साथ होने के कारण है पर अंतर यह है कि केवल मिलने का जगह बदल गयी है। इसका एक दूसरा उदाहरण विवाह समारोहों का हो सकता है जहां आज बैचलरेट पार्टी भारतीय विवाह समारोहों का एक हिस्सा बन गए हैं और यह अवधारणा पश्चिमी दुनिया से अपनाई गई है। हालांकि शादी के दौरान हिंदू रीति–रिवाजों का पालन किया जाता है, जिससे परंपरा और संस्कृति का संरक्षण होता है। उपयुक्त उदाहरण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि संस्कृति, इस अर्थ में स्थिर होती है क्योंकि वह अपनी जड़ों से जुड़ी रहती है, फिर भी मौजूदा संस्कृति हेतु नवीन

पहलुओं और घटकों में परिवर्तन करने की अनुमति देता है तथा इस प्रकार संस्कृति गतिशील होती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. यह किसने कहा है कि मनुष्य उपकरण का उपयोग करने या बनाने वाला जीव है?

....

....

....

....

2. संस्कृति की किस विशिष्ट पहलू को मानव संस्कृति और संचार का माध्यम माना जाता है?

....

....

....

3. किसने संस्कृति में सार्वभौमिकता को मानव जाति की मानसिक एकता के रूप में संदर्भित किया है?

....

....

....

4. क्या संस्कृति मानव समाज में एक सार्वभौमिक घटना है?

....

....

....

5. क्या संस्कृति कोई अर्जित व्यवहार है अथवा यह अनुवांशिक रूप से प्रसारित होती है?

....

....

....

6. क्या संस्कृति गतिशील होती है, संस्कृति परिवर्तन के जिम्मेदार कौन–कौन से कारक हैं?

....

....

....

5.2 संस्कृति की परिभाषाएं

आइए इस अनुभाग को सर एडवर्ड बी. टायलर की दी हुई संस्कृति की अवधारणा से समझने के साथ शुरू करते हैं जो उन्होंने 1871 में प्रकाशित अपनी पुस्तक प्रिमिटिव कल्चर में दिया है। उन्हें सामाजिक मानव विज्ञान का जनक माना जाता है जिन्होंने सर्वप्रथम ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सामाजिक मानव विज्ञान में प्रोफेसर पद पर आसीन हुए और उनका मुख्य योगदान समाजों और संस्कृतियों के विकास की अवधारणा के बारे में था। टायलर ने यह कहा है कि संस्कृति वह सभ्यता वह जटिल तंत्र है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता ,कानून, रीति–रिवाज और समाज के सदस्य के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित की गई दूसरी क्षमताएं शामिल होती हैं। (टायलर 1871 पुनः मुद्रित)। संस्कृति संबंधी इस परिभाषा में कुछ महत्वपूर्ण पहलू है जो हैं– जटिल तंत्र, अर्जित क्षमता और समाज के सदस्य के रूप में सहभागिता ।

अतः जटिल तंत्र का क्या अर्थ है। यहां हम यह कह सकते हैं कि संस्कृति में इसके कई गुण समाहित होते हैं जिसमें मूर्त और अमूर्त पहलू, भौतिक और गैर–भौतिक पहलू भी शामिल होते हैं। मूर्त पहलू वे होते हैं जिन्हें हम अपनी आंखों से देख सकते हैं जैसे कि, वस्त्र पैटर्न ,भोजन की आदतें, जन्म, विवाह और मृत्यु संबंधी अनुष्ठान। उदाहरण के लिए यदि हम लोगों के पारंपरिक वस्त्र पैटर्न को देखते हैं तो हम उनकी सांस्कृतिक जड़ों की पहचान कर सकते हैं जैसे कि साड़ी पहनी हुई कोई महिला भारत की ही होगी। कोरियाई या जापानी महिला क्रमशः हैनबोक और किमोनो ही पहनेगी । इसी प्रकार अलग–अलग संस्कृति के लोगों की खाने की आदतें भी अलग–अलग होती हैं। भारत के उत्तर–पूर्व, पूर्वी और दक्षिणी हिस्सों में भारतीय लोग अपने हाथों से खाना खाते हैं जबकि, अमेरिका और यूरोपीय के लोग खाने पीने के लिए चम्मच, कांटे और चाकू आदि का इस्तेमाल करते हैं। जबकि चीन, जापान और कोरिया के लोग इस उद्देश्य के लिए चॉपस्टिक का उपयोग करते हैं। अमूर्त–पहलू में ज्ञान, मूल्य, नैतिकता, विचार, विश्वास और रीति–रिवाज होते हैं जिन्हें हम अपनी आंखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन इन्हें हमारे व्यवहार जैसे कि प्रौद्योगिकी, रचनात्मक गतिविधियों आदि में आसानी से देखा जा सकता है।

भौतिक और अभौतिक– संस्कृति के विस्तृत पहलुओं को प्रकृति और संस्कृति अनुभाग के अंतर्गत समझा जाएगा।

दूसरी विशेषता अर्जित क्षमताओं की है, जो यह बताती है की संस्कृति जैविक रूप से विरासत में प्राप्त नहीं होती है अपितु, मानव द्वारा उसे अर्जित किया जाता है। जैसा कि अनुभाग 5. 2.3 में बताया गया है। संस्कृति मानव व्यवहार का सीखा हुआ पहलू है। संस्कृति, मौखिक परंपरा माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित की जाती है जिसका मुख्य साधन भाषा और प्रतीक होते हैं लेकिन यह अनुवांशिक रूप से विरासत में प्राप्त गुण नहीं होते है।

टायलर की परिभाषा की तीसरे घटक के अंतर्गत यह बताया गया है कि समाज के सदस्य के रूप में संस्कृति को सीखा जाता है। इस प्रकार संस्कृति को सीखने के लिए समाज का हिस्सा बनना जरूरी होता है। यहां पर हम टार्जन और मोगली जैसे काल्पनिक पात्रों को देख सकते हैं जो कि अपने आप में मानव बच्चे थे, वो जंगल में खो गये थे और जिनका भेड़ियों और अन्य जंगली जानवरों द्वारा पालन–पोषण किया गया था। इन बच्चों ने लोमड़ी की भांति शिकार करना सीख लिया और और बंदरों की तरह एक पेड़ से दूसरी पेड़ पर झूलना भी सीख

लिया तथा लोमड़ी और सियार की तरह रोना भी सीख गए। हालांकि, उन्होंने इंसानों की तरह भाषा बोलना नहीं सीखा या उन गुणों को नहीं सीखा जो कोई बच्चा दूसरे मनुष्यों की संगत में सीखता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं की संस्कृति को सीखने के लिए मानव समाज का हिस्सा बनना जरूरी है। संस्कृति को अलग–थलग रहकर नहीं सीखा जा सकता है।

हर्सकोविट्स की परिभाषा के अनुसार संस्कृति मानव अस्तित्व की संपूर्ण सेटिंग के उस हिस्से को संदर्भित करती है जिसमें मानव निर्माण की सामग्री, तकनीक, सामाजिक अभिविन्यास विचारधारा और स्वीकृत परिणाम की भौतिक वस्तुएं शामिल होती है जो कि, अपने आप में तत्काल कंडीशनिंग के कारक अंतर्निहित व्यवहार होते हैं अथवा सामान्य शब्दों में इसका तात्पर्य यह है कि संस्कृति, पर्यावरण का मानव निर्मित हिस्सा है। (हर्सकोविट्स 1955, पुनर्मुद्रण:1958) इस परिभाषा में मानव और प्रकृति के अंतर संबंध के बारे में उल्लेख किया गया है और इस बात पर बल दिया गया है कि मानव अपने दिन–प्रतिदिन के कार्यों के लिए किस प्रकार प्रकृति पर निर्भर है। इसमें उन सभी बातों को शामिल किया गया है जिससे मानव अपने रोजमर्रा के जीवन यापन के लिए प्रकृति में उपलब्ध सामग्रियों का निर्माण और उपयोग करता है। आइए इस संबंध में भारत के उत्तर पूर्वी भाग में रहने वाले लोगों के जीवन में बांस के पेड़ की उपयोगिता का उदाहरण को देखते हैं। आधुनिकीकरण और भूमंडलीकरण आने से पहले उत्तर–पूर्वी राज्यों के लोगों की जीवनशैली में बांस मुख्य आधार था। बांस मनुष्य के जीवन में जीवन चक्र की प्रक्रिया का एक हिस्सा था जिसका उपयोग गर्भनाल को काटने के लिए किया जाता था, जो जन्म के समय मां और बच्चे को अलग करता था और इसका उपयोग मरने के बाद चिता निर्माण में भी किया जाता था। बांस की कंटेनरों यानी की फोफियों का उपयोग पानी के भंडारण तथा चावल और मांस जैसे भोजन को पकाने, दही जमाने आदि के लिए किया जाता था और इसकी कोंपलों का भी इस्तेमाल आचार बनाने के लिए किया जाता था। जबकि स्प्लिट बांस को खेतों में सिंचाई के लिए पानी ले जाने के लिए पाइप के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इस प्रकार इस उदाहरण से हम भौतिक संस्कृति के पहलुओं में से एक पहलू को देखते हैं कि रोजमर्रा की जिंदगी में पर्यावरण के किसी उत्पाद का उपयोग किस प्रकार किया जाता है।

भारतीय संस्कृति के अंतर्गत उन सभी पहलुओं को सम्मिलित किया गया है जो मूर्त होते हैं और प्रकृति के किसी ना किसी पहलू का उपयोग करके बनाए जाते हैं। किसी विशेष समाज की भौतिक संस्कृति का संबंध उसके पर्यावरण से होता है। उदाहरण स्वरुप, आर्कटिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों के घर बर्फ से बने होते हैं जो प्रकृति में उपलब्ध एकमात्र सामग्री होती है जिससे 'इग्लू' कहा जाता है। इसके विपरीत वनों में रहने वाले लोगों का घर या तो लकड़ी या बांस का बना होता है जो जंगल में आसानी से उपलब्ध होते हैं और बहुत से लोग मिट्टी और पुआल का उपयोग करके भी अपने घर को बनाते हैं। यह सब स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध सामग्री हैं हालांकि वर्तमान समय में मिट्टी और लकड़ी से बने अधिकांश घरों को प्रतिस्थापित करके उनके स्थान पर सीमेंट और कंक्रीट के पक्के घर बनाए जा रहे हैं।

घर के निर्माण में या जानवरों के शिकार के लिए कोई उपकरण बनाना अथवा वर्तमान युग के बारे में बात करना जिससे मनुष्य अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उपयोग करता हैं वह सब गैर–भौतिक संस्कृति का हिस्सा हैं। संस्कृति के वे पहलू जिसे हम अपनी आंखों से प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते हैं या जिन्हें हम छू नहीं सकते हैं लेकिन जो हमारी गतिविधियों में साफ तौर पर दिखाई देते हैं उसे गैर–भौतिक कहा जाता है जैसे कि विचार, ज्ञान, मूल्य, विश्वास, मानदंड संबंधी संस्कृति जो कि समाज का अभिन्न अंग है।

आइए अब संस्कृति की कुछ अन्य परिभाषाएं को देखें और समझें। संस्कृति, जैविक एवं व्युत्पन अवस्थाओं को पूरा करने का सहायक यथार्थ है। यह उपभोक्ता वस्तुओं के रूप मे प्रत्यय (अवधारणा), शिल्प, विश्वास और प्रथाओं में निहित सामग्री है जो स्वभाविक विशेषताओं को विभिन्न समाजिक समूहों की समकालिन पूर्णता में प्राप्त होती है। (मालिनोव्स्की,1944:1)

...*सामान्यता वर्णनात्मक अवधारणा के रूप में संस्कृति का तात्पर्य है, मानव रचना का संचित खजाना जैसे कि पुस्तकें, चित्रकारी, भवन आदि। हमारे वातावरण और व्यक्ति दोनों को समायोजित करने के तरीकों से जुड़ा हुआ ज्ञानः जैसे की भाषा, रीति–रिवाज और शिष्टाचार, आचरण, धर्म और नैतिकता की प्रणालियां जो युगों से बनती आई हैं।* (क्लूखोन और कैली, 1945: 78)

संस्कृति में मुख्य रूप से प्रतीकों द्वारा सोचने, महसूस करने और प्रतिक्रिया करने, अधिग्रहित और संचरित करने के तरीके शामिल हैं, मानव समूहों की विशिष्ट उपलब्धियों का निर्माण, कलाकृतियों में उनके अवतार सहित, संस्कृति के आवश्यक मूल में पारंपरिक (यानी ऐतिहासिक रूप से व्युत्पन्न और चयनित) विचार और विशेष रूप से उनके संलग्न मूल्य शामिल हैं (क्लूखोन,1951:86)

अपनी प्रगति की जांच करे

7. ई.बी. टायलर की उस प्रसिद्ध कृति का नाम बताएं जिसमें उन्होंने संस्कृति की अवधारणा और परिभाषा दी है?

....

....

....

8. संस्कृति के मूर्त पहलू कौन से होते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करें?

....

....

....

9. संस्कृति के अमूर्त पहलू कौन से होते हैं?

....

....

....

10. संस्कृति का पर्यावरण से क्या संबंध होता है?

....

....

....

....

5.3 संस्कृति की अवधारणाएं

5.3.1 संस्कृतिकरण और समाजीकरण

प्रतीकों के माध्यम से संस्कृति के प्रचार–प्रसार के दौरान माता–पिता द्वारा अपने बच्चों को सीख देने में भी संस्कृतिकरण और समाजीकरण की प्रक्रिया होती है। संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई बच्चा अपने माता–पिता और परिवार के तत्काल सदस्य जैसे कि, भाई–बहन दादा–दादी और पालन–पोषण करने वाले से सीधे तौर पर अपनी संस्कृति के तरीकों और शिष्टाचार, आदतों तथा अन्य संस्कार को सीखता है और उसे अपने जीवन में अपनाता है तथा उन्हीं के आधार पर अपनी भूमिका का निर्वहन करता है। एक प्रक्रिया के रूप में संस्कृतिकरण पहले घर से ही किसी बच्चे की प्रारंभिक चरण के दौरान शुरू होता है और फिर उसे विद्यालय जैसे सार्वजनिक स्थान पर औपचारिक शिक्षा के लिए भेजा जाता है। हम धर्म के बारे में विश्वासों, आदतों, शिष्टाचार और अन्य सांस्कृतिक रूप से उचित व्यवहार अपने माता पिता, भाई बहन और बुजुर्गों जैसे कि दादा–दादी, नाना–नानी से सीखते हैं। इसके विपरीत समाजीकरण की प्रक्रिया सीखने का ऐसा तरीका है। जिसमें समाज अपने सदस्यों को एकीकृत करता है और जिसमें कोई व्यक्ति समाज के अनुकूल होना सीखता है, और यह ठीक उसी समय शुरु होता है जैसे ही कोई बच्चा, समाज के दूसरे सदस्यों के संपर्क में आता है। उदाहरण के रूप में, उसके माता–पिता के अतिरिक्त स्कूल के शिक्षक और सहकर्मी समूह और पारिवारिक मिलन में चाचा–ताऊ आदि समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत बच्चे को समाज में अपनी भूमिका अदा करने में सक्षम बनाते हैं।

5.3.2 सांस्कृतिक विशेषता, सांस्कृतिक संकुल और सांस्कृतिक क्षेत्र

सांस्कृतिक विशेषता को संस्कृति के सबसे छोटी इकाई के रूप में पहचाना जा सकता है और इसे परिभाषित किया जा सकता है। क्रोबर ने, सांस्कृतिक विशेषता (ट्रेट) को संस्कृति की सूक्ष्म और पहचाने जाने योग्य तत्व के रूप में परिभाषित किया है। उदाहरण के लिए जैसा कि, हर्सकोविट्स ने 1949 में *मैन एंड हिस वर्क्स* में वर्णन किया है और एक कुर्सी का उदाहरण दिया है जिसकी सांस्कृतिक विशेषता की पहचान की जा सकती है। कोई कुर्सी, लिविंग रूम की कुर्सी भी हो सकती है या वह अध्ययन कक्ष अथवा भोजन कक्ष की कुर्सी भी हो सकती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि डाइनिंग टेबल या स्टडी टेबल अपने आप में संस्कृति का एक हिस्सा है। हालांकि, सांस्कृतिक विशेषता के रूप में कुर्सी संस्कृति का एक जटिल भाग है सा उस समय बन जाती है जब इसे अन्य विशेषताओं के साथ वृहद संदर्भ में पहचाना जाता है। जैसे कि, फर्श के स्थान पर किसी ऊंचे स्थान पर बैठने की प्रथा, एक मेज पर खाने की आदत और पद गरिमा से संबंधित उद्देश्य के लिए बैठने की मुद्रा तथा विभिन्न प्रकार की कुर्सी का उपयोग करना, किसी व्यक्ति के स्तर को दर्शाता है। यह पदानुक्रम की अवधारणाओं तथा समाज में किसी की स्थिति और भूमिका के अंतर से भी संबंधित हो सकता है। कुर्सी की भांति यह सभी लक्षण, खाने की आदतें, बैठने की प्रथा और यहां तक की अमूर्त धारणाएं जैसे–पदानुक्रम, एक साथ किसी संस्कृति को जटिल बना देते हैं।

हालांकि, जब हम संस्कृति के कुछ बातों की जांच करते हैं तो सबसे छोटी इकाई की पहचान करना बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि सबसे छोटी इकाई भी एक संस्कृति संकुल हो सकती है। उदाहरण स्वरुप, यदि हम निवास स्थान को लेते हैं तब एक संस्कृति संकुल के रूप में कोई घर जिसमें उसके अलग–अलग भाग या कमरे होते हैं जिन्हें अलग–अलग स्थानों में

बांटा जाता है। जैसे कि रहने का क्षेत्र, जहां अतिथि का मनोरंजन किया जाता है, भोजन करने का स्थान जहां परिवार या मेहमान एक साथ भोजन करते हैं, शयनकक्ष जो सोने के लिए होता है और जो निजी स्थान होता है ,रसोईघर जहां भोजन बनता है आदि। यह कहा जा सकता है कि कुर्सियों के साथ खाने की मेज वास्तव में एक सांस्कृतिक विशेषता के स्थान पर एक सांस्कृतिक संकुल ही है। इसी प्रकार कुर्सियों को भोजनकक्ष से हटाया जा सकता है और उनका ड्राइंग रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है और वह भी उस स्थिति में जब मेहमानों की संख्या उस स्थान पर उपलब्ध कुर्सियों अथवा सोफे की संख्या से अधिक हो। इस प्रकार किसी सांस्कृतिक विशेषता और सांस्कृतिक परिसर का स्पष्ट अंतर करना संभव नहीं है। इन सभी इकाइयों को पुनः व्यवस्थित किया जा सकता है।

संस्कृति क्षेत्र को केवल और केवल उस क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें एक समान संस्कृतियां पाई जाती हैं। यहां पर क्षेत्र भौगोलिक स्थिति को दर्शाता है उदाहरण स्वरूप, हम मकर संक्रांति के उत्सव कोई भी ले सकते हैं (यह मकर राशि में सूर्य के पारगमन के पहले दिन को दर्शाता है जो जनवरी के महीने में सर्दियों के अंत और संक्रांति से बड़े दिन की शुरुआत को दर्शाता है) जिसे भारत के अनेक राज्यों में मनाया जाता है। इस त्यौहार को तमिलनाडु में पोंगल ,असम में माघ बिहू ,पंजाब में लोहड़ी के नाम से जाना जाता है। यह त्योहार फसलों की कटाई से जुड़ा हुआ है और भारत में जहां अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है, इस त्यौहार को बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। हालांकि, भाषा और विशेषताओं के मामले में राज्यों में क्षेत्रीय भिन्नताएं हैं फिर भी हम इन सब में एक समान संस्कृति को देखते हैं। आजकल अभी भी यह एक क्षेत्रीय संस्कृति के रूप में अधिक व्यापक तौर पर अवधारणा के रूप में विद्यमान है। संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा को क्लार्क विसलर द्वारा और बाद में क्रोबर द्वारा अपनी अपनी कृतियों में व्यवस्थित रूप से व्यवहार में लाया गया ।

5.3.3 संस्कृति के पैटर्न

इससे पहले अनुभाग में हमने सांस्कृतिक विशेषताओं के सार्वभौमिकता के बारे में चर्चा की है। हालांकि, प्रतीक संस्कृति में इसकी अभिव्यक्ति में एक पैटर्न उभरकर सामने आता है। इस बारे में आइए हम विवाह का एक उदाहरण लेते हैं, जो की सार्वभौमिक है। हालांकि, प्रतीक संस्कृति के अनुष्ठानों को निभाने के संदर्भ में अंतर होता है। ईसाईयों का विवाह किसी चर्च में होता है जहां पर पादरी अनुष्ठानों को करता है। जबकि मुस्लिम विवाह में काजी निकाह अर्थात अनुबंध विवाह को करवाता है जबकि, हिंदू विवाह में पंडित यानी पुजारी अनुष्ठान करते हैं। इस प्रकार हम यह देखते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में पैटर्न भिन्न–भिन्न होते हैं। रूथ बेनेडिक्ट ने युद्ध के जापानी कैदियों का अध्ययन करते समय उनके व्यवहार में पैटर्न को व्यवस्थित और एकीकृत किया और इस प्रकार इसे राष्ट्रीय चरित्र के रूप में संदर्भित किया। इस प्रकार उन्होंने संस्कृतियों को रीति–रिवाजों तथा मान्यताओं के संग्रह के रूप में वर्णित किया जो एकीकृत पैटर्न वाली प्रणालियां है।

अपनी प्रगति की जांच करें

11. संस्कृतिकरण से क्या तात्पर्य है?

    ....

    ....

    ....

12. समाजीकरण को परिभाषित करें।

....

....

....

13. सांस्कृतिक विशेषता क्या होती है?

....

....

....

14. सांस्कृतिक संकुल को परिभाषित करें।

....

....

....

15. सांस्कृतिक क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

5.4 संस्कृति परिवर्तन के तंत्र

पूर्व के अनुभाग में हमने यह सीखा है की संस्कृति सार्वभौमिक होती है। हमने उन प्रक्रियाओं के बारे में भी चर्चा की है जिनके द्वारा संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ाया जाता है। इस अनुभाग में हम उन विभिन्न प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करेंगे जिनके द्वारा संस्कृतियां परिवर्तित होती हैं।

5.4.1 प्रसार

प्रसार (Diffusion) का तात्पर्य मूल रूप से दूसरी संस्कृतियों से कुछ ग्रहण करना होता है। जब दो भिन्न–भिन्न संस्कृतिया एक दूसरे के संपर्क में आती हैं तो इससे सूचना, विचारों और उत्पादों आदि का आदान–प्रदान होता है। यही नहीं यात्रा करते समय भी लोग अपने साथ विशेशताओं को ले जाया करते हैं। प्राचीन समय से ही आवागमन होता रहा है और बड़ी संख्या में लोग दुनिया भर में यात्राएं करते रहे हैं। इस प्रकार प्रवास को किसी संस्कृति में परिवर्तन लाने वाले प्रारंभिक माध्यमों में से एक माध्यम माना जा सकता है। प्रसार, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हो सकता है और यह मजबूरन अर्थात जबरदस्ती भी हो सकता है। व्यापार, विवाह अथवा यहां तक कि युद्धों के द्वारा भी दो संस्कृतियों के बीच संपर्क से प्रत्यक्ष प्रसार होता है। इस प्रकार की स्थिति में यदि दोनों संस्कृतियों सौहार्द पूर्वक आदान–प्रदान करती हैं तो इसे प्रत्यक्ष प्रसार कहा जाता है। हालांकि, ज्यादातर युद्धों के मामले में जीतने वाले समूह यथार्थ प्रमुख समूह अपनी संस्कृति को हारने वाले समूह यानी पराजित होने वाले

समूह पर थोपते हैं और उसकी संस्कृति को प्रभावित करते हैं जिसे जबरदस्ती यानी मजबूरन प्रसार के रूप में जाना जाता है। अप्रत्यक्ष प्रसार उस समय होता है जब वस्तुओं और विशेषताओं का अप्रत्यक्ष रूप से एक समूह से दूसरे समूह में आवागमन होता है और वह भी किसी मध्यस्थ के माध्यम से। उदाहरण के लिए, सर्दियों के दिनों में हिमालय पर्वत श्रृंखला की भोटिया जाति के लोग असम के बाजारों में अपने उत्पादों को बेचने के लिए नीचे उतरते हैं और इस प्रक्रिया के अंतर्गत भोटिया और असमिया संस्कृति के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान होता है। आज की मास मीडिया और इंटरनेट तकनीकी युग में अधिकांश सांस्कृतिक आदान–प्रदान अप्रत्यक्ष रूप से आभासी दुनिया में प्रत्यक्ष संपर्क के बगैर ज्ञान और सूचना के साझा करण के माध्यम से हो रहा है।

5.4.2 सांस्कृतिक संक्रमण

दो समूहों के बीच निरंतर प्रत्यक्ष संपर्क के कारण सांस्कृतिक विशेषताओं के आदान–प्रदान को संस्कृति संक्रमण (Acculturation) के रूप में जाना जाता है। (रेडफील्ड, लिंकन और हर्सकोविट्स 1936) इस संपर्क द्वारा दोनों प्रकार के समूहों की संस्कृतियों को बदला जा सकता है। इसके लिए किसी मिली–जुली भाषा का विकास, जो कि विभिन्न संस्कृतियों को आपस में संपर्क करने में सहायता करती है, उसे पिडगिन के रूप में जाना जाता है जो कि संस्कृति संक्रमण की प्रक्रिया है। उदाहरण स्वरुप, तमिलनाडु में अरब के लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले व्यापार मार्गों के कारण एक नई बोली अरबी–तमिल अस्तित्व में आई जो की अरबी भाषा और तमिल भाषा का मिश्रण थी। (पांडियन 1995) इसी प्रकार 'नागमी' एक भाषा है जो कि अपने आप में नागा और असमिया शब्दों का मिश्रण है। इस प्रकार संस्कृति संक्रमण, सांस्कृतिक जीवन के दूसरे पहलुओं में हो सकते हैं। उदाहरण के लिए नागालैंड में ईसाई धर्म का प्रभाव शादी समारोह के संदर्भ में देखा जा सकता है। जहां, कई शादियां चर्च में दुल्हन द्वारा सफेद ब्राइडल गाऊन में होती है ना कि उनके पारंपरिक नागा वेशभूषा में। वहीं दूसरी ओर पारंपरिक विवाह समारोह अभी तक उनकी अपनी संस्कृति के हेडबैंड की भांति कोई प्रतीक चिन्ह पहनकर होते थे। इन इलाकों में इसाई धर्म और उसके प्रकार को एक धर्म के रूप में और जीवन के तरीके के रूप में अपनाया गया और नागाओं की स्थानीय परंपराओं का उसे हिस्सा बनाया गया।

5.4.3 सम्मिलन

सम्मिलन (Assimilation) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अथवा समूह अधिकतर आदतें, शिष्टाचार और तरीकों को सीखता है और किसी मौजूदा समूह जैसा ही दिखने लगता है। उदाहरण स्वरुप यहां पर हम असम के ब्राह्मणों के बारे में विचार कर सकते हैं, जो मूल रूप से कन्नौज और अन्य पूर्वी और उत्तरी क्षेत्रों से अहोम शासन के दौरान वहां चले गए। असम के ब्राह्मण, असमिया भाषा बोलते हैं और उनके जीवन से जुड़े हुए रस्म और रीति–रिवाज जैसे की शादी में असमिया रीति–रिवाजों का पालन होता है और वे असमी पोशाक पहनते हैं। वे लोग मांसाहारी हैं और मछली अधिक खाते हैं जबकि भारत के अन्य भागों के ब्राम्हण शुद्ध शाकाहारी हैं। वर्तमान भूमंडलीय विश्व के संदर्भ में विदेशों में रह रहे भारतीयों और भारत में रह रहे भारतीयों में भी पश्चिमी दुनिया की कई संस्कृतियों को आत्मसात करते हुए देखा जा सकता है। फूड स्पेस एक विशेषता है जहां बहुत अधिक भिन्नता देखी जाती है जैसे कि बर्गर,पिज्जा आदि फास्ट फूड आने से अब भारतीय आहार का हिस्सा बन चुके हैं। यहां हम यह देखते हैं कि पहले मामले में बाहरी ब्राह्मण असम की स्थानीय

परंपरा का हिस्सा बन गए जबकि दूसरे मामले में विदेशी भोजन को भारतीय परंपरा का अंग बनाया गया।

अपनी प्रगति की जांच करें

16. सांस्कृतिक परिवर्तन लाने वाले विभिन्न कारकों का उल्लेख करें।

....

....

....

17. प्रसार को परिभाषित करें और विभिन्न प्रकार के प्रसार का नाम बताएं।

....

....

....

18. संस्कृति संक्रमण से क्या तात्पर्य है।

....

....

....

19. सम्मिलन को परिभाषित करें।

....

....

....

5.5 सांस्कृतिक सापेक्षवाद और प्रजातिकेंद्रिकता

अन्य संस्कृतियों का अध्ययन करने और समझने के दौरान दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं उभर कर सामने आई हैं जिन्हें हम प्रजातिकेंद्रिकता और सांस्कृतिक सापेक्षवाद के रूप में जानते है। संस्कृति के संदर्भ में प्रारम्भिक अध्ययनों में विशेषकर यूरोपीय लेखक शामिल थे, जिनकी सामान्य प्रवृति अपनी संस्कृति के आधार पर उस संस्कृति को आंकने की थी जिसका अध्ययन वे कर रहे होते थे। उनका ऐसा आचरण आदिवासी और प्रारंभिक समाजों के बारे में अधययन कार्य करते समय निर्मित हुआ। जिसमें ऐसे समाजों को 'अजीबो–गरीब' अथवा 'बाहरी' के रूप में देखा जाता है जिन्हें किसी के अपने समाज में ही 'सामान्य' होने से अलग–थलग प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार की अवधारणाओं और विचारों ने विकासवादी सिद्धांत को विकसित करने में सहायता की जो उस समय बहुत अधिक उपयोग में थी। इस पहलू को प्रजातिकेंद्रिकता का नाम दिया गया और इसे समाजशास्त्री विलियम ग्राहम सुमनेर ने 1906 में प्रकाशित अपनी किताब *फोकवेज* में लिखा है जिसमें उन्होंने यह कहा है कि 'प्रजातिकेंद्रिकता का अर्थ यह है कि 'किसी की संस्कृति और जीवन जीने का तरीका दूसरों से श्रेष्ठ है'।

19वीं शताब्दी में अमेरिकी मानवविज्ञानी फ्रांज बॉआस ने सांस्कृतिक सापेक्षवाद अथवा सांस्कृतिक निर्धारणवाद के दृष्टिकोण को चित्रित किया जो अपनी संस्कृति के दृष्टिकोण से एक विशेष समूह के व्यवहार का अध्ययन करता है। इसके पीछे यह विचार था कि अपने संदर्भ और समय के संबंध में एक विशेष संस्कृति को देखा जाए। उदाहरण के लिए एक विशेष समाज में बहुपतित्व किसी शोधकर्ता के अपने समाज के लिए बाधा सा लग सकता है। हालांकि, इस प्रथा को आंकने के स्थान पर शोधकर्ता को उस समाज में इस प्रकार की प्रणाली की कार्य क्षमता को समझना होगा। जैसे कि, प्रत्येक समाज का अपना इतिहास और सांस्कृतिक विशेषता होती है जिसे सांस्कृतिक रूप से पूरी तरह से समझने की जरूरत होती हैय क्योंकि प्रत्येक समाज दूसरे से भिन्न होता है और उसके रीति–रिवाज संस्कृति के अन्य पहलुओं जैसे, पर्यावरण और जनसंख्या आदि पर निर्भर करते हैं। हालांकि, सांस्कृतिक सापेक्षवाद आलोचनाओं का अपना एक सेट होता है। यदि मानव अधिकारों के दृष्टिकोण से उसे देखा जाए तो हम पाएंगे कि कई समाजों में सांस्कृतिक प्रथाओं में अनेक मानव अधिकारों का उल्लंघन होता है। ऐसा ही एक उदाहरण कुछ समाजों में प्रचलित कन्या भ्रूण हत्या का मामला हो सकता है अथवा महिलाओं को विरासत में संपत्ति ना दिए जाने की प्रथा भी हो सकती है। इस तथ्य की नारीवादियो ने विशेष रूप से आलोचना की है कि अधिकांश संस्कृतियां परंपरा के नाम पर पितृसत्ता को प्रोत्साहित करती हैं।

5.6 सारांश

आइए, संक्षेप में हम इस इकाई में जिन बातों की चर्चा कर रहे हैं उसकी शीघ्र समीक्षा करते हैं। हमने इस इकाई में यह समझने की कोशिश की है कि मानवविज्ञानी संस्कृति का वर्णन किस प्रकार करते हैं और उसे क्या समझते हैं। मानव विज्ञानी के लिए संस्कृति किसी समाज की सीमाओं में रहने वाले लोगों के समूह के जीवन अनुभवों और व्यवहार को शामिल करती है। जिसमें उनकी आदतें, उनका ज्ञान, उनकी नैतिकता ,उनके मूल्य आदि शामिल होते हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक समाजीकरण और संस्कृतिकरण के माध्यम से सीखे जाते हैं और प्रसारित होते हैं। भाषा, संकेत और प्रतीक ऐसे माध्यम होते हैं जिनके द्वारा संस्कृति का प्रसार होता है। संस्कृति सीखा गया व्यवहार है, और यह अनुवांशिक रूप से विरासत में नहीं मिलती है। संस्कृति स्थिर होती है फिर भी वह गतिशील होती है क्योंकि यह स्वंय में प्रसार, संस्कृति संक्रमण और सम्मिलन के माध्यम से नए पहलुओं को अपने में जोड़ती रहती है।

5.7 सन्दर्भ

क्लीफोर्ड, जे. (1988). *द प्रेडिकमेंट ऑफ कल्चर.* लन्दनः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

गिर्ट्ज, सी. (1966). *द इम्पेक्ट ऑफ द कॉन्सेप्ट ऑफ कल्चर ऑन द कॉन्सेप्ट ऑफ मेन.* बुलेटिन ऑफ द एटॉमिक साइंटिस्ट्स, 22(4), 2–8. शिकागोः एजुकेशनल फाउंडेशन फॉर न्यूक्लियर साइन्स इंक.

हर्स्कोविट्स, एम. जे. (1949). *मेन एंड हिज वर्क्स, द साइन्स ऑफ कल्चरल एन्थ्रोपोलॉ*जी. न्यूयॉर्क:नॉफ पब्लिकेशन.

हर्स्कोवित्स, एम. जे. (1955). (1958 में पुनर्मुद्रित) *कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी.* नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड एवं आईबीएच पब्लिशिंग कंपनी

केली, डब्ल्यू. एच., एवं क्लक्होन, सी. (1945). *द कॉन्सेप्ट ऑफ कल्चर. द साइन्स ऑफ मेन इन द वर्ल्ड क्राइसिस*, 98. न्यू यॉर्कः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.

क्रोबर, ए. एल., एवं क्लक्होन, सी. (1952). *कल्चरः ए क्रिटिकल रिव्यू ऑफ कॉन्सेप्ट्स एंड डेफिनिशन्स.* पीबॉडी म्यूजियम ऑफ आर्कियोलोजी एवं एथ्नोलोजी, कैंब्रिज, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

ले वाइन, आर. ए., एवं कैम्पबेल, डी. टी. (1972). *एथ्नोसेंट्रिज्मः थ्योरीज ऑफ कॉन्फ्लिक्ट, एथ्निक एटिट्यूड्स, एंड ग्रूप बिहेवियर.* ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंडः जॉन वेली एंड संस.

मालिनोव्स्की, बी. (1944). *ए साइंटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर एंड अदर एस्सेज.* चेपेल हिल, एन.सी., यूएसरू यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ केरोलिना प्रेस

पांडियन, जे., (1995). *द मेकिंग ऑफ इंडिया एंड इंडियन ट्रेडिशन्स.* इंडिया: प्रेंटिस हॉल.

रेडफील्ड, आर., लिंटन, आर., एंड हेरस्कोविट्स, एम. (1936). "मेमोरेंडम फॉर द स्टडी ऑफ एकल्चेशन". *अमेरिकन एन्थ्रोपोलोजिस्ट*, 38(1). न्यू जर्सीः जॉन वेली एंड संस.

शेनन, एस., काउगिल, जी. एल., गॉस्डेन, सी., लाइमेन, आर. एल., ओ'ब्राइयेन, एम.जे., नेवेस, इ. जी., एंड शेनन, एस. (2000). "पॉप्युलेशन, कल्चर हिस्ट्री एंड द डाइनेमिक्स ऑफ कल्चर चेंज" *करंट एन्थ्रोपोलोजी*, 41(5), 811–835: न्यू यॉर्क, द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

स्टॉकिंग जेआर , जी. डब्ल्यू. (1966). "फ्रॅन्ज बोआस एंड द कल्चर कॉन्सेप्ट इन हिस्टॉरिकल पर्स्पेक्टिव". *अमेरिकन एन्थ्रोपोलोजिस्ट*, 68(4), 867–882. न्यू जर्सी : जॉन वाइली एंड संस.

समनर, विलियम ग्राहम. (1906). *फोकवेजः ए स्टडी ऑफ द सोशियोलॉजिकल इंपॉर्टेन्स यूसेज मैनर्स*, कस्टम्स, मोर्स एंड मॉरल्स. बोसटनः गिन एंड कंपनी.

टकर, टी. जी. (1931). *ए कन्साइस एटिमलोजिकल डिक्शनरी ऑफ लेटिन.* हेलेः निएमेएर.

टायलर, ई.बी. (1871). (पुनःमुद्रित 1958) *प्रिमिटिव कल्चर.* न्यूयॉर्क : हार्पर टॉर्चबुक्स.

वाइट, एल.ए. (1959). "द कॉन्सेप्ट ऑफ कल्चर". *अमेरिकन एन्थ्रोपोलोजिस्ट*, न्यू जर्सी : जॉन वी एंड संस 61(2), 227–251.

5.8 आपकी प्रगति जांचने हेतु उत्तर

1. ई. बी. टायलर
2. लैंग्वेज (भाषा)
3. ई. बी. टायलर
4. हाँ
5. संस्कृति व्यवहार सीखा जाता है और आनुवंशिक रूप से नहीं मिलता है, अधिक जानकारी के लिए खंड 5.1.3 को देखें।
6. हाँ, संस्कृति में बदलाव लाने वाली ताकतें इसे गतिशील बनाती हैं, ये हैं– उच्चारण, प्रसार, प्रवास आदि।

7. प्रिमिटिव कल्चर, 1871 में प्रकाशित ।

8. खंड 5.2 का दूसरा अनुभाग देखें ।

9. अमूर्त पहलू होते हैं – ज्ञान, मूल्य, नैतिकता, विश्वास, रीति–रिवाज आदि।

10. खंड 5.2 का दूसरा अनुभाग देखें।

11. खंड 5.3.1 को देखें ।

12. विस्तृत विवरण के लिए खंड 5.3.1 को देखें।

13. संस्कृति विशेषता को एक संस्कृति में सबसे छोटी पहचान योग्य इकाई के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

14. विस्तृत विवरण के लिए खंड 5.3.2 को देखें।

15. संस्कृति क्षेत्र को केवल उस क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें समान संस्कृतियां पाई जाती हैं।

16. प्रसार, उत्संस्करण एवं आत्मसात्करण

17. खंड 5.4.1 को देखें ।

18. दो समूहों के बीच निरंतर प्रथम संपर्क के कारण सांस्कृतिक विशेषताओं के आदान–प्रदान को संस्कृति संक्रमण के रूप में जाना जाता है। विस्तृत विवरण के लिए खंड 5.4.2 को देखें ।

19. खंड 5.4.3 को देखें ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 6 संस्था-I : नातेदारी, परिवार और विवाह

इकाई की रूपरेखा

6.0 प्रस्तावना

6.1 नातेदारी

6.1.1 नातेदारी का विचार

6.1.2 वास्तविक बनाम कल्पित नातेदारी

6.1.3 अनाचार निषेध

6.1.4 नातेदारी संबद्धता

6.1.5 वंशावली

6.2 परिवार

6.2.1 परिवारों के प्रकार

6.2.2 घर और परिवार

6.2.3 परिवार के कार्य

6.3 विवाह

6.3.1 विवाह का तात्पर्य

6.3.2 विवाह के प्रकार

6.3.3 विवाह किससे किया जाए

6.3.4 जीवनसाथी पाने के तरीके

6.4 सारांश

6.5 संदर्भ

6.6 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी निम्न बिन्दुओं की व्याख्या में सक्षम होंगे :

- नातेदारी की अवधारणा, संबंध और नातेदारी का पता किस प्रकार लगाया जाता है
- परिवार का गठन, विवाह के आधार पर विभिन्न प्रकार के परिवार और विवाह के उपरांत निवास के नियम और
- विवाह की धारणा, विभिन्न समाजों में प्रचलित विवाह के प्रकार, कुछ समाज में विवाह के निर्धारण के नियम जो विवाह को निर्धारित करते हैं।

6.0 प्रस्तावना

योगकर्ता : डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

प्रत्येक मनुष्य समाज से जुड़ा होता है। लोग अपने जन्म के आधार पर समाज के सदस्य बनते हैं। समाज के मानदंड और मूल्य मनुष्य के जीवन को आकार प्रदान करते हैं। इस इकाई में हम उन संबंधों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे जो हमारे मुख्य समूहों अर्थात नातेदारी, परिवार और विवाह का गठन करते हैं। कोई रिश्ता किस प्रकार आपस में भलीभांति जुड़ा होता है और हमारे जीवन को आकार प्रदान करता है इस बारे में इस इकाई में जानकारी प्राप्त करेंगे।

6.1 नातेदारी

6.1.1 नातेदारी का विचार

आप नातेदारी, परिवार और विवाह की मूल अवधारणाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी शादी समारोह में जाएं। यहां अपने उदाहरण के रूप में हम वर–वधू को ले सकते हैं। हम परिजनों के समूह और उन रिश्तो को पहले पहचान करेंगे जो किसी को जन्म से अथवा विवाह के बाद प्राप्त होते हैं। परिजन समूह की जानकारी महत्वपूर्ण होती है क्योंकि नातेदारी वह मूल सिद्धांत है जो कि यह निश्चित करता है कि व्यक्ति किसके साथ शादी कर सकता है और कौन इस सीमा से बाहर होता है। नातेदारी किसी परिवार में पीढ़ी, वंशावली, उत्तराधिकार, शक्ति और अधिकार के पैटर्न को भी निर्धारित करती है। नातेदारी के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले कुछ मूलभूत अवधारणाएं और शब्दावली के बारे में भी इस इकाई में चर्चा की जाएगी। वंशावली विधि जो परिवार रूपी वृक्ष अर्थात् फैमिली ट्री को आगे बढ़ाने में सहायता करती है उसके बारे में भी इस अनुभाग में समझाया जाएगा।

आइए विवाह के उदाहरण से हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि नातेदारी होती क्या है। किसी शादी में हम दो परिवारों को देखते हैं और वे परिवार होते हैं दूल्हे का परिवार और दुल्हन का परिवार। शादी में शामिल होने वाले सभी लोग सामान्यतः जन्म से या शादी से दोनों परिवारों में से किसी एक परिवार से जुड़े होते हैं। इन संबंधों को नातेदारी संबंधों के नाम से जाना जाता है। तब सवाल यह उठता है कि हम नातेदारी संबंध किस प्रकार प्राप्त करते हैं। नातेदारी संबंध को हासिल करने के मूल रूप से दो तरीके होते हैं, जिनमें से पहला तरीका जन्म होता है और दूसरा विवाह।

6.1.2 रक्त संबंध बनाम कल्पित नातेदारी

दूल्हा–दुल्हन को उदाहरण के रूप में लेते हुए आइए हम उनके नातेदारी संबंधों को समझने की कोशिश करते हैं। किसी दुल्हन के लिए उसके जन्म से ही संबंधी कौन लोग होते हैं? दुल्हन का परिवार अर्थात उसके माता–पिता और उसके भाई–बहन और उसके पैतृक और मात्री पक्ष के संबंध सगोत्रात्मक संबंध होते हैं। मानव वैज्ञानिक रूप से इन संबंधों को हम संवाहक संबंध कहते हैं। जबकि शादी के बाद दुल्हन के पारिवारिक संबंध पति की ओर से प्राप्त होते हैं और उसके ससुर, सास, देवर,ननद आदि विवाह से बनने वाले समृद्ध संबंध होते हैं। इसी प्रकार किसी दूल्हे के लिए उसकी पत्नी का परिवार उसके रिश्तेदार बन जाते हैं। जब हम खून के संबंधों के बारे में बात करते हैं तो सांस्कृतिक मान्यता की अवधारणा चलन में आती है और यह आवश्यक नहीं है कि ऐसे संबंध अनुवांशिक रुप से बने हो। किसी को गोद लेने अथवा किसी का पालन पोषण करने या सौतेले भाई–बहन आदि के संबंधों के मामले में यह संबंध सांस्कृतिक रूप से मान्यता प्राप्त खून के संबंध कहे जाते हैं। हालांकि, अनुवांशिक रुप से यह संबंध नहीं होते हैं। इन नातेदारी संबंधों को आमतौर पर वास्तविक नातेदारी के नाम से जाना जाता है।

दक्षिण भारत के नायर जैसे कुछ समाजों में जैविक और सामाजिक पिता एक ही व्यक्ति हो यह जरूरी नही है जैसा कि 'नाइडर एंड गफ' (1974) ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया है। नायर समाज की कोई महिला अपनी शादी के उपरांत संबंधम यानी संबंध बनाने के लिए मुक्त होती है। जब कोई नायर महिला गर्भवती होती है तो उसका पति या कोई और प्रेमी दाई को रकम देकर पितृत्व का दावा कर सकता है और सामाजिक पिता के रूप में पहचाना जा सकता है। मानव वैज्ञानिकों ने ऐसे मामलों के लिए माता–पिता के लिए दो प्रकार के पितृत्व में भेद किया है।

- जेनेटिक्स–सांस्कृतिक रूप से मान्यता प्राप्त जैविक मां
- मैटर–सामाजिक मां
- जेनिटर–सांस्कृतिक रूप से मान्यता प्राप्त जैविक पिता
- पैटर–सामाजिक पिता

आइए हम शादी के उदाहरण की ओर लौटते हैं। क्या यह बात सही होगी कि यदि हम यह कहें कि केवल खून के रिश्ते और शादी से प्राप्त हुए रिश्ते ही शादी में शामिल होने वाले लोग होते हैं। इस बात के बारे में सोचिए। लोगों के इन दो समूहों के अतिरिक्त एक और समूह होता है जो मित्रों पारिवारिक मित्रों के रूप में जाना जाता है जो किसी शादी समारोह में भाग लेता है। हालांकि लोगों की यह समूह खून के रिश्ते से सीधे नहीं जुड़े होते हैं पर वे कई प्रकार से हमारे दैनिक जीवन से घनिष्ठता पूर्वक जुड़े हुए होते हैं। उदाहरण स्वरुप ईसाई समाज में बैपेटिज्म समारोह के लिए अनुष्ठान प्रायोजक बनकर कोई भी बच्चे का गॉड पेरेंट बन सकता है। ईसाई धर्म में गॉड पेरेंट्स अपने मित्र के बच्चे की आध्यात्मिक शिक्षा–दीक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं। आवश्यकता की स्थिति में भी बच्चे को शिक्षित करने की भी जिम्मेदारी उठा सकते हैं। नातेदारी के संबंध में यहां यह प्रश्न उठता है कि हम उन्हें यानी गॉडपेरेंट्स को किस समूह में रखते हैं। इस प्रकार अर्जित संबंधों को काल्पनिक संबंध या काल्पनिक नातेदारी के नाम से जाना जाता है जो वास्तविक नातेदारी नहीं होती है फिर भी किसी के जीवन में ऐसी नातेदारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार के उदाहरण नारीवादी आंदोलन में 'सिस्टर्स' जैसी शब्दावली और दोस्तों के माता–पिता को 'अंकल' और 'आंटी' के रूप में संबोधित करने वाली शब्दावली होती है हालांकि यह रिश्ते खून के रिश्ते से संबंधित नहीं होते हैं।

6.1.3 अनाचार पाबंदी (निषेध)

नातेदारी का मूलभूत नियम दो श्रेणियों सगोत्रात्मक संबंध और आत्मीय यानि समृद्ध संबंध को अलग रखना है। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संबंधियों को विवाह से कभी भी नहीं जोड़ा जा सकता और इस मूलभूत नियम को अनाचार निषेध कहा जाता है। विवाह की दृष्टि से माता के साथ पुत्र का और पिता के साथ पुत्री का एवं भाई के साथ बहन के रिश्ते वर्जित माने जाते हैं। हालांकि इस नियम के अपराधों को मिस्र और हवाई में उस समय भी देखा गया है जब शाही परिवारों द्वारा अनाचार निषेध के नियम का पालन नहीं किया गया। वहां पर भाई–बहनों के बीच विवाह आदर्श इसलिए था ताकि सही खून की शुद्धता कायम रह सके। माता–पिता और बच्चों एवं भाई–बहनों की मूलभूत संबंधों के अतिरिक्त अनाचार वर्जन के नियमों में व्यापक विभिन्नता है। जैसे कि हिंदू समाज में कोई व्यक्ति अपने ही गोत्र में विवाह नहीं कर सकता है। गोत्र से तात्पर्य उन सदस्यों से है जो पुरुष पूर्वजों की एक सामान्य रेखा

से अपने स्वयं के वंश का दावा करते हैं। पति और पत्नी का गोत्र एक ही नहीं हो सकता है। यही नहीं उत्तर भारत में एक ही गांव में सदस्यों के बीच शादी नहीं हो सकती है।

6.1.4 नातेदारी संबद्धता

अब तक हमने यह जाना है कि नातेदारी या तो रक्त सबंध से या शादी से अर्जित की जाती है। किसी विशेष समाज द्वारा वंशावली के नियम, नातेदारी संबद्धता द्वारा तय किए जाते हैं। वंशज, परिजन के समूह से संबंध होते हैं। परिजन समूह इस बात पर आधारित होता है कि समाज मातृसत्तात्मक है अथवा पितृसत्तात्मक। किसी मातृसत्तात्मक समाज में माता के माध्यम से वंश का पता लगाया जाता है जबकि पितृसत्तात्मक समाज में पिता के माध्यम से समाज में वंश का पता लगाया जाता है। वह संपत्ति, अधिकार और शक्ति के विरासत के पैटर्न को निर्धारित करते हैं। वंश समूह से संबद्धता सामाजिक मानदंडों पर आधारित होती है चाहे वह समाज मातृसत्तात्मक हो अथवा पितृसत्तात्मक।

6.1.4.1 मातृसत्तात्मक समाज : मातष्सत्तात्मक शब्द मात्री सत्ता शब्द से बना है जिसका अर्थ है मां का अधिकार। वर्तमान समय की समाज में माता का पूर्ण शासन नहीं देखा जाता है। हमारे पास सामान्य तौर पर जो मातृसत्तात्मक समाज है वह अधिकार और शक्ति के स्थान पर और वंशानुक्रम पैटर्न पर आधारित है। उदाहरण के लिए उत्तर–पूर्व भारत के मेघालय के खासी लोगों के बीच वंश की जानकारी मां के माध्यम से प्राप्त की जाती है और पैतृक घर की वंशानुक्रम पद्धति खासतौर से मातृ–रेखा का अनुपालन करती है जिसमें वंशानुक्रम छोटे के पास होता है जिसे काप खड्डू कहा जाता है। सबसे छोटे बच्चे द्वारा वंशानुक्रम को अल्टीमो जेनेस्ट्रेशन के नियम के रूप में जाना जाता है। निर्णय लेने के अधिकार के मामले में यह अधिकार माता के भाई अर्थात मामा के पास होता है। चूंकि, शक्ति और अधिकार मां या महिला से अधिक पुरुषों के पास होता है इसलिए इस शब्द का अर्थ सही मायने में अपने आप में पूरा नहीं है।

6.1.4.2 पितृसत्तात्मक समाजः इस प्रकार का समाज पिता के अधिकार या पितृसत्ता पर आधारित होता है। ऐसे समाजों में वंशावली, वंश व उत्तराधिकार, शक्ति और अधिकार का पता पिता के माध्यम से लगाया जाता है। बेटियां पिता की वंशज होती हैं परंतु विरासत के मामले में शक्ति और अधिकार पिता से पुत्र को ही प्राप्त होता है। जेष्ठाधिकार का नियम व आदर्श है जिससे सबसे बड़ा पुरुष सच्चा वारिस बन जाता है। उसे संपत्ति विरासत में प्राप्त होती है और अपने पिता की मृत्यु के बाद वह परिवार का मुखिया बन जाता है। कुछ पितृसत्तात्मक समाजों में कनिष्ठाधिकार का नियम प्रबल है जिसमें सबसे छोटा पुत्र पैतृक संपत्ति प्राप्त करता है। बर्मा के काचीन में कनिष्ठाधिकार का नियम प्रबल है जिसे छोटे पुत्र का अधिकार भी कहा जाता है।

6.1.5 वंशावली

नातेदारी अध्ययन में वंशावली के रूप में जाना जाने वाला परिवार वृक्ष अर्थात फैमिली ट्री को निर्मित कर दो व्यक्तियों के बीच संबंध स्थापित किया जा सकता है। वंशावली मूल रूप से मां या पिता की ओर से वंशानुक्रम को जानने का आधार होती है। आइए हम वंशावली बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाले प्रतीकों के सिद्धांत को जानते हैं:

1. त्रिकोण किसी पुरुष का प्रतिनिधित्व करता है

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

2. वृत्त किसी महिला का प्रतिनिधित्व करता है

3. लिंग अस्पष्टता की स्थिति में बॉक्स या किसी तिर्यग्वर्ग (हीरे जैसा) ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

4. दो प्रतीकों के ऊपर कोई रेखा सहोदर रिश्ते को इंगित करती है

5. दो प्रतीकों के बीच एक जैसे (=) संकेत शादी को दर्शाते हैं =

6. शादी के संकेत से कोई क्षैतिज रेखा जब नीचे की ओर जाती है तो यह माता–पिता, बच्चे के संबंध को इंगित करती है।

7. दो प्रतीकों के बीच कोई डॉट अथवा डैश वाली रेखा शादी के अतिरिक्त किसी यौन संबंधों को दर्शाती है। --------

8. प्रतीक के बीच में रेखा किसी मरे हुए व्यक्ति को दर्शाती है।

9. कोई रेखा जो क्षैतिज रूप से समान चिन्ह को काटती है वह संबंध विच्छेद जैसे कि तलाक को दर्शाती है। ≠

10. किसी भी प्रतीक के पास कोई तीर का निशान ईगो (सूचनादाता) को दर्शाता है जो की वंशावली का संदर्भ बिंदु है।

मानव विज्ञानी कुछ प्रतीकों का उपयोग किसी वंश में दूसरे सदस्यों के ईगो(म्हव) के सटीक संबंध का पता लगाने के लिए करते हैं। शब्दावली का संदर्भ नीचे विस्तृत रूप से दिया जा रहा हैरू–

F = पिता, M = मां, P = अभिभावक, B = भाई Z बहन S पुत्र, D = पुत्री, G = भाई बहन, H = पति W पत्नी, E पति/पत्नी, e = बड़ा, y = छोटा, ss समान लिंग, os = विपरीत लिंग, gm = –दादी, gf = दादा zh = बहन का पति Zs = बहन का बेटा, zd = बहन की बेटी, sla = दामाद, dla = बहू (बर्नाड:2007:103,एवं अन्य)

वंशावली का पता लगाने की तरीकों को जानने के लिए प्रतीकों का इस्तेमाल करके यहां एक डायग्राम बनाएं।

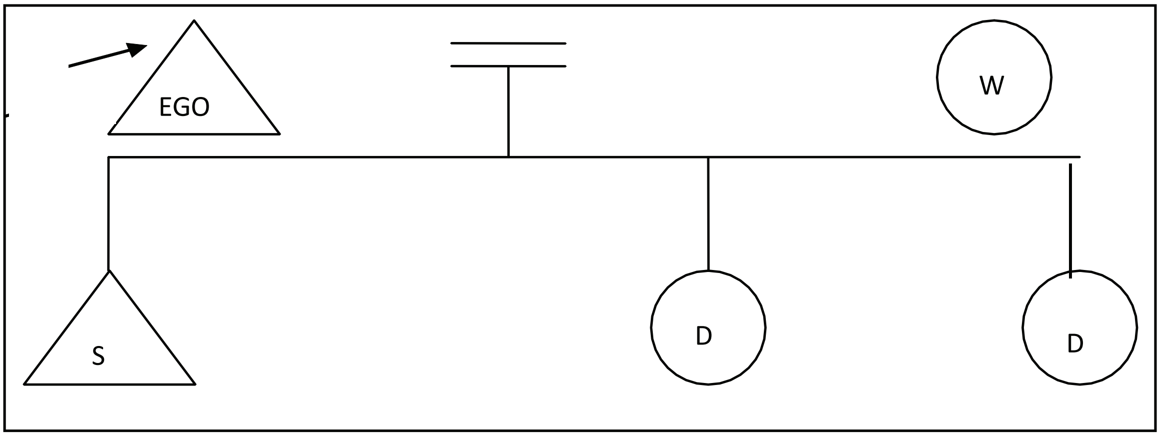

आकृति 1

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

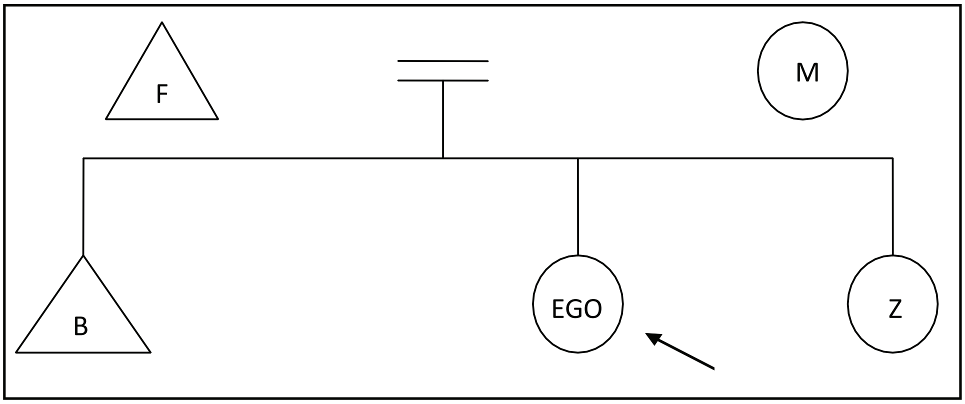

आकृति 2

यदि हम आकृति एक और आकृति दो को देखते हैं तो यह दोनों एक समान दिखाई देते हैं। परंतु जब हम प्रतीकों का अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कि आकृतियां एक समान नहीं है। यह *ईगो* के कारण होता है। वंशावली में रिश्तो को *ईगो* के माध्यम से पता लगाया जाता है। आकृति एक में ईगो के परिवार में पत्नी, एक पुत्र और दो पुत्रियां शामिल है। आकृति दो में *ईगो* के परिवार में पिता, माता एक भाई और एक बहन शामिल है। अतः भले ही हम एक ही वंशावली को देख रहे होते हैं लेकिन जिस दृष्टिकोण से फैमिली–ट्री का पता लगाया जा रहा है वे दृष्टिकोण और रिश्ते *ईगो* पर आधारित होंगे।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. नातेदारी प्राप्त करने के दो मूलभूत विधियां कौन सी हैं

   ....

   ....

   ....

2. खून के रिश्ते से जो संबंध बनता है उसे किस नाम से जाना जाता है

   ....

   ....

   ....

3. विवाह से जो रिश्ते बनते हैं उसे किस नाम से जाना जाता है

   ....

   ....

   ....

4. वास्तविक नातेदारी को परिभाषित करें

   ....

   ....

   ....

5. काल्पनिक नातेदारी से आपका क्या तात्पर्य है

....
....
....
....

6. अनाचार निषेध को परिभाषित करें

....
....
....
....

7. वंश से आप क्या समझते हैं

....
....
....
....

8. पितृसत्तात्मक समाज से मातृ–सत्तात्मक समाज में वंश किस प्रकार अलग होता है ।

....
....
....
....

9. जेष्ठाधिकार और कनिष्ठाधिकार के नियमों को परिभाषित करें

....
....
....
....

10. वंशावली से आप क्या समझते हैं।

....
....
....
....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

गतिविधिः नीचे दी गई वंशावली के बारे में पता लगाइए ।

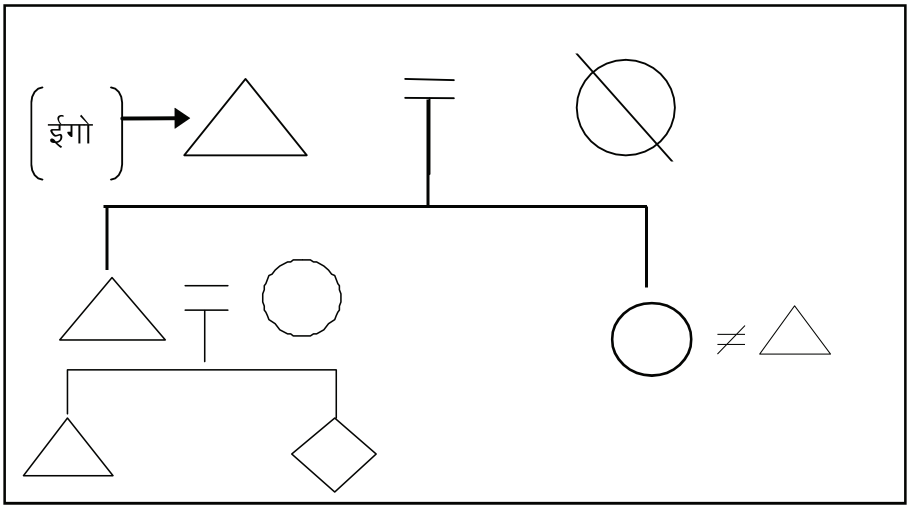

आकृति 3

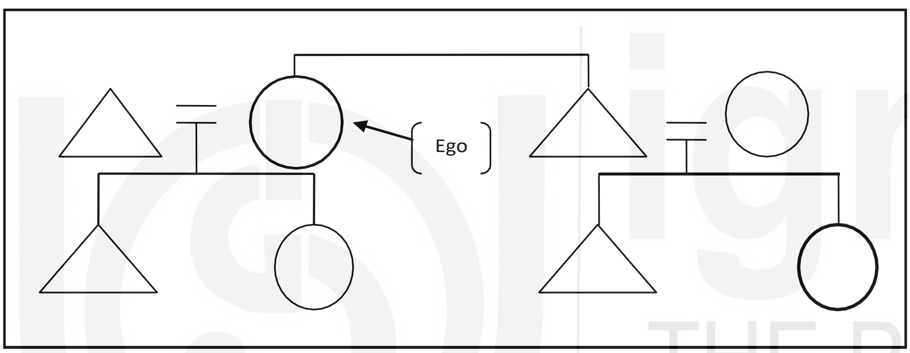

आकृति 4

6.2 परिवार

इस अनुभाग में हम परिवार के अर्थ और विभिन्न समाजों में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के परिवारों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। हमारी चर्चा घर और परिवार की शब्दावली को जानने समझने से संबंधित होगी। निवास स्थान के आधार पर परिवार के प्रकारों में परिवर्तन को भी यहां चर्चा के अंतर्गत रखा जाएगा।

6.2.1 परिवारों के प्रकार

जब हम परिवार शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो हमारे मन में हमारा अपना परिवार सबसे पहले आता है। तो आइए इस अनुभाग में परिवार के अर्थ को जानने–समझने के लिए अपने परिवार के सदस्यों को ही सूचीबद्ध करते हैं। आप कोई फैमिली–ट्री बनाने के लिए वंशावली पद्धति का इस्तेमाल कर सकते हैं जिसके बारे में नातेदारी के अनुभाग में वर्णन किया गया था। यदि अब हम फैमिली–ट्री की जांच कर रहे हैं तो हम मूल रूप से अपने में से प्रत्येक ने अपनी माता पिता और भाई बहनों को फैमिली–ट्री में शामिल किया है जिनके साथ हम रहते हैं। हममें से कुछ लोग उनके साथ रहते होंगे जो मातृ या पितृ पक्ष के होते हैं कुछ लोगों ने इस फैमिली–ट्री में अपने दादा–दादी अथवा नाना–नानी को भी शामिल किया होगा। मूल रूप से हम परिवार के रूप में एक ही घर में रहने वाले सभी सदस्यों को सूचीबद्ध करते हैं। किसी परिवार में रहने वाले सदस्यों की यह संरचना एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न होगी।

एक साथ रहने वाले लोग परिवार में शामिल होते हैं जो कि या तो खून के रिश्ते जो संज्ञानात्मक अथवा विवाह के रिश्ते जिन्हें अगनेट कहते हैं वे उससे संबंधित होते हैं। परिवार को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है जो ओरियंटेशन फैमिली अर्थात अभिविन्यास परिवार तथा प्रोक्रिएशन फैमिली अर्थात उत्पत्ति परिवार। कोई बच्चा ओरियंटेशन परिवार में जन्म लेता है जहां पर वह सामाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से गुजरता है। विवाह के उपरांत पति–पत्नी से एक परिवार बनता है जिसे प्रोक्रिएशन परिवार अर्थात उत्पत्ति का परिवार के नाम से जाना जाता है जहां पर वे बच्चों को पैदा कर सकते हैं अथवा गोद ले सकते हैं। आइए यहां पर हम विभिन्न प्रकार के परिवारों को जानते समझते हैं जिनके बारे में बर्नार्ड (2007:94–95) ने वर्णन किया है।

- एकल परिवारः ऐसे परिवार में कोई विवाहित जोड़ा और उसके बच्चे शामिल होते हैं जो उनके स्वयं के होते हैं या गोद लिए भी हो सकते हैं।
- एकल अभिभावक परिवारः एकल अभिभावक परिवार जिसमें माता अथवा पिता बच्चों के साथ रहते हैं जो उनके या तो स्वयं के होते हैं या गोद लिए होते हैं ।ऐसा परिवार पति या पत्नी में से किसी एक के अलगाव अथवा तलाक या मृत्यु के कारण बन सकता है।
- मिश्रित परिवारः ऐसे परिवार में मुख्य रूप से कोई व्यक्ति खासतौर से पति और उसकी पत्नी, कभी कभी रखैल और उसके बच्चे शामिल होते हैं। ऐसे परिवार पाए जाते हैं जिनमें बहु विवाह का प्रचलन है।
- संयुक्त परिवारः ऐसे परिवार में भाई और उनकी पत्नियां और उनके बच्चे सभी लोग अपने माता–पिता के साथ एक साथ रहते हैं। सामान्यतः अधिकार पिता के पास होता है। जिन देशों में कृषि मुख्य व्यवसाय है, जैसा कि भारत और चीन वहां ऐसा परिवार आमतौर पर पाया जाता है।
- विस्तृत परिवार–आज के बदलते समाज में इस शब्द में बहुत अधिक अस्पष्टता आ गई है। एक ओर इसका तात्पर्य है कि निकट संबंधी एकल परिवारों का कोई समूह जो एक साथ रहते हैं जबकि शहरी और औद्योगिक समाजों में इसका तात्पर्य ऐसे समूह से है जो एक साथ तो नहीं रहते हैं परंतु वे संपर्क में जरूर रहते हैं।

अब शादी के अपने उदाहरण की ओर पुनः चलते हैं और देखते हैं कि शादी के उपरांत निवास के आधार पर किस प्रकार का परिवार बनता है। अधिकांश समाजों में ऐसे नियम होते हैं जो किसी नवविवाहित जोड़े को शादी के उपरांत निवास करते समय पालन करने पड़ते हैं। यहां हम झा (1995) के अनुसार बताए गए परिवारों के प्रकारों की चर्चा करेंगे जो विवाह के बाद निवास के आधार पर बनते हैं।

- नव स्थानीय निवास– जो किसी नए स्थान पर होता है। कोई नया परिवार जिससे मूल रूप से एकल परिवार के रूप में जाना जाता है जो विवाह के उपरांत केवल पति और पत्नी से बनता है और बाद में उसके बच्चे जो खुद के होते हैं या गोद लिए हुए होते हैं वह इस परिवार का हिस्सा बन जाते हैं।
- पितृ स्थानीय अथवा वाइरी लोकल निवास–जब कोई नवविवाहित जोड़ा दूल्हे के पिता के घर में निवास करता है तो ऐसे निवास को पितृ स्थानीय या वाइरी लोकल निवास के रूप में जाना जाता है।

- मातृ स्थानीय अथवा ऑक्सोरीलोकल निवास–यह उस समय बनता है जब युगल शादी के उपरांत किसी मात्तृ स्थानीय परिवार में निवास करता है अर्थात दुल्हन के परिवार के साथ।

- अवकालिक (एवोक्यूलोकल) निवास–कुछ समाजों में जैसे कि घाना की अशंटी समाज में विवाह के बाद कोई जोड़ा दूल्हे की मां के भाई के परिवार या मामा के घर में रहता है जैसा कि मेयर फोर्टिज द्वारा अपने अध्ययन में बताया गया है।

- परिवेश (एंबीलोकल) या द्विध्रुवीय (बाईलोकल) निवास–जब किसी विवाहित जोड़े के पास पति या पत्नी के रिश्तेदारों के साथ रहने का विकल्प मौजूद होता है तो ऐसे निवास को एंबीलोकल या बाईलोकल निवास के रूप में जाना जाता है।

- नैटो लोकल निवास–शादी के बाद जब कोई युगल एक साथ नहीं रहते हैं अपितु अपने परिवार के साथ रहते हैं तो ऐसे निवास को नैटोलोकल निवास के रूप में जाना जाता है। मेघालय की गारो समुदाय में पति रात में पत्नी से मिलने जाता है और सूर्योदय से पहले वह उस स्थान को छोड़ देता है। बच्चों के लिए अधिकार मां के भाई अर्थात मामा के पास होता है जो एक पुरूष होता है और जो अपनी बहन के बच्चों के लिए जिम्मेदार होता है ना कि अपने बच्चों के लिए।

6.2.2 घर और परिवार

कई बार घर और परिवार शब्द के बीच भ्रम होता है। तो आइए सबसे पहले घर शब्द को जानने समझने का प्रयास करते हैं। हविलेंड (2003) द्वारा घर को मूल आवासीय इकाई के रूप में परिभाषित किया गया है जहां आर्थिक उत्पादन, खपत, उत्तराधिकार, बच्चों का पालन पोषण और आश्रय की व्यवस्था तथा अन्य चीजों का कार्यान्वयन किया जाता है। अक्सर घर के सभी सदस्य एक सामान्य चूल्हे को साझा करते हैं। आइए अमेजन के मुंडुरुक का उदाहरण लेते हैं जो किसी घर के आस–पास खुद को व्यवस्थित करते हैं। उनके पास एक अद्वितीय प्रणाली होती है जिसके अंतर्गत 13 वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुष और लड़के एक साथ रहते हैं जबकि 13 साल से कम उम्र की सभी महिलाएं और बच्चे एक साथ रहते हैं।(हैविलैंड,2003) यहां पर हम यह देखते हैं कि घर किसी परिवार का विस्तार है। कोई परिवार एक घर हो सकता है लेकिन कोई घर एक परिवार नहीं हो सकता है। इस कथन को और अधिक स्पष्ट करने के लिए आइए वर्तमान समय की स्थिति से एक और उदाहरण को लेते हैं। हम आजकल अनेक छात्रों को अपने मूल स्थान से बाहर निकलते हुए या किसी दूसरे शहर में जाकर बसते हुए अथवा उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाते हुए देखते हैं। इन छात्रों का सामान्यतः बहुत कम बजट होता है जिसके कारण वह सभी छात्र एक साथ किसी आवास को साझा करना पसंद करते हैं। अतः दो से तीन छात्र कोई स्थान लेते हैं, कहने का अर्थ है कि घर लेते हैं और घर को साझा करते हैं और एक साथ भोजन करते हैं। इस प्रकार वे लोग एक चूल्हे को साझा करते हैं। परंतु जरूरी नहीं है कि वे सभी लोग एक ही परिवार के सदस्य हों अपितु विभिन्न परिवारों से संबंधित होते हैं।

6.2.3 परिवार के कार्य

एक सामाजिक समूह के रूप में परिवार की अवधारणा सार्वभौमिक होती है और इसका अस्तित्व सभी संस्कृतियों में देखा जाता है। अतः समाज में एक स्थान यानी दर्जा रखने वाले

परिवार की कुछ जिम्मेदारियां और कार्य भी होते हैं। परिवार के मूलभूत कार्य निम्नानुसार दिए गए हैं:

6.2.3.1 जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति

एक संस्था के रूप में परिवार जैविक आवश्यकताओं को नियमित करता है जो कि सभी मनुष्यों की प्राथमिक आवश्यकताएं होती हैं। परिवार, यौनाचार के मानदंडों को भी परिभाषित करके उसे प्रसारित करने में सहायता करता है कि किसके साथ यौनाचार किया जा सकता है और किसके साथ यौनाचार वर्जित है।

6.2.3.2 प्रजनन

जैसा कि हमने यह सीखा है कि कोई बच्चा किसी परिवार में ही पैदा होता है। जैसे ही कोई बच्चा किसी परिवार में पैदा होता है वह परिवार की व्यवस्था के अनुसार कुछ सामाजिक स्थित, मान्यताओं, भाषा, माता–पिता और परिजनों की प्रणाली का हकदार बन जाता है।

6.2.3.3 आर्थिक

एक सामाजिक समूह के रूप में कोई परिवार अपने सदस्यों की जरूरी आवश्यकता जैसे, भोजन, कपड़ा और मकान को पूरा करने के लिए जिम्मेदार होता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किसी परिवार के सभी सदस्य सहयोग करते हैं और काम को आपस में बांट लेते हैं तथा परिवार के पालन पोषण की दिशा में योगदान करते हैं।

6.2.3.4 शिक्षात्मक

परिवार बच्चे का पालन–पोषण करता है और संस्कृतिकरण तथा समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे के गुणों में वृद्धि करता है ताकि बच्चा व्यस्क होने पर सभी बातों का सामना कर सके। हम वर्तमान समय में परिवार के मामले में भी नए बदलाव को देखते हैं। लिव इन रिलेशनशिप ऐसी ही एक अवधारणा है जहां पार्टनर या जोड़े बिना शादी के एक साथ रहते हैं। इस प्रकार के रिश्तो को कानून द्वारा वैध माना जाता है और यदि कोई बच्चा पैदा होता है तो उसे कानून द्वारा वैध माना जाता है। भारत में फैमिली कोर्ट में लिव इन रिलेशनशिप के घरेलू हिंसा के मामले निपटाए जा रहे हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

11. परिवार को किन दो व्यापक श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

....

....

....

12. परिवार के विभिन्न प्रकार कौन से होते हैं।

....

....

....

13 विभिन्न प्रकार के परिवारों के आधार पर विभिन्न प्रकार के आवासों का उल्लेख करें ।

....

....

....

6.3 विवाह

लगभग सभी प्रकार के मानव समाजों में विवाह की अवधारणा पाई जाती है। हालांकि, सभी समाजों में विवाह के पैटर्न, अनुष्ठान और रीति–रिवाज एक दूसरे से अलग अलग हो सकते हैं। यह बहस आज भी जारी है कि विवाह कब अस्तित्व में आया और यह समाज का अभिन्न अंग कब बन गया। प्रारंभिक सामाजिक चिंतकों ने यह अनुमान लगाया है कि मानव अस्तित्व के प्रारंभिक चरणों में वह संकीर्णता की स्थिति में रहता था जहां किसी व्यक्ति का विवाह नहीं होता था, कोई नीति नियम नहीं थे। सभी पुरुषों का सभी महिलाओं के साथ यौनाचार करने का अधिकार था और इस प्रकार पैदा हुए बच्चे बड़े पैमाने पर समाज की जिम्मेदारी होते थे। इसने समय के साथ साथ सामूहिक विवाह और अंत में एकल विवाह की प्रथा को शुरू किया। इसलिए इस अनुभाग में पहले हम विवाह की अवधारणा को परिभाषित करने की कोशिश करेंगे और फिर विभिन्न समाजों में प्रचलित विभिन्न प्रकार के विवाहों को जानेंगे और समझेंगे। फिर उन मानदंडों और नियमों की चर्चा करेंगे जो विवाह के लिए एक जीवन साथी की तलाश हेतु बनाए गए हैं।

6.3.1 विवाह को समझना

विवाह का तात्पर्य क्या होता है? आइए हम इस चर्चा की शुरुआत नोट एंड क्यूरी (1951 :111) में मानव विज्ञान से संबंधित टिप्पणियों और सवालों से करते हैं जो विवाह के बारे में दिए गए हैं– "विवाह किसी महिला और पुरुष के बीच का एक मिलन होता है और इसके कारण किसी महिला से पैदा होने वाले बच्चे दोनों भागीदारों की वैध संतान के रूप में जाने जाते हैं।" इसलिए मूल रूप से विवाह एक प्रकार की मंजूरी है जिसे समाज द्वारा किसी पुरुष और महिला के लिए संबंध स्थापन हेतु स्वीकार किया जाता है और उन्हें बच्चों को पैदा करने या गोद लेने के लिए सामाजिक पवित्रता प्रदान की जाती है। हालांकि आइए अब हम यह देखते हैं कि क्या वर्तमान समय में यह परिभाषा सही है और समाजों में प्रचलित विभिन्न प्रकार के विवाहों को समझने की कोशिश करते हैं। इसे जानने के लिए आइए विवाह के प्रकारों के साथ इसे शुरू करते हैं जो समाज में प्रचलित हैं।

6.3.2 विवाह के प्रकार

मोटे तौर पर हम विवाह को दो श्रेणियों में बांट सकते हैं– पहली श्रेणी है एकल विवाह और दूसरी श्रेणी है बहु–विवाह।

6.3.2.1 एकल विवाह

एकल विवाह केवल एक साथी अथवा एक व्यक्ति से विवाह करने का अनुमोदन होता है। एकल विवाह को क्रमिक एकल विवाह और गैर क्रमिक एक विवाह में विभाजित किया जा सकता है।

- क्रमिक एकल विवाह का संबंध एक ऐसी स्थिति से है जहां किसी आदमी की पत्नियों की श्रंखला एक के बाद एक आगे बढ़ती जाती है लेकिन यह श्रंखला एक समय में केवल एक ही पत्नी तक रहती है। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में जहां तलाक की दर अधिक है परंतु केवल मोनोगैमी अर्थात एकल विवाह वैध है, क्रमिक मोनोगैमी को व्यापक रूप से देखा जाता है।

- गैर क्रमिक एकल विवाह (मोनोगैमी)– भारत में हिंदू समाज गैर –क्रमिक मोनोगामी से संबंधित है जहां किसी आदमी की ताउम्र एक ही पत्नी होती है। ऐसे समाजों में तलाक की दर कम होती है और यह पसंदीदा मानदंड है।

6.3.2.2 बहुविवाह

यह एक प्रकार का वह विवाह होता है जिसमें एक से अधिक पार्टनर यानि साथी होते हैं।

बहुविवाह तीन प्रकार का होता है जो निम्नानुसार है:

- **बहुपत्नीत्व:** यदि कोई पुरुष एक से अधिक महिलाओं से विवाह करता है तो उसे बहुपत्नीत्व के रूप में जाना जाता है। किसी व्यक्ति की पत्नियां यदि आपस में बहनें होती हैं या संबंधी होती हैं तो इसे सोरोरल बहु पत्नीतत्व के रूप में जाना जाता है। कई इस्लामिक देशों में इस प्रकार के विवाह देखे जाते हैं। दक्षिण अफ्रीका के जुलू में बहुपत्नीत्व की प्रथा प्रचलित है। जब पत्नियां संबंधित नहीं होती हैं तो इसे गैर सोरोरल बहु पत्नीतत्व के रूप में जाना जाता है। कोरोमो द्वीप में ऐसे विवाह प्रचलित हैं।

- **बहुपतित्व** : जब किसी महिला का विवाह एक से अधिक पुरुषों से होता है तो उसे बहुपतित्व के रूप में जाना जाता है। यदि पति, भाई या वंश के किसी भाई की भांति खून के रिश्ते से संबंधित होता है तो ऐसी विवाह को फ्रेटरनल अथवा एडल्पिक बहुपत्नीत्व कहा जाता है। भारतीय हिंदू समाज में फ्रेटरनल पोलीऐंड्री अथवा एडल्पिक विवाह का उदाहरण प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत में देखने को मिलता है जहां पांच भाइयों यानी पांडवों की शादी राजकुमारी द्रौपदी से हुई थी। आज भी तिब्बत और नेपाल के कुछ क्षेत्रों में सामाजिक रूप से स्वीकृत प्रथा के रूप में बहुपतित्व की प्रथा देखने को मिलती है जब पत्तियों का खून का संबंध नहीं होता है तो ऐसी विवाह को गैर –फ्रेटरनल बहुपत्नीतत्व के रूप में जाना जाता है। अत्यंत दुर्लभ मामले भी पाए जाते हैं जैसा कि तिब्बतियों के समाज में है जहां पर पिता और भाई, पति भी बन जाते हैं जिसे पारिवारिक बहुपत्नीत्व कहा जाता है। इस प्रकार के विवाह के लिए कई अटकलें हैं और उनमें से एक कारण युवतियों की कम आबादी और अधिक ऊंचाई से संबंधित है जिसमें वह रहते हैं। यहां अधिक ऊंचाई का तात्पर्य हाई एल्टीट्यूड से है। यदि किसी महिला को कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों से पत्नी के रूप में अपनाया जाता है तो उसके लिए ऐसे वातावरण में रहना मुश्किल होता है।

- **बहु विवाह** : कई पुरुषों का विवाह कई महिलाओं से अथवा आसान शब्दों में यह कहा जा सकता है कि किसी पुरुष का एक ही समय में कई पत्नियां होती हैं और एक महिला के कई पति होते हैं जिसे बहुविवाह (पॉलीजेनैंड्री) के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार के विवाह पहले भारत के नीलगिरी पर्वत श्रंखला के टोडा समुदायों और जौनसार बावर के खासा लोगों में प्रचलित थे।

हाल के दिनों में विवाह की एक तीसरी श्रेणी समलैंगिक विवाह या समान लैंगिकता वाले लोगों का विवाह के रूप में उभर कर सामने आया है। इस प्रकार के जोड़े में एक ही लिंग के दो पुरुष या दो महिलाएं शामिल होते हैं। इस प्रकार के विवाह में समाज, जोड़ों को कानूनी रूप से किसी बच्चे को गोद लेने या सेरोगेसी के माध्यम से बच्चा पाने की अनुमति देता है।

उपर्युक्त प्रकार के विवाहों से हम यह समझ सकते हैं कि विवाह की संस्था के अलग अलग पैटर्न होते हैं। हम यह जान चुके हैं कि कुछ समाजों में विवाह में एक से अधिक जोड़ें शामिल हो सकते हैं जबकि कुछ समाजों में समान लिंग वाले जोड़े भी आपस में विवाह कर सकते हैं। तो यह मानें कि सिर्फ किसी जोड़ें अथवा लोगों के किसी समूह को एक साथ रहने और बच्चों को पैदा करने या अपनाने के लिए प्रदान की गई सामाजिक मंजूरी ही विवाह है।

6.3.3 विवाह किससे किया जाए?

अधिकांश समाजों में नातेदारी का नियम मौजूद होता है जो यह निर्धारित करता है कि विवाह किससे करना है और किस से नहीं। जीवन साथी का चयन करते समय निर्धारित या अधिमान्य मानदंडों का ही पालन किया जाता है। शादी के लिए जब श्रेणी के कुछ सदस्य उपलब्ध होते हैं तब भी इन नियमों और मानदंडों का सख्ती से अनुपालन किया जाता है। ऐसे मानदंडों को निदेशात्मक मानदंड के रूप में वर्णित किया जाता है। सगोत्र विवाह और विजातीय विवाह के नियम इस समूह के अंतर्गत आते हैं।

6.3.3.1 सगोत्र विवाह

एक ही आस्था या धर्म के मानने वालों के विवाह हैं। उदाहरण के लिए हिंदू एक जाति समूह में विवाह करते हैं और जनजातियां अपने समुदाय यानी आदिवासी समुदाय में ही शादी करते हैं। हिंदू समाज में अनुलोम और प्रतिलोम के नियम भी प्रचलित हैं। वैदिक काल में अनुलोम या हाइपरगैमी का नियम प्रचलित था जहां किसी उच्च जाति का कोई लड़का अपनी ही जाति के या अपने से तीन श्रेणी नीचे तक की लड़की से शादी कर सकता था। हालांकि ऐसे मामलों में विवाह की स्थिति पूर्ववत बनी हुई है और केवल उनके बच्चों को ही पिता का दर्जा प्राप्त होता है। दूसरी ओर प्रतिलोम या हाइपोगैमी नियम में किसी निम्न जाति का पुरुष उच्च जाति की लड़की से विवाह कर सकता है, हालांकि ऐसे मामलों में लड़की अपने उच्च जाति का दर्जा खो देती है और पैदा होने वाले बच्चे अपने पिता की जाति से ही पहचाने जाते हैं। प्रतिलोम विवाह की अनुमति नहीं थी और समाज ने इसका प्रतिरोध किया।

6.3.3.2 विजातीय विवाह

समूह से बाहर के समूह में की गई शादी है। हिंदू समुदाय में एक ही जाति समूह में विवाह किया जाता है परंतु दूल्हा और दुल्हन के गोत्र एक दूसरे से अलग अलग होते हैं। उन समाजों में जहां सगोत्र विवाह की प्रथा प्रचलित है, समानांतर चचेरे भाई–बहन की शादी अधिमान्य है वहां पर। ऐसे समाजों में पहले चचेरे भाई–बहन के बीच शादी ब्याह की अनुमति प्रदान की गई है। वंशावली विजातीय विवाह के नियमों के आधार पर विभिन्न वंशों से चचेरे भाई पसंद किए जाते हैं। विपरीत लिंग के भाई बहनों के बच्चों को क्रॉस–कजिन कहा जाता है। जबकि एक ही लिंग अर्थात भाई–भाई के भाई–बहनों के बच्चे समानांतर चचेरे भाई कहे जाते हैं। बहुत से मुस्लिम समाजों में एक व्यक्ति अपने पिता के भाई की बेटी से विवाह करता है जिसे समानांतर चचेरे भाई की शादी के रूप में जाना जाता है जो कि विजातीय विवाह का बहुत ही दुर्लभ स्वरूप है। पूर्वी और दक्षिण पूर्वी तुर्क के कुर्द लोगों में समानांतर चचेरे भाई की शादी की प्रथा आज भी जारी है।

6.3.3.3 अधिमान्य विवाह

क्रॉस–कजिन विवाह उन समाजों में अधिमान्य मानदंड है जहां बहिर्गमन का नियम का पालन किया जाता है। किसी व्यक्ति के वंश के बारे में उसकी मां या पिता के पक्ष के माध्यम से पता लगाया जाता है। अगर पिता के माध्यम से वंश का पता लगाया जाता है तब उसकी बुआ यानी कि पिता की बहनों की बेटी के साथ विवाह पसंदीदा प्राथमिकता होती है और जब वंश का मां के माध्यम से पता लगाया जाता है तो विवाह के लिए पसंदीदा आदर्श मां के भाई की बेटी होती है। जब कोई व्यक्ति अपनी मां के भाई की बेटी से विवाह करता है तो उसे मेट्रीलेटरल क्रॉस कजिन विवाह कहा जाता है जबकि यदि वह अपने पिता की बहन की बेटी से विवाह करता है तो इसे पैट्रीलेटरल क्रॉस कजिन विवाह कहा जाता है। उन समाजों में जहां अधिकार माता के भाई के पास होता है वहां मेट्रीलेटरल क्रॉस कजिन विवाह पसंदीदा मानदंड होता है।

उपरोक्त पूर्व निर्धारित और अधिमान्य विवाह के अतिरिक्त देवर विवाह (लेविरेट) और साली विवाह(सोरोरेट) कभी–कभी विधवाओं और विधुरों के लिए निर्धारित मानदंड कुछ समुदायों में निर्धारित किए जाते हैं। लेविरेट, विवाह का वह रूप है जिसमें बड़े भाई की मृत्यु के बाद छोटे भाई की शादी विधवा से कर दी जाती है जो छोटे भाई की बाध्यता होती है। लेविरेट शब्द लैटिन शब्द लेविर से लिया गया है जिसका अर्थ है पति का भाई। यह एक प्रकार का ऐसा विवाह होता है जो अक्सर उन समाजों में देखा जाता है जिनमें विजातीय विवाह प्रचलित नहीं होता है। दूसरी ओर सोरोरेट विवाह वह प्रथा है जिसमें कोई विधुर अपनी मृत पत्नी की बहन से विवाह करता है।

6.3.4 जीवन साथी पाने के तरीके

जीवनसाथी पाने के तरीके अलग–अलग समाजों में अलग–अलग प्रकार के होते हैं। हिंदू समाज में हाल के दिनों तक पारिवारिक रजामंदी से (अरेंज्ड) अथवा बातचीत विवाह (नेगोशिएशन) से विवाह होते थे जिन्हें आदर्श विवाह माना जाता था। किसी बिचौलिए के माध्यम से दूल्हा– दुल्हन के माता–पिता द्वारा कोई जीवनसाथी तलाश किया जाता था। ऐसे विवादों में दुल्हन धन –दहेज लाती थी। दुल्हन के धन को दुल्हन के परिवार की ओर से दूल्हे को शादी के दौरान दिए गए उपहार के रूप में देखा जाता था। उपहार वस्तुओं, मुद्राओं या पशुधन जैसी चल संपत्ति के संदर्भ में होता था। अधिकांश चरवाहों और अर्ध घुमंतु समूहों में इसे दुल्हन के घर में श्रम के नुकसान के रूप में देखा जाता है। ऐसे समाजों में परिवार का प्रत्येक सदस्य श्रम के मामले के अनुसार एक प्रकार की संपत्ति होता है। दूसरी ओर दहेज, दुल्हन के घर परिवार से दूल्हे के घर परिवार के लिए वस्तुओं और मुद्राओं का हस्तांतरण है। हिंदू समाज में पहले यह एक प्रचलित आदर्श था। भारतीय सिविल कानून के तहत 1961 में दहेज की परंपरा को प्रतिबंधित कर दिया गया और तदुपरांत भारतीय दंड संहिता की धारा 304 बी और 498 ए के तहत महिलाओं को दहेज संबंधी उत्पीड़न, घरेलू हिंसा और यहां तक की मौत से बचाने के लिए यह सारे कदम उठाए गए।

आदान–प्रदान द्वारा विवाह भी बातचीत प्रणाली के द्वारा विवाह का एक हिस्सा है। यह दुल्हन की धन संपत्ति के स्थान पर दुल्हन को ही दहेज मानता है। दो राजाओं अथवा दो समूहों के बीच युद्ध को खत्म करने के लिए प्राचीन समय में आदान–प्रदान द्वारा विवाह भी प्रचलित थे जिसे गठबंधन के रूप में जाना जाता था।

उत्तर–पूर्व भारत की कुछ जनजातियों में सेवा द्वारा यानी काम के द्वारा विवाह करने की प्रथा पाई जाती है जहां पर दूल्हा–दुल्हन को वस्तु या मुद्राओं के माध्यम से भुगतान ना करके वह उसके घर पर सेवा यानी काम करता है और इस प्रकार वह भुगतान करता है।

कब्जा करके विवाह औपचारिक ढंग से या बलपूर्वक किया जा सकता है। पहले मामले में जैसा कि भारत में नागालैंड के नागाओं के बारे में मानवविज्ञानी वेरियर ने यह उल्लेख किया है कि छापा मारने के दौरान पुरुषों ने गांव की उन महिलाओं को पकड़ लिया जो विवाह करने योग्य थीं और उनसे या तो शादी कर ली या उन्हें बंधुआ मजदूरों के रूप में अपने खेतों में काम करने के लिए रखा। ऐसी स्थिति को भौतिक रूप से कब्जा करने के रूप में वर्णित किया गया है। औपचारिक रूप से किसी लड़की को सामुदायिक मेले अथवा उत्सव में किसी लड़की के प्रस्ताव पर शादी करने के इच्छुक लड़के द्वारा पकड़ लिया जाता है और अपने इरादे को उसका हाथ पकड़ कर इजहार किया जाता है या उसकी मांग में सिंदूर भरकर उसे पहचान दी जाती है, जैसा कि बिहार के खारिया और बिरहोर में होता था।

घुसपैठ करके विवाह एक प्रकार का वह विवाह होता है जिसमें कोई लड़की किसी लड़के के घर में जबरजस्ती चली जाती है और उससे अपने जीवनसाथी के रूप में स्वीकार करने के लिए मजबूर करती है। इस प्रकार की शादियां बिहार के बिरहोर और हो जाति तथा मध्य प्रदेश के कमार जाति में देखी जाती थीं।

परीक्षण द्वारा विवाह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दूल्हे को अपनी दुल्हन का दावा करते हुए अपने वीरता और शौर्य को सिद्ध करना होता है। हाल के समय तक इस प्रकार के विवाह भारत में कई समाजों में पाए जाते थे। जैसा कि राजस्थान की भील जाति और नागालैंड के नागा लोगों में परीक्षण द्वारा विवाह का उल्लेख किया गया है। दो महाकाव्य महाभारत और रामायण में भी इस प्रकार के विवाह का उल्लेख किया गया है।

पलायन द्वारा विवाह कुछ समाजों में एक प्रथागत विवाह है जबकि यह दूसरों में नहीं देखने को मिलता है। कुछ समाजों में विवाह के लिए अनुष्ठानों की लागत ज्यादा होती है और कई परिवारों के लिए लागत का वहन करना कठिन होता है। ऐसे समाजों में पलायन द्वारा विवाह एक प्रथा के रूप में उभर कर सामने आया है। असम की कारबी आंगलोंग जिले के कारबी लोगों में इस प्रकार के विवाह काफी प्रचलन में थे। अन्य मामलों में विवाह योग्य होने पर विवाह उस समय तक नहीं होता है जब तक भावी दूल्हा या दुल्हन के परिवार में से कोई भी शादी की मंजूरी नहीं देता है अथवा जब किसी अरुचिकर साथी के साथ शादी हो जाती है।

वर्तमान युग में जीवनसाथी को प्राप्त करने के तरीकों का सख्ती से पालन नहीं किया जाता है। आज के महानगरीय शहरों में शिक्षा, वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के कारण प्यार के खेल देखने को मिलते हैं जहां लड़का और लड़की खुद ही यह तय करते हैं कि वह किससे शादी करेंगे और किससे नहीं। फिर भी भारत के कुछ हिस्सों में जाति की कठोरता अभी भी ऑनर किलिंग के रूप में देखी जाती है जो हाल के दिनों में एक प्रमुख सामाजिक चिंता का विषय बन कर उभरा है। लिव इन रिलेशनशिप की प्रणाली जहां कोई लड़का और लड़की या समलैंगिक लोग शादी के बिना एक साथ रहने वाले जोड़े के रूप में वर्तमान समाजों में बड़े पैमाने पर सामने आ रहे हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

14 विवाह के दो व्यापक विभाजन कौन–कौन से हैं।

....

....

....

15 एकल विवाह के प्रकारों का नाम बताइए।

....

....

....

16 बहुविवाह की विभिन्न श्रेणी या कौन सी हैं।

....

....

....

17. सगोत्र विवाह को परिभाषित करें।

....

....

....

18. विजातीय विवाह को परिभाषित करें

....

....

....

6.4 सारांश

जैसा कि हमने अब तक यह अध्ययन किया है कि नातेदारी जैविक संबंधों की सामाजिक मान्यता है जिसमें गोद लेना भी शामिल है। परिवार और विवाह, नातेदारी से घनिष्ठता पूर्वक जुड़े हुए हैं। वर्तमान समय में नातेदारी, अध्ययन, विवाह और परिवार प्रणालियों में परिवर्तन के साथ एक चुनौती बन गया है। आज किसी विशेष समाज या संस्कृति के लिए विवाह पद्धति को इंगित करना बहुत कठिन है क्योंकि आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण की लहरों ने लगभग सभी समाजों को छू लिया है। मानव विज्ञानी वर्तमान समय में परिवार और विवाह में परिवर्तन से अत्यधिक चिंतित हैं, जो नातेदारी तथा नातेदारी शब्दावली के उपयोग में बदलाव लेकर आया है। इसी तरह पुनर्विवाह के कारण बच्चों के पास माता–पिता और दादा–दादी के एक से अधिक सेट होते हैं और इससे नातेदारी की शब्दावली में भी परिवर्तन हो जाता है।

6.5. संदर्भ

बर्नार्ड, एलन. (2007). *सोशल एन्थ्रोपोलोजी : इन्वेस्टिगेटिंग ह्यूमन सोशल लाइफ.* नई दिल्ली : वीवा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड.

एवांस–प्रिचर्ड, ई.ई. (1951). *किनशिप एंड मैरिज अमंग द नुएर.* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

एवांस–प्रिचर्ड, ई.ई. (1956). *नुएर रिलिजन.* ऑक्सफोर्ड : क्लेरंडन प्रेस

फेरारो, गेरी एंड सुसन आन्द्रेअत्ता. (2010). *कल्चरल एन्थ्रोपोलोजी: एन एप्लाइड पर्सपेक्टिव.* आठवां संस्करण. यूएसए : वर्ड्सवर्थ सेंगेज लर्निंग.

फोर्ट्स, मेएर. (1945). *द डाइनमिक्स ऑफ क्लेंशिप अमंग द टल्लेंसी.* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

फॉक्स, रॉबिन. (1967). *किनशिप एंड मैरिज.* एन एंथ्रोपोलोजिकल प्रस्पेक्टिव. बाल्टीमोरः पेंग्विन.

गोफ, केथ्लीन. (1959). *द नायर्स एंड द डेफिनेशन ऑफ मैरिज.* "जर्नल ऑफ द रॉयल एंथ्रोपोलोजिकल इन्स्टिटट्यूट, 89: 23–34. लन्दनः वाइली–ब्लॅकवेल पब्लिशर.

हेवीलैंड, डब्ल्यू.ए. (2003). *एन्थ्रोपोलोजी.* बेल्मॉट, सीए : वर्ड्सवर्थ.

हूटेर. मार्क, संपा. (2003). *द फेमिली एक्सपीरियेन्स : ए रीडर इन कल्चरल डाइवर्सिटी.* बोसटनः अल्यं एंड बेकन.

मेर, लूसी. (1977). *एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एन्थ्रोपोलोजी.* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

मजूमदार, डी.एन. एंड टी.एन. मदन. (1986). *एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एन्थ्रोपोलोजी,* फिफ्थ नेशनल इंप्रेशन 1990. दरियागंज, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस.

मर्डोक, जॉर्ज पी. (1949). सोशल स्ट्रक्चर. न्यूयॉर्क : मेक्मिलन.

नंदा, सेरेना एंड रिचर्ड एल. वॉर्म्स. (2011). *कल्चरल एन्थ्रोपोलोजी.* 10वां संस्करण, यूनाइटेड किंग्डमः वर्ड्सवर्थ सेंगेज लर्निंग.

पारकिन, रॉबर्ट एंड लिंडा स्टोन. संपा. (2004). *किनशिप एंड फेमिली : एन एंथ्रोपोलोजिकल रीडर,* यूएसएः ब्लेकवेल पब्लिशिंग लिमिटेड.

रॉयल एंथ्रोपोलोजिकल इन्स्टिटट्यूट. (1951). *नोट्स एंड क्वेरीज ऑन एन्थ्रोपोलोजी.* छठा संस्करण. लन्दन : राउटलेड्ज एंड कीगेन.

वेस्टरमार्क, एड्वर्ड. (1922). *द हिस्ट्री ऑफ ह्यूमन मैरिज.* द एलरटन बुक कंपनी.

6.6 आपकी प्रगति जांचने हेतु उत्तर

1. क. जन्म द्वारा ख. विवाह द्वारा
2. रक्त संबधं
3. आत्मीय संबंध
4. खंड 6.1.2 को देखें
5. खंड 6.1.2 को देखें
6. खंड 6.1.3 को देखें
7. खंड 6.1.4 को देखें
8. खंड 6.1.4.1 एवं 6.1.4.2 को देखें
9. खंड 6.1.4.1 एवं 6.1.4.2 को देखें
10. खंड 6.1.5 को देखें
11. अभिविन्यास का परिवार और खरीद का परिवार
12. खंड 6.2.1 को देखें
13. खंड 6.2.1 को देखें
14. क. एकल विवाह प्रथा एवं ख. बहु–विवाह
15. खंड 6.3.2.1 को देखें
16. बहुपत्नीत्व, बहुपतित्व प्रथा, बहु–यौन संबंध प्रथा
17. खंड 6.3.3.1 को देखें
18. खंड 6.3.3.2 को देखें

इकाई 7 संस्था-II : आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक संस्थान

इकाई की रूपरेखा

7.0 प्रस्तावना

7.1 आर्थिक संस्थान

7.1.1 उत्पादन

7.1.2 उपभोग

7.1.3 विनिमय

7.2 राजनीतिक संस्थान

7.2.1 दल

7.2.2 वंशावली वाले समाज

7.2.3 प्रधान के नियंत्रणाधीन समाज

7.2.4 राज्य

7.3 धार्मिक संस्थान

7.4 सारांश

7.5 संदर्भ

7.6 आपकी प्रगति को जांचने हेतु उत्तर

अधिगम उद्देश्य

इस इकाई में आप उन सामाजिक संस्थानों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे जो किसी भी समाज के कार्यकाज में महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे समाज के सदस्यों को सामाजिक कार्यों के निष्पादन हेतु सक्षम बनाते हैं। जिन संस्थानों के बारे में हम चर्चा करेंगे वे इस प्रकार हैं:

- आर्थिक,
- राजनीतिक, और
- धार्मिक

7.0 प्रस्तावना

जब हम विभिन्न कार्यों के बारे में बात कर रहे होते हैं तब सामाजिक संस्थान शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें मनुष्यों द्वारा समाज के एक सदस्य के रूप में करना चाहिए। समाज के सदस्य के रूप में लोगों को सामाजिक पहचान और भोजन, आश्रय, सुरक्षा जैसी वस्तुओं को पूरा करने के तरीकों की आवश्यकता होती है तथा उन्हें अपने सार्थक जीवन की इच्छा को भी पूरा करना होता है। सभी समाजों को नियंत्रण के उपायों की आवश्यकता भी होती है ताकि वे इस बात को सुनिश्चित कर सकें कि समाज के सभी सदस्य मानदंडों और नियमों

योगकर्ता : प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

का अनुपालन करें जिससे समाज की परिकल्पना को सुनिश्चित किया जा सके। अन्य समूहों और समाजों से व्यवहार का तरीका भी महत्वपूर्ण है। एक मानव के रूप में हम लोगों में अधिकतम अथवा गूढ़ अंतर भी है जिसके कारण सभी मानव समाजों में कुछ अवधारणाओं का आदान–प्रदान होता है जिसे हम अन्य दुनिया की चिंताओं के रूप में जानते व समझते हैं। हम यहाँ इस बात की चर्चा करेंगे कि इन सभी आवश्यकताओं को समाज नामक संस्थानों के माध्यम से किस प्रकार पूरा किया जाता है और साथ ही यह भी जानकारी प्राप्त करेंगे कि किस प्रकार ये संस्थान अलग नहीं हैं अपितु समाज की प्रकृति अपने आप में व्यवस्थित होती है। संबंधों की दुनिया में अथार्त पारिवारिक संस्थानों में हम अपने परिवार और रिश्तेदारों की गणना करते हैं जो कि समाज के अपने आप में प्राथमिक संस्थान होते हैं क्योंकि हम किसी परिवार, सामाजिक समूह, जातीय समूह में अपने जन्म के समय से ही एक सामाजिक व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान प्राप्त कर लेते हैं। किसी समाज को तब सरल माना जाता है जब उसके विभिन्न संस्थानों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होता है। उदाहरण के लिए किसी सरल समाज में परिवार या घर आर्थिक इकाई के रूप में कार्य कर सकता है तथा जनजाति अथवा जाति (सामाजिक समूह) राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य कर सकती है। जैसे–जैसे समाज जटिल होता जाता है, शिक्षा जैसा कार्य केवल शिक्षा में दक्ष संस्थान ही पूरा करते हैं, जैसा कि हमारे आधुनिक समाज में होता है। परन्तु ज्यादातर पहले के शहरी समाजों में, शिक्षा देने का कार्य केवल और केवल परिवार और सामाजिक समूह का होता है। संस्थाओं के बीच यह अंतर इस बात का मुख्य परिचायक है कि कौन सा समाज सरल है अथवा कौन सा जटिल, परन्तु उनके बीच का यह अंतर किसी समाज की जीवन शैली या सांस्कृतिक जटिलता की गुणवत्ता को संदर्भित नहीं करता है, यह केवल समाज के स्तर को संदर्भित करता है और अक्सर उस समाज के जनसांख्यिकी को भी। आइए एक–एक करके इन सभी संस्थानों के बारे में चर्चा करते हैं।

7.1 आर्थिक संस्थान

आर्थिक संस्थानों के बारे में यह माना जाता है कि वे मानव संस्थानों हेतु सबसे बुनियादी होते हैं क्योंकि इसका संबंध मानव अस्तित्व से संबंधी बातों जैसे कि भोजन और मकान के प्रावधानों से जुड़ा होता है। परन्तु मानव के लिए केवल भोजन, कपडा और मकान के अतिरिक्त भी कई चीजों की जरूरत होती है। हम यहाँ यह देखेंगे कि आर्थिक संस्थान लोगों को एक–दूसरे से किस प्रकार जोड़ते हैं और संसाधनों के वितरण और नियंत्रण के आधार पर समाज में किस प्रकार की विभिन्न श्रेणियां और असमानतायें बनती हैं और वह भी केवल मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक नहीं है अपितु सामाजिक महत्व के पैमाने पर मनुष्यों को देखने के लिए यह जरूरी है।

आर्थिक संस्थानों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है, इस आधार पर कि वे अर्थव्यवस्था के किस पहलू से जुड़े हुए हैं। अर्थव्यवस्था की तीन श्रेणियां हैंः उत्पादन, उपभोग और आदान–प्रदान (विनिमय)। अधिक जटिल समाजों में हम इस श्रेणी में सामाजिक वितरण के पहलू को भी जोड़ते हैं। सरल समाजों में वितरण घर–परिवार तक ही सीमित रहता है।

7.1.1 उत्पादन

मानवजाति के इस्तेमाल हेतु प्राकृतिक संसाधनों का रूपांतरण का संबंध उत्पादन से है। उदाहरण के लिए उत्पादन में आवश्यक रूप से भोजन की प्राप्ति और आश्रय का प्रावधान शामिल है। परन्तु आगे चलकर उत्पादन केवल वस्तुओं की गतिविधि तक ही सीमित नहीं

रहता है अपितु यह अधिक जटिल हो सकता है और इसमें कई अलग–अलग उद्देश्यों के लिए उत्पादन शामिल हो सकता है, जैसा कि कार या कंप्यूटर का निर्माण भी अपने आप में एक प्रकार से उत्पादक गतिविधि है।

मूलभूत से लेकर जटिल तक सभी प्रकार के उत्पादन में प्रौद्योगिकी शामिल है। जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि उत्पादन या उत्पादक गतिविधियां वह होती हैं जिनमें हम अपने पर्यावरण से मानव के उपयोग योग्य सामग्रियों का चयन करके उन्हें मानव उपभोग के लिए परिवर्तित करते हैं। इसके लिए किसी को कुछ ज्ञान और कुछ तरीकों के इस्तेमाल की आवश्यकता होती है जिसकी सहायता से कच्चे माल (संसाधनों) के उपभोग्य वस्तुओं के रूप में परिवर्तन से संबंधित समस्याओं को हल किया जाता है। इसी ज्ञान को प्रौद्योगिकी कहा जाता है। जिसमे औजारों का निर्माण और लक्ष्य प्राप्ति हेतु उन औजारों का सही इस्तेमाल शामिल है। जानवरों का इस्तेमाल उपकरण के रूप में करके मानव विकसित हुआ है जिसका अर्थ है कि मानव केवल कच्ची प्राकृतिक सामग्री पर ही निर्भर नहीं हैं अपितु उसमें प्रकृति को बदलने की क्षमता है। यह क्षमता प्रौद्योगिकी का रूप धारण करती है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग जिसका रूप यादृच्छिक नहीं होता है अपितु यह सामाजिक संबंधों का एक व्यवस्थित पहलू होता है जिसे हम श्रम विभाजन कहते हैं। प्रौद्योगिकी का यह सामाजिक आयाम है जो अपने आप में सामाजिक पहचान का व्युत्पत्तिक और निर्धारक दोनों होता है। साधारण शब्दों में इसका तात्पर्य यह है कि 'कौन क्या करता है?' परन्तु वास्तविकता यह है कि इसका तात्पर्य इस प्रकार का श्रम विभाजन पद और प्रतिष्ठा को स्थापित करता है और सामाजिक विशेषाधिकार क्रम में लोगों की अवस्थिति का महत्वपूर्ण चर है। उदाहरण के लिए यह लैंगिंक और दूसरे प्रकार के सामाजिक भेदभाव के प्रमुख मानदंडों में से एक है। श्रम–विभाजन कई स्तरों पर मौजूद होता है और यह मूलभूत रूप से परिवार के स्तर पर भी पाया जाता है। हम सभी यह जानते हैं कि किसी भी परिवार में कुछ ऐसे कार्य होते हैं जो सामान्य तौर पर पुरुषों द्वारा किये जाते हैं और कुछ दूसरे कार्य होते हैं जिन्हें महिलाओं द्वारा किया जाता है। परन्तु यह विभाजन किस प्रकार किया जाता है यह उस क्षेत्र के समाज की संस्कृति अथवा वहां के समूह की प्रकृति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। चूंकि संस्कृति, समय के साथ–साथ परिवर्तित होती रहती है इसलिए श्रम–विभाजन भी बदलता रहता है। उदाहरण के लिए आज महिलाएं कई कार्य कर रही हैं जैसे कि हवाई जहाज को उड़ाना और पुलिस की नौकरी करना जो कि वह पचास साल पहले नहीं करती थीं। यद्यपि लैंगिकता और आयु दो मूलभूत सिद्धांत हैं जिनके आधार पर श्रम विभाजन किया जाता है, हम श्रम विभाजन के बारे में दूसरे स्तर और जटिल प्रक्रियाओं को भी पाते हैं। भारतीय जातिप्रणाली श्रम के सामाजिक विभाजन की सबसे विस्तृत प्रणालियों में से एक है, जहां व्यवसायों को विभिन्न समुदायों के वंशानुगत व्यवसाय से जोड़कर देखा जाता है। केवल उनके व्यवसाय ही नहीं निर्धारित किए जाते अपितु उनके सामाजिक स्तर को भी निर्धारित किया जाता है।

यह भी ध्यातव्य है कि मनुष्य के रूप में हम संस्कृति के आधार पर सब चीजों को देखते हैं जिसका अर्थ यह है कि उन चीजों के लिए हम अर्थ और मूल्य निर्दिष्ट करते हैं जो उनका उद्देश्यात्मक गुणों का आवश्यक पहलू नहीं होता है। यह बात श्रम विभाजन पर भी लागू होती है। किसी समेकित समाज में सभी कार्यों का संबंध प्रतिष्ठा मूल्य और असमान पुरस्कारों से जुड़ा हुआ होता है। इसलिए किसी कार्यालय में चपरासी को वहां के प्रबंधक की तुलना में बहुत कम वेतनमान का भुगतान किया जाता है क्योंकि चपरासी के कार्य को कम महत्व दिया जाता है परन्तु इस प्रकार का अंतर किसी वास्तविक अंतर को प्रतिबिंबित नहीं करता है अपितु

यह मूल्यांकन सांस्कृतिक रूप से निर्धारित मानदंड को ही दर्शाता है। उदाहरण के लिए शिकार करके भोजन एकत्र करने वाले समाजों में महिलाओं द्वारा भोजन एकत्रित करने की गतिविधियों को पुरुषों की गतिविधियों की तुलना में कम महत्त्व दिया जाता है, परन्तु यह माना जाता है कि महिलाओं की एकत्रित गतिविधियों का वास्तविक कैलोरी मूल्य अधिक होता है। वे पुरुषों की छिट–पुट शिकार गतिविधियों की तुलना में आपूर्ति के लिहाज से अधिक नियमित होती हैं, जिससे केवल महिलाओं द्वारा ही मूल पोषण की आपूर्ति की जाती है।

इसी प्रकार इसे हम अक्सर उच्च स्तरीय या निम्न स्तरीय प्रौद्योगिकी के रूप में सुनते है परन्तु यह बात भी भ्रामक है। यहां तक कि शिकार करके भोजन एकत्र करने वाले समुदायों की भांति साधारण लोगों में भी ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के प्रत्यावर्ती बाण की भांति उच्च स्तर का ज्ञान होता है जिसमें वायुगतिकीय के विशद ज्ञान शामिल हैं। यहाँ तक कि पत्थर की कुल्हाड़ी बनाने के लिए भी उच्च स्तर की विशेषज्ञता चाहिए होती है। सरल और जटिल तकनीक के बीच का अंतर केवल संगठनों की जटिलता और विभिन्नता के चरण का होना है। जब कोई शिकारी तीर–धनुष बनाता है तो वह शुरु से अंत तक इस प्रक्रिया में शामिल होता है परन्तु जब किसी मोटरकार का निर्माण होता है तो इसमें सैकड़ों लोग शामिल होते हैं और निर्माण के कई स्तर होते हैं तथा इस विनिर्माण प्रक्रिया में शामिल सभी लोगों के बीच कोई संबंध नहीं होता है।

7.1.2 उपभोग

अगली प्रक्रिया उपभोग है। इसमें संसाधनों का सामाजिक वितरण और हक शामिल है। उत्पादन के लिए यह प्रश्न पूछा जा सकता था कि श्कौन क्या करता है?" और उपभोग के सन्दर्भ में यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि "कौन क्या प्राप्त करता है?" सामाजिक अवसरों और सांस्कृतिक मानदंडों के आधार पर विभिन्न प्रकार से उपभोग किया जाता है। मुख्य रूप से उपभोग दो प्रकार का होता हैः जीवन निर्वाह से संबंधित और विशिष्ठता से संबंधित।

जीवन निर्वाह से संबंधित उपभोग का तात्पर्य भोजन, आवास, औषधि जैसी मूलभूत आवश्यकताओं का उपभोग करना तथा औजार एवं उपकरण बनाने के लिए संसाधनों का रूपांतरण है। सबसे सरल ज्ञात समाज वे होते हैं जिनमें उपभोग के लिए आवश्यक संसाधन 'निशुल्क वस्तुएं' होती हैं। ये वे लोग होते हैं जो जंगलों, रेगिस्तानों और पहाड़ों पर रहते हैं, जहां उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति उस वातावरण में पाई जाने वाली वस्तुओं से हो जाती है और उन वस्तुओं का इस्तेमाल उनमें से कोई भी व्यक्ति कर सकता है और वह भी किसी प्रकार से खरीदकर या भुगतान करके नहीं। हालांकि, इस प्रकार के समाज भी दुर्लभ हो रहे हैं क्योंकि आज के दौर में वनों सहित अधिकांश संसाधन किसी राज्य या केंद्रशासित सत्ता के नियंत्रण में हैं। लोग जो भी उत्पादन करते हैं चाहे वह अनाज हो या पशु उत्पाद, कपड़े अथवा कलाकृतियां, उनका या तो वे स्वयं उपभोग करते हैं या किसी अन्य चीज के लिए उन वस्तुओं का आदान–प्रदान करते हैं। उन्हें अपने मकान बनाने हेतु कुछ संसाधनों की जरुरत हो सकती है अथवा उन्हें अपने खेतों और चरागाहों के किराए के भुगतान के लिए कुछ संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है और उन्हें अपने सड़े–गले, टूटे–फूटे अथवा जो प्रयोग में न आ सके ऐसी वस्तुओं को बदलने के लिए भी कुछ संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है। बहुत से समाजों में घर ही उत्पादन और उपभोग की इकाई है जैसे कि किसानों और कारीगरों के घर में संसाधनों का मुश्किल से बराबर–बराबर विभाजन होता है। बहुत से समाजों में एक ही घर के सदस्यों को पसंदीदा खाद्य पदार्थों और खास संसाधनों का असमान हिस्सा प्राप्त हो सकता

है। उदाहरण के लिए शिकारी समाज में भी, जिस जानवर को खाया जाना है उसे उस समाज से सदस्यों के बीच उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और संबंध के आधार पर विभाजित किया जाता है।

ज्यादातर समाजों में संसाधनों की बहुलता होती है जिससे ऐसी चीजों का उत्पादन होता है जिसे विशिष्ट उपभोग के रूप में जाना जाता है। अपनी प्रतिष्ठा हेतु कई कार्य किये जाते हैं जैसे कि, हमारे समाज में लोग शादी–ब्याह में अत्यधिक पैसा खर्च करते हैं अथवा दूसरे समाजों में कई लोग विभिन्न अनुष्ठानों के नाम पर पैसा खर्च करते हैं। इनका संबंध किसी भी मूलभूत आवश्यकताओं से नहीं है अपितु केवल प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए वे ऐसा करते हैं।

7.1.3 विनिमय (आदान–प्रदान)

अर्थव्यवस्था का तीसरा पहलू आदान–प्रदान (विनिमय) है। इसे समाज के निर्माण हेतु एक मौलिक सिद्धांत के रूप में भी देखा गया है। यदि सभी लोग आत्मनिर्भर होते तो संबंधों की कोई आवश्यकता नहीं होती। विनिमय पारस्परिक आदान–प्रदान, पुनर्वितरण और बाजार के सिद्धांत पर आधारित हो सकता है। सहलिन्स (1972) के अनुसार तीन प्रकार का पारस्परिक आदान–प्रदान हो सकता हैय सामान्यीकृत, संतुलित और नकारात्मक । पारस्परिक आदान–प्रदान का तात्पर्य उस आदान–प्रदान से होता है जो कि भावात्मक रूप से एक–दूसरे से जुड़े लोगों के बीच होता है जहाँ कोई गणना शामिल नहीं होती है, जैसे कि किसी परिवार के सदस्यों या मित्र मण्डली या फोर्जिंग बैंड के सदस्यों के बीच। जोकि अपने आप में प्राथमिक समूह होते हैं। उपहार देना एक प्रकार से सामान्यकृत आदान–प्रदान है। संतुलित आदान–प्रदान वहां होता है जहाँ आदान–प्रदान की जाने वाली वस्तुओं के मूल्य की सावधानीपूर्वक तुलना की जाती है। जैसे कि जब लोग किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु से बदलते हैं अथवा सामान्यीकृत माध्यम से उसे बदलते हैं। कई समाजों में कुछ वस्तुएं जैसे कि गाय, सूअर अथवा केलों का इस्तेमाल आदान–प्रदान की वस्तुओं के रूप में किया जाता है। नकारात्मक आदान–प्रदान वस्तुओं के विरुद्ध सत्ता का संतुलन है, जैसे कि किसी प्रमुख को श्रद्धांजलि देना अथवा किसी ओझा–गुणी या देवी–देवता को अर्घ्य अर्पित करना। यहां पर वस्तुओं का आदान–प्रदान किसी फल की प्राप्ति के लिए जाता है अथवा दूसरे व्यक्ति की श्रेष्ठता को स्वीकार करने हेतु भी ऐसा किया जाता है। आधुनिक समाज में किसी व्यक्ति द्वारा अपने बॉस को दिए जाने वाले उपहार से इस प्रकार के आदान–प्रदान की तुलना की जा सकती है।

अनुष्ठानिक विनिमयः कुला, ट्रोब्रिएंड द्वीप के लोगों के बीच विनिमय प्रणाली है। विनिमय की यह प्रणाली उच्च मूल्यों की एक रिंग के विनिमय के साथ पूरे अंतर–द्वीप पर वार्षिक समारोह के रूप में मनाई जाती है। मालिनोव्स्की ने ट्रोब्रिएंड द्वीप समूह में कंगन और हार के साथ आदान–प्रदान के नेटवर्क का पता लगाया, और यह स्थापित किया कि वे विनिमय प्रणाली (कुला रिंग) का हिस्सा थे, और यह विनिमय प्रणाली स्पष्ट रूप से राजनीतिक / सामाजिक प्राधिकरण से जुड़ी थी।

पुनर्वितरण, विनिमय का एक विशिष्ट स्वरूप है जहां वस्तुओं को सबसे पहले किसी केंद्रीय स्थल पर एकत्र किया जाता है और फिर उसका वितरण कई लोगों में किया जाता है। भारत में परंपरागत जजमानी प्रणाली पुनर्वितरण का एक रूप थी। किसी कृषक गांव में अनाज उत्पादित करने वाले सभी घरों से कुछ अनाज एकत्रित करके उन घरों में वितरित किया जाता

था जिनमें खेती नहीं होती थी जैसे कि ब्राह्मण, चर्मकार, नाई और अन्य कारीगर तथा सुविधाप्रदाता। कुछ जनजातीय समाजों में उस समाज के प्रधान को उसके लिए दी गई श्रद्धांजलि के बदले लोगों की दावत की व्यवस्था करनी होती थी। पुनर्वितरण प्रणाली में वस्तुओं को एकत्रित तो किया जाता है परन्तु उन्हें किसी एक ही व्यक्ति द्वारा उपभोग नहीं किया जाता हैय अपितु उन वस्तुओं को आगे पुनर्वितरित किया जाता है और यह कार्य जो व्यक्ति करता है वह बदले में प्रतिष्ठा और पद प्राप्त करता है।

विनिमय के अंतिम रूप, बाजार विनिमय में वस्तुओं का प्रसार मूल्यांकन के सामान्य सिद्धांतो के स्थान पर सामान्यीकृत माध्यम से होता है। पूर्व–औद्योगिक समाजों में बाजार का तात्पर्य स्थान, बाजार स्थल, निर्धारित स्थल से होता था जहां लोग अपनी वस्तुओं का आदान–प्रदान करने के लिए आते थे। आज बाजार विनिमय का एक सिद्धांत भी है जो पूंजीवादी समाज को दर्शाता है। पैसा, विनिमय का समकालीन माध्यम है जिसने सभी वस्तुओं को बिक्री योग्य (कमोडिफाईड) बना दिया है।

आर्थिक प्रणाली समाज के अन्य संस्थानों से अलग नहीं हुई है। यह आज भी राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक और अन्य सभी संस्थानों से जुडी हुई है। आइए अब अगले सामाजिक संस्थान जिसका नाम राजनीतिक संस्थान है उसके बारे में चर्चा करें ।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. आर्थिक संस्थानों की तीन मूलभूत श्रेणियाँ कौन सी होती हैं?

....

....

....

2. श्रम–विभाजन क्या है?

....

....

....

3. उपभोग के दो प्रकार कौन से होते हैं?

....

....

....

....

4. 'निशुल्क वस्तुओं' का क्या अर्थ है?

....

....

....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

5. सरल समाजों में विनिमय के माध्यम के रूप में उपयोग की जाने वाली कुछ वस्तुओं का नाम बताएं?

....

....

....

7.2 राजनीतिक संस्थान

सभी समाजों का गठन व्यक्तियों से होता है ,परन्तु वे सामाजिक मानदंड अथवा नियम जो लोगों को आपस में जोड़ते हैं उसके लिए अक्सर इस बात की आवश्यकता होती है कि लोगों को व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर समूह के बारे में ध्यान देना होगा। किसी भी समाज के राजनीतिक संस्थान को समूह के अंदर और बाहर सामाजिक संबंधों के विनियमन और प्रबधन से संबंधित प्रश्नों से निपटना होता है। राजनीतिक संस्थानों को सत्ता से निपटना होता है क्योंकि इन संबंधों के प्रबंधन में प्रत्यक्ष या परोक्ष दबाव शामिल हो सकता है। किसी छोटे समाज में अथवा दल में बुजुर्ग लोगों हेतु कोई निर्दिष्ट राजनीतिक संस्थान के न होने की संभावना हो सकती है परन्तु बड़े समाजों में राजनितिक संस्थानो के विभिन्न रूप पाए जा सकते हैं जोकि उस समाज को सुचारू रूप से चलाते हों और विनियमित करते हो तथा उसके बाह्य संबंध को प्रबंधित करते हों। विनियमन के लिए प्राधिकार को लागू करने की आवश्यकता होती है। प्राधिकार का तात्पर्य शक्ति का वैध उपयोग है। इस प्रकार प्राधिकरण को उसके क्रूर बल के आधार पर अलग किया जा सकता है जिसमें प्राधिकरण की शक्ति को समाज के सभी सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से पहचाना जाता है और स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार परिवार स्तर से लेकर राज्य स्तर तक प्राधिकार के कुछ रूपों को पहचाना जाता है और जिन लोगों के पास यह प्राधिकार होता है उनकी यह जिम्मेदारी होती है कि समाज को सुचारू रूप से चलने हेतु उसके मानदंडों और मूल्यों का रख–रखाव करें ।

समाज की जटिल प्रकृति के आधार पर कोई भी व्यक्ति भिन्न–भिन्न प्रकार के राजनीतिक संस्थानों को बना सकता है। जो व्यापक रूप से प्रचलित है वह है दल, वंशावली वाले समाज, प्रधान के नियंत्रणाधीन समाज तथा राज्य। नेतृत्वहीन समाज की अवधारणा की शुरुआत ई. ई. इवान्स प्रिचर्ड और मेयर फोर्ट्स (1940) द्वारा उनके मौलिक कृति अफ्रीकन पोलिटिकल सिस्टम में किया गया जिसका अर्थ है पहचान न किया जाने योग्य राज्य या राजनीतिक संस्थान। उन्होंने इस अवधारणा का इस्तेमाल उन समाजों को संबोधित करने के लिए किया जिनका कोई राज्य नहीं था परन्तु उनके द्वारा राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ज्यादातर वंशावली वाले राज्यों का इस्तेमाल किया जाता था।

7.2.1 दल (बैंड)

दल (बैंड) की भांति प्राथमिक समूह जैसे सम्मुख समाजों में, जिनका आकार बहुत छोटा होता है, नियामक कार्यों को सहमति के साथ समूचे समूह द्वारा एक जुट होकर किया जाता है। जब भी कोई निर्णय लेना होता है और वह निर्णय चाहे उस जनजाति के किसी सदस्य के दुर्व्यवहार से संबंधित हो, या किसी अन्य जनजाति के साथ संबंधों के बारे में हो, जनजाति के सभी सदस्य सामूहिक रूप से सर्वसम्मति के साथ यह निर्णय लेते हैं कि क्या किया जाना है। चूंकि सम्मुख समाजों में कोई असमानता नहीं होती है इसलिए उन समाजों में किसी भी

व्यक्ति को उच्च स्थान प्रदान करके राजनीतिक कार्यों के निर्वहन के लिए प्राधिकृत नहीं किया जाता है। यह इसलिए भी होता है कि इन समाजों का आकार छोटा होता है और ये समाज के प्राथमिक समूह होते हैं, जिनमें निर्णय लेने के लिए प्रत्यक्ष वार्तालाप होने की संभावना होती है।

हमेशा से अलौकिक अथवा सुपर ह्यूमेन, आत्माओं और देवी–देवताओं की बातें सुनने में आती रही हैं जो किसी ओझा–गुणी के शरीर या किसी पसंदीदा व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करके अपनी राय के बारे में सबको अवगत करा सकते हैं। परन्तु ये ओझा–गुणी केवल अलौकिक शक्ति के बल पर कार्य कर सकते हैं परन्तु उनमें किसी भी प्रकार की कोई शक्ति नहीं होती है। सामान्य समय में (उस समय जब उन पर कोई हावी नहीं होता है) या जब उन पर कोई बाह्य शक्ति का प्रभाव नहीं होता है, तब उन्हें समाज के आम सदस्य की तरह ही माना जाता है।

7.2.2 वंशावली वाले समाज

दूसरे स्तर पर वंशावली वाले समाज आते हैं जिसमें यूनिलीनियर वंशावली समूह शामिल हो सकते हैं। जो कानूनी और राजनीतिक इकाइयों के रूप में भी कार्य करते हों। उदाहरण के लिए ऐसे समूहों को नुएर (1940) में ई.ई. इवांस प्रिचर्ड द्वारा उल्लेखित किया गया है। जैसा कि मेयर फोर्ट्स (1969) द्वारा वर्णित किया गया है, वंशावली का यूनिलीनियल सिद्धांत कभी–कभी यूनिलीनियल वंश समूहों का विकास कर सकता है क्योंकि सभी सदस्यों का संबध अपने वंशजों तक ही सीमित रहता है। इस प्रकार ये बाध्य समूह एक कॉर्पोरेट के रूप में कार्य करता है जिसका संपत्ति पर प्राधिकार होता है और जो सामुहिक संपत्ति को नियंत्रित और प्रबंधित करते हैं। इस प्रकार के संगठन की एक विशेषता यह होती है कि उसके सभी सदस्यों में सामाजिक समानता होती है और उनमें एकता का सिद्धांत होता है। इस प्रकार एक पीढ़ी की वंशावली के सभी लोग सामाजिक उद्देश्यों हेतु एक बराबर होते हैं और सभी महिलाएं भी उन्हीं के बराबर होती हैं। इससे देवर विवाह(लेविरेट) और सालीविवाह (सोरोरेट) के रीति–रिवाज का प्रादुर्भाव होता है।

लेविरेटः लेविरेट विवाह एक प्रकार का विवाह है जिसमें मृत व्यक्ति का भाई अपने भाई की विधवा से विवाह करने के लिए बाध्य होता है। *लेविरेट* शब्द अपने आप में लैटिन शब्द लेविर का व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है, पति का भाईश।

सोरोरेटः एक विवाह जिसमें एक पति अपनी पत्नी की बहन के साथ शादी या यौन संबंधों में संलग्न होता है, आमतौर पर उसकी पत्नी की मृत्यु के बाद, या अगर उसकी पत्नी बांझ है।

वंश समूह के बुजुर्गों द्वारा वंशावली समूह की संपत्ति और उसके आंतरिक एवं बाह्य संबंधों को प्रबंधित किया जाता है। वंश समूह के बुजुर्ग विवादों को निपटाते हैं, वंश में शादी ब्याह के लिए बातचीत करते हैं और अन्य समूहों को अपने साथ मिलाकर युद्ध में जाते हैं, शांति कायम करते हैं तथा समूह से संबंधित दूसरी गतिविधियों को अंजाम देते हैं। प्रत्येक वंश समूह राजनीतिक और सामाजिक रूप से एक समान है और क्योंकि समूचे जनजाति को ऐसे कई समूहों में बांटा जा सकता है। इसलिए इस प्रकार के समाज को सेगमेंटरी वंश प्रणाली के नाम से जाना जाता है। सेगमेंट को एक समान रखने हेतु लोगों और संसाधनों के पुनर्वितरण के बहुत जटिल तंत्र होते हैं। अपने क्लासिक कृति पिग्स फॉर द एन्सिस्टर्स(1968) में रॉय रैपपोर्ट ने उल्लेख किया है कि न्यू गुयाना के सेमबेगा में किस प्रकार इसका निर्धारण होता है। वह

यह भी उल्लेख करते हैं कि किस प्रकार अंतर–समूह युद्ध, सुअर की बलि और पूर्वजों की पूजा के संयोजन से भूमि को पुनर्वितरित करने तथा सूअरों और लोगों को बढ़ते क्षेत्रों से छुटकारा पाने में सहायता मिलती है और किस प्रकार समय–समय पर व्यवस्था को कायम रखा जाता है ताकि मानवों और प्रकृति के बीच समंजस्य बना रहे ।

7.2.3 प्रधान के नियंत्रणाधीन समाज

हम समतावादी समाजों में ऐसे समाजों में जाते हैं जो अत्यधिक संगठित होते हैं और जिनमें चिन्हित किए जा सकने योग्य राजनीतिक संस्थान होते हैं। बहुत से आदिवासी समाजों में प्रमुखों यानि की मुखिया की संस्था मौजूद है। इस प्रकार के ज़्यादातर समाजों में प्रधान सामान्य लोंगों की तुलना में थोड़ा सा अधिक ऊंचे ओहदे वाला व्यक्ति होता है। प्रधान बनने के लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति के पास वह गुण होना चाहिए जिसके बल पर वह अपने लिए अनुयायियों को एकत्रित कर सके। यह तभी संभव है जब लोगों को दावत दी जाए अथवा लोगों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले अनुष्ठान किए जाएँ। इस प्रकार के ज़्यादातर समाजों मे उच्च पद का सपना सँजोने वाले व्यक्ति द्वारा अपने द्वारा संचित वस्तुओं का स्वंय उपभोग न करके उन वस्तुओं को वितरित किया जाता है। इन वस्तुओं का इस्तेमाल सामूहिक भोज में किया जाता है अथवा शानदार पोटलैच जैसे अनुष्ठान मे किया जाता है, जैसा कि अमेरिका के उत्तर पश्चिमी तट के स्थानीय भारतियों द्वारा किया जाता है।

प्रतिबिंब

पोटलैच विशिष्ट प्रदर्शन का पर्याय बन चुका है तथा वास्तव मे यह उस व्यक्ति का पर्याय बन चुका है जो अपनी योग्यता और ताकत को दिखाने के लिए अधिक मात्रा में रतालू, सूअर, कंबल के साथ साथ तांबा और दासों को रखते हैं। इनमें से ज़्यादातर सामानों का उपभोग समूहिक रूप से किया जाता और उन्हें एकत्रित करने वाले व्यक्ति की क्षमता को दिखाने के लिए उन सामानों को नष्ट कर दिया जाता या किसी अन्य व्यक्ति को दे दिया जाता है। वस्तुओं का यह प्रसार और कई बार उनकी बर्बादी उस व्यक्ति को वैधता प्रदान करता था जो ऊंचे पद का दावा करते थे ।

हालांकि वास्तविक पदानुक्रमित समाज से रैंक समाज भिन्न होते हैं क्योंकि उन समाजों मे उच्च पद के किसी भी व्यक्ति को अमीर नहीं रहने दिया गया अथवा उनके पास दूसरे लोगों को नियंत्रित करने वाली कोई वास्तविक ताकत नहीं थी। किसी भी व्यक्ति का उच्च पद इस बात पर निर्भर करता था कि उनके पास अपने पद को कठोर मेहनत और प्रबंधन द्वारा कायम रखने की क्षमता हो। अपनी क्लासिकल कृति पॉलीटिकल सिस्टम ऑफ हाईलैंड बर्मा में एडमंड लीच (1954) ने हाइलैंड बर्मा के बारे में लोगों से संबंधित अपने अध्ययन के माध्यम से दोलन के संतुलन अवधारणा को प्रस्तुत किया जो कि पहाड़ी छोर पर स्थानांतरण कृषि करते थे और जिनका समाज गुम्सा (संगठित सरदार) और गुमलाव (अराजकता) के बीच स्थानांतरित होते रहते थे, या आते जाते रहते थे। क्योंकि मुखिया अपनी शक्ति को प्राप्त करते रहते थे और खोते भी रहते थे ।

किसी भी संगठित केंद्रीकृत राजनीतिक प्राधिकरण के निर्माण की कमी का एक कारण समाज का उत्पादन अथवा निर्वाह आधार है जहां पर वास्तविक अधिशेष का उत्पादन नहीं होता है। इसके विपरीत स्थिति को भी सच माना जा सकता है क्योंकि जिन समाजों में केंद्रीकृत राजनीतिक संगठन की कमी होती है और उन्हें श्रद्धांजलि देने की जरूरत नहीं होती है; उन्हें

निर्वाह योग्य से अधिक उत्पादन करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता है। इस प्रकार शिकार वाले समाजों में हजारों हजार बीजों को एकत्रित नहीं किया जाता है और भूमि पर सड़ने के लिए छोड़ा जा सकता है तथा बागवानी करने वाले समाजों में भी बड़ी मात्रा में कंद–मूल को नहीं निकाला जाता है और उन्हें जमीन के अंदर ही छोड़ दिया जाता है ।

7.2.4 राज्य

कोई केंद्रीकृत राज्य तब प्रकट होता है जब गैर–उत्पादक अभिजात वर्ग का समर्थन करने के लिए अधिशेष का उत्पादन करने की पर्याप्त क्षमता होती है। वास्तविक शक्तिशाली अभिजात वर्ग को इस तथ्य से पहचाना जाता है कि वे दूसरों के कार्य से दूर रहते हैं। किसी साधारण आदिवासी समाज में मुखिया अपने साथियों के साथ खेतों में कार्य करता है और इसलिए उनकी पत्नियां भी ऐसा करती हैं। लेकिन किसी सच्चे केंद्रीकृत प्रणाली में, जो वास्तविक शक्ति रखते हैं, वे उस शक्ति का उपयोग दूसरों से यह सब करवाने में सक्षम होते हैं, न केवल अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए, अपितु अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए बड़ी मात्रा में अधिशेष को भी उत्पादित करने में।

राज्य गठन के अनेक सिद्धांत हैं। विरोधाभास यह है कि जिन लोगों को पदानुक्रम की धारणा के लिए उपयोग नहीं किया जाता है और जो स्वतंत्र जीवन व्यतीत करते हैं वे दूसरों की शक्ति के तहत आने के लिए सहमत हैं। एक सिद्धांत जीतने का है, कि यदि कोई समूह दूसरों पर विजय प्राप्त कर लेता है, तो विजयी समूह को जीतने वालों को दास या निम्न तबके में बदलने की संभावना होती है, जिससे वे उनके लिए उत्पादन करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। एक अन्य संबद्ध सिद्धांत पारिस्थितिक अवरोधों का भी है। इस प्रकार कोई विजित व्यक्ति उस समय केवल गुलाम बनकर रह जाएगा यदि वह बच नहीं सकता है और वह भी यदि वे समुद्र, या पहाड़ों या रेगिस्तान द्वारा प्रतिबंधित हों, जिसके पार जाना उनके लिए आसान नहीं हो । आंतरिक विकास पर आधारित एक और सिद्धांत है जो इस बात की परिकल्पना करता है कि किसी भी समाज में शिल्प कौशल या बेहतर कौशल और ज्ञान वाले व्यक्ति होंगे, जिन्हें शुरू में समूह श्रेष्ठता के लिए स्वेच्छा से समर्थन देता। लेकिन बाद में इस तरह के समूह अपनी सीमाओं को बंद कर सकते हैं, और यहाँ तक कि अपनी श्रेष्ठता का दावा कर सकते हैं और वंशानुगत वंशावली बना सकते हैं, जो दिव्य वंश का दावा करते हैं।

समाज को उच्च और निम्न समूहों में बांटने के लिए किसी भी मामले में अधिशेष भोजन और अन्य सामग्रियों की निरंतर आपूर्ति की आवश्यकता है। चूंकि कुलीन वर्ग सत्ता में आते हैं, वे अपनी श्रेष्ठता को मजबूत करने के लिए इस सामग्री का उपयोग करते हैं। कार्ल विटफोगेल ने हाइड्रोलिक सभ्यताओं के रूप में उनके संदर्भ का वर्णन किया है।

प्रतिबिंब

हाइड्रोलिक सभ्यताएं: इस प्रकार के राज्य महान नदियों के किनारों पर विकसित हुए जहाँ सिंचाई करने वाले नहरों के निर्माण के आधार पर स्थायी खेती के लिए इन नदियों के जल और उपजाऊ किनारों बैंकों का उपयोग किया जाता था। हालाँकि, बांधों और नहरों के निर्माण के लिए जो श्रम लगाया गया था, उसे बाद में कुलीनों द्वारा प्राचीन मिस्र की सभ्यता में पिरामिडों और मंदिरों की तरह अपने महलों और श्रेष्ठता के प्रतीकों के निर्माण में इस्तेमाल किया गया ।

जब कोई राज्य एक बार बन जाता है, तो पूर्ण राजनीतिक दलों के साथ शासक के रूप में शासक शक्तियां, उसकी परिषदें, उसकी सेना और पुलिस आकार लेती हैं। किसी कार्यकाजी राज्य की एक अनिवार्य आवश्यकता करों का संग्रहण है और कोरवी या अनिवार्य श्रम तक पहुंच है। इसके लिए वास्तविक बल के उपयोग की आवश्यकता होती है और पुलिस और बलपूर्वक संस्थानों जैसे कर्मियों को लागू करने की आवश्यकता होती है। केंद्रीकृत राज्य अधिशेष का उपयोग करता है या उसका उपभोग करता है जिसे वह विशिष्ट उपभोग के अपने उद्देश्यों के लिए निकालता है और प्रदर्शित भी करता है।

मुखिया और राज्य जैसे संस्थानों में सत्ता के संगठन के साथ–साथ, राजनीतिक संस्थानों के दायरे भी सत्ता की प्रकृति से निपटते हैं। वेबर (1946) के अनुसार, तीन प्रकार के अधिकार होते हैं जिन्हें समाज में मान्यता दी जा सकती हैय वे हैं: पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानून। मेलेनिशया के बड़े पुरुषों की तरह अपेक्षाकृत समतावादी समाजों में, नेतृत्व को करिश्माई के रूप में चित्रित किया जा सकता है जो कि नेता द्वारा उसके अपने गुणों द्वारा अर्जित किया जाता है। जो लोग नेता बन जाते हैं या अपने स्वयं के व्यक्तित्व द्वारा सत्ता हासिल करते हैं उन्हें करिश्माई के रूप में जाना जाता है। ऐसे लोगों में चुंबकीय व्यक्तित्व होता है जो लोगों को उनकी ओर खींचता है। जिन लोगों को हम नबियों या राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नेताओं के रूप में पहचानते हैं, उन्हें हम करिश्माई नेता कह सकते हैं। पारंपरिक नेतृत्व एक निर्दिष्ट स्थिति होती है जो आमतौर पर किसी व्यक्ति द्वारा कुछ सांस्कृतिक रूप से सौंपे गए चरित्र के द्वारा विरासत में मिलती है या प्राप्त की जाती है। यहां पर हम दलाई लामा का उदाहरण ले सकते हैं जिन्हें कुछ हद तक सांस्कृतिक रूप से निर्धारित गुणों के कारण एक शिशु के रूप में उनकी भूमिका के लिए चुना गया है। तर्कसंगत–कानूनी अधिकार पारंपरिक राज्य अथवा सामंती समाजों में पाया जाता है और यह आधुनिक समाज का अभिन्न अंग है। यह कार्यालय के पदाधिकारियों, नौकरशाहों और विभिन्न कर्मचारियों के बीच पाए गए वैध अधिकार का एक अर्जित रूप है, जो समाज द्वारा किए जाने वाले विभिन्न आवश्यक कार्यों का प्रभार लेने में सक्षम होते हैं।

यद्यपि विश्लेषणात्मक रूप से ये विभिन्न प्रकार के नेतृत्व होते हैं पर वास्तविकता यह है कि इनमें से एक से अधिक गुण किसी व्यक्ति में पाए जा सकते हैं, उदाहरण के लिए कोई पारंपरिक नेता भी करिश्माई हो सकता है और इसलिए वह एक तर्कसंगत–कानूनी नेता हो सकता है। कोई पारंपरिक नेता तर्कसंगत–कानूनी योग्यता भी हासिल कर सकता है।

अपनी प्रगति की जांच करें 2

6. व्यापक रूप से प्रचलित राजनीतिक संस्थानों का प्रारूप बताएं।

   ....

   ....

   ....

7. नेतृत्वहीन समाज शब्द की शुरुआत किसने की?

   ....

   ....

   ....

8. दल (बैंड) समाज में निर्णय लेने की प्रक्रिया के बारे में चर्चा करें।

....

....

....

....

9. *पिग्स फॉर द एन्सिस्टर्स* के लेखक कौन हैं ?

....

....

....

10. हाइलैंड बर्मा के निवासियों पर आधारित एडमंड लीच की कृति का नाम बताएं।

....

....

....

11. दोलन संतुलन का संक्षेप में वर्णन करें।

....

....

....

12. हाइड्रोलिक सभ्यता की अवधारणा किसने दी?

....

....

....

13. वेबर द्वारा वर्णित तीन प्रकार के अधिकार कौन से हैं?

....

....

....

7.3 धार्मिक संस्थान

नातेदारी की भांति, धर्म मानव समाज का एक अनिवार्य पहलू है और यह मानव मस्तिष्क के विशेष गुणों और अमूर्त सोच एक कल्पना के लिए होमो सेपियन्स की क्षमता में स्थित है। धर्म का विश्लेषण एक सामाजिक संस्था के रूप में, मानव समाजों में महत्वपूर्ण कार्यों के लिए किया गया है। मिस्र और चीन में उन लोगों की भांति प्राचीन राज्य धार्मिक राज्य थे अथवा शासक

के व्यक्ति को दिव्य व्यक्ति माना जाता था। प्राचीन भारत में, शक्ति को विभिन्न वर्णों के लोगों के बीच बांटा गया था, इसलिए धर्मनिरपेक्ष शक्ति राजा में होती थी पर ब्राह्मण द्वारा दिव्य शक्ति को नियंत्रित किया जाता था।

धर्म के दो पहलू हैं: मान्यताएँ और प्रथाएँ। इनमें से पहले वाला किसी भी समाज के लिए जीवन, मृत्यु, अस्तित्व के अर्थ, दुनिया की प्रकृति, मनुष्यों के स्थान, गैर–मानव एक प्रकृति और उनके एक–दूसरे के साथ संबंध के बारे में स्पष्टीकरण देते हुए ब्रह्मांड संबंधी आधार प्रदान करता है। यहां तक कि मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत धर्म को मानव की मानसिकता के एक अनिवार्य घटक, अति–अहंकार या नैतिक व्यवहार की क्षमता प्रदान करने के रूप में पहचानता है।

एक संस्था के रूप में धर्म में सामाजिक प्राणियों को सही जगह पर रखने के लिए सबसे शक्तिशाली नियामक कार्य है। जैसा कि दुर्खीम (1915) ने ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के कुल धार्मिक अनुष्ठानों के अपने विश्लेषण के आधार पर सिद्धांतबद्ध किया था, जिसे लोग धार्मिक मानते हैं, वास्तव में वह सामाजिक है। इस प्रकार धार्मिक विश्वास समाज के हितों की रक्षा करते हैं, और धार्मिक अनुष्ठान सामाजिक एकजुटता को कायम रखने का कार्य करते हैं। धार्मिक विश्वासों और अनुष्ठानों की शक्ति उनके संबंध में निहित है जिसे मनुष्य सबसे बेहतर और शक्तिशाली, पवित्र या अन्य सांसारिक क्षेत्र मानते हैं। उन सभी घटनाओं को मनुष्य धार्मिकता प्रदान करते हैं जिन्हें वे अपने ज्ञान और अनुभव से नहीं समझा सकते हैं। धर्म, दुख को भी हल करता है और सामाजिक मानव को अपने जीवन के लिए एक अर्थ प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। चूंकि मानव दुख सर्वव्यापी होता है और मानवज्ञान सीमित होता है, इसलिए धर्म मनोवैज्ञानिक समर्थन प्रदान करता है और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

धर्म में अनिवार्य रूप से वह सब शामिल है जिसे स्पायरो(1966) ने अलौकिक प्राणियों के रूप में संदर्भित किया है। हालाँकि अधिकांश धर्मों में ऐसे प्राणियों की भीड़ है, लेकिन एक सर्वोच्च शक्ति में विश्वास भी है, जो कि अधिकांश धर्मों के लिए भी सामान्य है। धार्मिक प्रथाएं इन अलौकिक प्राणियों के साथ मनुष्यों के संबंध को शामिल करती हैं। और उन्हें अनुष्ठान करने और उन्हें प्रसन्न करने के लिए कार्य करते हैं।

अधिकांश समाजों में और विशेष रूप से जो समाज अधिक जटिल होते हैं, उनमें अच्छी तरह से नामित धार्मिक संस्थान होते हैं, और ये धार्मिक संस्थान किसी भी अन्य सामाजिक संस्थाओं की तरह कार्य करते हैं। ऐसे धार्मिक विशेषज्ञ हैं जो अतिमानवीय और सांसारिक दुनिया के बीच मध्यस्थों के रूप में पूर्णकालिक या अंशकालिक कार्य कर सकते हैं।

शमन आमतौर पर सरल समाजों में पाए जाते हैं और वे यह मानते है कि उनके शरीर में देवताओं का वास है तथा वे उसी के रूप में कार्य करते हैं। इस तरह की प्रक्रिया को अधिकार करने के रूप में जाना जाता है और इस तरह के अनुष्ठान आमतौर पर पाए जाते हैं। शमनों को दवाओं का भी ज्ञान हो सकता है और वे उपचारक के रूप में कार्य कर सकते हैं। कुछ अमेरिकी निवासियों और ईस्किमो जैसे शमनों को दूसरी दुनिया की यात्रा करने और वहां से अपनी शक्ति प्राप्त करने की क्षमता थी। लेकिन शमन अंशकालिक विशेषज्ञ हो सकते हैं और वे दूसरे लोगों की तरह निर्वाह गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं।

पुजारी पूर्णकालिक विशेषज्ञ होते हैं और संगठित धर्मों का हिस्सा होते हैं जहां वे निर्धारित कर्तव्यों के साथ वैध स्थितियों पर कब्जा कर लेते हैं और आदर्श व्यवहार का अनुपालन करते

हैं। पुजारी कर्तव्यों और नियमित अनुष्ठानों और प्रथाओं का पालन करते हैं। पुजारियों के उदाहरण हिंदू मंदिर के पुजारी और ईसाईयों के चर्च के पादरी हो सकते हैं। वे शमनों की तरह परमानंद और प्रेरित करने वाले प्रदर्शन में शामिल नहीं होते हैं। पुजारी ज्यादातर धार्मिक संस्थानों के सेवक होते हैं, जिनका वे एक हिस्सा भी होते हैं। वे केवल सूत्रधार होते हैं जो चर्च के सदस्यों को अनुष्ठान करने और प्रार्थना आदि करने की अनुमति प्रदान करते हैं।

किसी धर्म के लिए यह आवश्यक है कि जो लोग उस धर्म के अनुयायी हों वे उस धर्म के अनुष्ठानों और मान्यताओं से अच्छी तरह वाकिफ हों। दुर्खीम के अनुसार, एक चर्च इसका अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है। किसी चर्च में उन सभी लोगों को शामिल किया जाता है जो एक समान मान्यताओं और प्रथाओं को मानते हैं और एक ही अलौकिक शक्ति में विश्वास करते हैं। छोटे स्तर के समाजों में ऐसे लोगों के छोटे– छोटे समूह होते हैं जो किसी विशेष मान्यता–प्रथा को मानने के लिए सामाजीकृत होते हैं। सार्वभौमिक धर्मों के मामले में, इन मान्यताओं और प्रथाओं को अक्सर लिख दिया जाता है या उन्हें अच्छी तरह से वाचिक (मौखिक) ग्रंथ का रूप दे दिया जाता है। ऐसे धर्म जिनमें विश्वास और प्रथाओं को अंकित किया जाता है और उन्हें प्रलेखित किया जाता है, उन्हें सैद्धांतिक धर्म के रूप में जाना जाता है। पुजारियों जैसे संस्थागत तंत्र को इन सिद्धांतों के प्रचार और संरक्षण की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। आमतौर पर एक प्रमुख ग्रंथ होता है जिसमें किसी धर्म से संबंधित प्रमुख नियमों और मानदंडों का भंडार होता है जैसे कि ईसाइयों के लिए बाइबिल और मुसलमानों के लिए कुरान। इन ग्रंथों के बारे में यह माना जाता है कि इनकी उत्पत्ति दैविक रूप से हुई है। सभी धर्म चाहे वे आदिवासी धर्म हो या सार्वभौमिक धर्म हो वे मिथकों के माध्यम से अपनी मान्यताओं और मूल्यों को वैधता प्रदान करते हैं। मिथक कालजयी कथाएँ होती हैं जो मान्यताओं को प्रामाणिकता प्रदान करती हैं और उन्हें औचित्य प्रदान करती हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें 3

14. धार्मिक मान्यताओं और रीति–रिवाजों की क्या भूमिका होती है?

....

....

....

15. मिथक से क्या तात्पर्य है ?

....

....

....

7.4 सारांश

इस इकाई में छात्रों को मानव समाज के तीन प्रमुख संस्थानों से परिचित कराया गया है। मनुष्य निर्धारित मानदंडों और मूल्यों के साथ समाजों में रहते हैंय वे वस्तुओं का उत्पादन और उपभोग करते हैं, और वे अपने उत्पादन को वितरित भी करते हैं और उसका आदान–प्रदान भी करते हैं। वे इंद्रियों द्वारा महसूस की जा सकने वाली और देखी जा सकने वाली वस्तुओं से भी संबंधित होते हैं। कहने का तात्पर्य है कि उनका संबंध अलौकिक से भी होता है। मनुष्य

एक बात के लिए सक्षम होते हैं कि वे अमूर्त के बारे में सोच सकें और वे कालांतर जरूरतों के बारे में सोच सकें। वे जीवन का रहस्य, तात्पर्य, उद्देश्य जानना चाहते हैं और वे यह भी जानना चाहते हैं कि जीने या मरने का क्या तात्पर्य है। इस चिंतनशील विचारवादी क्षमता के आधार पर वे समाज में रहने के लिए सक्षम होते हैं और मानदंडों तथा मूल्यों के आधार पर संबंधों को बनाने में सक्षम होते हैं।

इन सभी कार्यों को पूरा करने के लिए संस्थान होते हैं जो इन सभी कार्यों को निष्पादित करते हैं। अधिक जटिल समाजों में आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक कार्यों के निष्पादन के लिए अलग–अलग संस्थान हो सकते हैं जिनमें उनके विभिन्न कर्मी, मानदंड और लक्ष्य हो सकते हैं, लेकिन छोटे स्तर के समाजों में इन सभी कार्यों के निष्पादन के लिए आधारभूत मानव संस्थान ही हो सकते हैं जो कि रिश्तेदारी और धर्म संबंधी संस्थान हो सकते हैं।

जैसा कि हमने इस इकाई में देखा है कि समय और स्थान के साथ–साथ भिन्न–भिन्न प्रकार के संस्थान बनते गए जो जटिल भी थे। संस्थाओं में अंतर समाज की जटिलता के स्तर के सीधे तौर पर आनुपातिक होता है। हालांकि जटिलता दक्षता का सूचक नहीं है और अविभाजित सामाजिक संस्थाओं वाले सरल समाज कार्यात्मक और अधिक जटिल समाजों की तुलना में अत्यधिक स्थिर और सामंजस्यपूर्ण होते हैं।

7.5 संदर्भ

बलैंडियर, जॉर्जेस. (1970). *पॉलिटिकल एंथ्रोपोलोजी एलन* लेनः द पेंगुइन प्रेस.

बर्नार्ड, एलन. (2000). *हिस्ट्री एंड थियोरी इन एंथ्रोपोलोजी,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

दुर्खीम, इमाईल. (1915). *द एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ द रिलीज्यस* लाइफ. लंदनः जॉर्ज एलन और अनविन.

इवांस–प्रिचर्ड, ई० ई० (1940). द नुएरः ए डिसक्रिप्शन ऑफ मोड्स ऑफ लाईवलिहुड एंड पॉलिटिकल इंस्टिटूसन्स ऑफ ए निलोटिक पीपल. ऑक्सफोर्डः क्लेरेंडन प्रेस .

फोर्ट्स, मेयर (1969). *किनशिप एंड द सोशल ऑर्डरः* द लेगेसी ऑफ हेनरी मॉर्गन. लंदनः रूटलेज एंड केगन पॉल.

फोर्ट्स, मेयर और ई०ई० इवांस–प्रिचर्ड (संपा) (1940). *अफ्रीकन पॉलिटिकल सिस्टम्स.* लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस फॉर द अफ्रीकन इंस्टीट्यूट.

गीर्टज, क्लिफोर्ड (1966). *रिलीजन एज ए कल्चरल सिस्टम माईकल बेंटन* (संपा) एथ्रोपोलीजिकल अपरोचेस टु द स्टडी ऑफ रिलीजन (ए एस ए मोनोग्राफ 3) लंदनः टेविस्टॉक प्रकाशन पेज 1–46.

गर्थ, एचएच और सी राइट. मिल्स. (संपादक और अनुवादक) (1946). *फ्रोम मेक्स वेबरः एस्से इन सोशिओलोजी* . न्यूयॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

क्लकहॉन, क्लाइड. (1944). *नवाहो विचक्राफ्ट.* कैम्ब्रिज एमएः पीबॉडी संग्रहालय.

लीच, एडमंड. (1954. *पॉलिटिकल सिस्टम्स ऑफ हाईलैंड बर्माः ए स्टडी ऑफ कोचीन सोशल स्ट्रक्चर.* लंदनः द एथलॉन प्रेस .

रैपापोर्ट, आरए. (1968). *पिग्स फॉर द अनसेस्टर्स.* न्यू हवेन, येल विश्वविद्यालय प्रेस.

रोसी, आईनो (संपादक), *पीपल ऑफ कल्चरः ए सर्वे ऑफ एंथ्रोपोलोजी* : प्रेजर.

सहलिन्स, मार्शल. (1972). *स्टोन एज इक्नोमिक्स.* लंदनः टेविस्टॉक प्रकाशन.

स्पाइरो, मेल्फोर्ड. ई. (1966). एंथ्रोपोलोजिकल अप्रोचेस टु द स्टडी ऑफ रिलीजन (बैंटन, संपादक) में *"रिलीजनः प्रॉब्लेम्स इन डेफिनेशन एंड एक्सप्लनेशन"*, लंदनः टैविस्टॉक.

7.6 आपकी प्रगति को जांचने हेतु उत्तर

1. उत्पादन, उपभोग और विनिमय हैं।
2. खंड 7.1.1 देखें।
3. 7.1.2 को देखें।
4. 7.1.2 को देखें।
5. खंड 7.1.3 देखें।
6. खंड 7.2 देखें ।
7. ई.ई. इवान्स प्रिचर्ड
8. खंड 7.2.1 देखें ।
9. रॉय रैपापोर्ट
10. पॉलीटिकल सिस्टम ऑफ आईलैंड बर्मा (1954)
11. अनुभाग 7.2.3 देखें ।
12. कार्ल विटफोगल
13. वेबर (1946) के अनुसार, तीन प्रकार के अधिकार होते हैं जिन्हें समाज में मान्यता दी जा सकती है, वे हैंः पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानून।
14. देखें अनुभाग 7.3
15. देखें अनुभाग 7.3